RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 सितम्बर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 सितम्बर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 11
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY

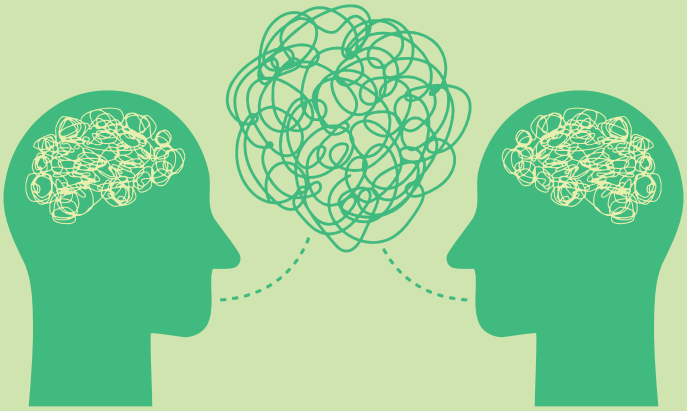

वाणी-भाषा के पुद्गलों को ऐसे ही नहीं बिखेरना चाहिए। समय का इंतजार करें। जब लोग सुनने के इच्छुक हों या जहाँ बोलना अनिवार्य हो वहीं अपना मुँह खोलना सार्थक होता है।

मनुष्य गति रत्नों की खदान है। रत्नों की खदान में पत्थर भी होते हैं किन्तु रत्नों की प्रधानता से वह खदान रत्नों की कही जाती है। तुम उसी खदान के एक घटक हो। जानो पत्थर हो या हीरा!

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान आर

आ ग म वा णी

ज्ञान सारआगमवाणीनांदसणिज्ज नाणं नाणेण विणा न हुँति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो णत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं।।

-उत्तराध्ययन (28/30)

सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं होता, ज्ञान के अभाव में चारित्र के गुण नहीं आ सकते, गुणों के अभाव में मोक्ष नहीं होता और मोक्ष के अभाव में निर्वाण प्राप्त नहीं होता।

The (right) knowledge cannot be gained in the absence of right-vision; in the absense of right-knowledge the (right) conduct is impossible; the freedom from karmic bondage is, yet again, impossible to be achieved in the absense of right-conduct and without complete freedom from karmic bondage there is no liberation.

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेण सद्दहंतस्स सम्मत्तं तु वियाहियं।।

-उत्तराध्ययन (28/15)

स्वयं या उपदेश से जीव-अजीव आदि सद्भावों में, सत्तत्वों में आन्तरिक-हार्दिक श्रद्धा सम्यक्त्व-सम्यग्दर्शन है।

The firm and unwavering faith in the fundamentals, either self-realised or gained through preaching, is known as the right-vision or right view point.

हेयाहेयं च तहा, जो जाणइ सो हु सद्दिट्ठी।

-सूत्रपाहुड (5)

जो हेय और उपादेय को जानता है, वही वास्तव में सम्यग्दृष्टि है।

One, who knows (distinguishes between) the acceptable and the deplorable is right-visioned.

दंसणवओ हि सफलाणि, हुंति तवनाणचरणाइं।

-आचारांगनिर्युक्ति (221)

सम्यग्दृष्टि के ही तप, ज्ञान और चारित्र सफल होते हैं।

Only the penance, knowledge and conduct of him that is right-visoned, succeed.

दंसणभट्ठा भट्ठा दंसणभट्ठस्स नत्थि निव्वाणं।

-दर्शनपाहुड (3)

जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट है, वस्तुत: वही भ्रष्ट है, पतित है, क्योंकि दर्शन से भ्रष्ट को मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

Really corrupted is the one, who is of corrupt vision. There is no liberation for those of corrupt vision.

साभार- प्राकृत मुक्तावली श्रमणोपासक

अनुक्रमणिका

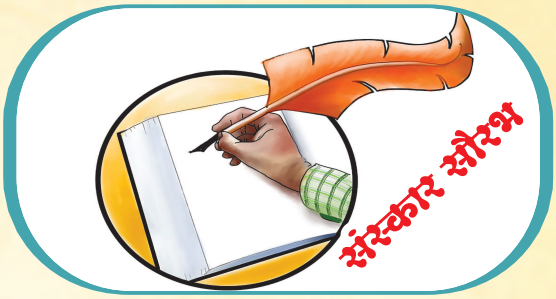

07 जीवनी
A Revolutionary Transformation
–संकलित

09 धर्मदेशना
अहो! सेवा
–आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

11 धर्मदेशना
वैय्यावृत्य तप
–आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

16 धर्मदेशना
विरोध तजें, सहयोग दें
–आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

22 ज्ञान सार
मधुर वचन –संकलित

25 ज्ञान सार
श्रीमद् भगवतीसूत्र –कंचन काँकरिया

26 ज्ञान सार
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र –सरिता बैंगानी

28 तत्त्व ज्ञान
मनुष्य के भेद –संकलित

32 किड्स कॉर्नर
बालमन में उपजे ज्ञान
–मोनिका जय ओस्तवाल

47 **नीमच चातुर्मास समाचार** –महेश नाहटा

30 **धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी**
–संकलित

34 **संघ गरिमा.....**
–पदमचन्द गाँधी

39 **संघ सेवा विवेक**
–डॉ. आभा किरण गाँधी

41 **संघ सेवा - अनमोल सेवा**
–सुरेश बोरदिया

24 **संघ सेवा** –कान्ता बैद

43 **संघ हमेशा बड़ा रहेगा**
–डॉ. दिलीप धींग

66 **संघ सेवा** –धर्मेन्द्र पारख

विविध

44 **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. से साक्षात्कार** –विनोद जैन

निष्काम सेवा अमूल्य है

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

निष्काम शब्द की अनुप्रेक्षा से प्रश्न खड़े हो जाते हैं कि क्या निष्काम उसे समझा जाए जिसके परिणाम की चाह न हो? जिसका कोई प्रयोजन न हो? कार्य करते रहो और पूर्ण होने की कामना मत करो? ऐसे ही कुछ मिलते-जुलते प्रश्न खड़े हो गए।

इन प्रश्नों में 'निष्काम' जिस रूप में प्रस्तुत हुआ है, वस्तुतः निष्काम का वह भाव इस सम्बन्ध में संगत नहीं है। बिना प्रयोजन के या परिणाम शून्य कार्य को कोई क्यों करेगा? कार्य पूर्णता की कामना न करना ऐसा निष्काम नहीं कहलाता। कार्य जो भी करणीय हो, वह प्रयोजनयुक्त व परिणामदायक होना चाहिए। साथ ही कार्य को पूर्ण करने का लक्ष्य भी होना चाहिए। कार्य प्रारम्भ करके उसे बीच में अधूरा में ही छोड़ दें, ऐसा कार्य सफल कार्यकर्त्ता नहीं कर सकता और न ही निष्काम का वह उद्देश्य हो सकता है। निष्काम का तात्पर्य यह ध्यान में आ रहा है कि व्यक्ति काम करे, किन्तु उसके बदले में नाम की कामना न करे। लोग उसके काम की सराहना करें, ऐसी कामना न करे। काम के बदले में लोग उसे महत्त्व दें, ऐसी तमन्ना न हो। कार्य करने का उद्देश्य एक मात्र 'सेवा' हो। व्यक्ति जब पारिवारिक दायित्व का वहन करता है, तब क्या वह परिवार वालों से प्रमाण पत्र की अपेक्षा रखता है, क्या वह यह चाहता है कि उसके परिजन अन्य लोगों के समक्ष यह बात रखें कि हमारे अभिभावक हमारी बहुत अच्छी तरह से सम्हाल कर रहे हैं। एक माता, जिसने अपने बच्चे का लालन-पालन किया, क्या वह यह चाहती है कि उसका बच्चा या उसके पारिवारिकजन उसकी प्रशंसा करें कि उसने बच्चे का लालन-पालन किया? नहीं। जैसे घर का मुखिया या माता अपने काम के लिए नाम, यश या प्रशंसा नहीं चाहते और न ही वे उनके लिए कार्य ही करते हैं। वे कर्त्तव्य भाव से कार्य करते हैं। वैसे ही समुदाय सेवा को अपना कर्त्तव्य समझते हुए उसकी सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिए। जिसका मूल्य आँका जाता है, वह मूल्यवान होता है। जिसका मूल्य आँका नहीं जा सकता, वह अमूल्य होता है। निष्काम सेवा अमूल्य है।

जिसका मूल्य आँका जाता है, वह मूल्यवान होता है। जिसका मूल्य आँका नहीं जा सकता, वह अमूल्य होता है। निष्काम सेवा अमूल्य है।

साभार- अनाहत नाद श्रमणोपासक

सुनहरी कलम से...

विश्व की उम्मीद : भारत

जय जिनेन्द्र!

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व व क्षमायाचना के पावन अवसर पर निश्चय ही हमने अपने हृदय से कषाय, मान, अहंकार, वैर-विरोध की कलुषता को यथाशक्य मिटाया होगा और एक नयी सुनहरी शुरुआत की होगी। बिना भूतकाल को सुधारे, वर्तमान को सुखद बनाना और भविष्य की ओर सफलतापूर्वक कदम बढ़ाना न तो आसान है और न ही ऐसा फलिभूत होता है। मानवीय प्रकृति छद्मस्त है। इसमें गलतियाँ होना स्वाभाविक है। परन्तु इन गलतियों का उपयोग अस्त्रों-शस्त्रों की तरह करके जो रुके नहीं, आगे बढ़ता रहे, वही असली योद्धा है और उसकी ही विजय निश्चित है।

इस संदर्भ में आचार्य प्रवर फरमाते हैं कि हमारी जितनी जिम्मेदारी स्वयं अथवा परिवार के प्रति है, उतनी ही जिम्मेदारी समाज, ग्राम, नगर व देश के प्रति भी है। 'गुणशीलता' आयाम में राष्ट्रधर्म का भी उल्लेख किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ समय समाज सेवा, संघ सेवा अथवा राष्ट्र सेवा हेतु जरूर निकालना चाहिए। जब हमारे भीतर संघ प्रेम, राष्ट्र प्रेम उत्पन्न होगा तो मानवता, ईमानदारी, सहयोग के संस्कार स्वत: पनप जाएँगे और ये संस्कार एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होंगे।

1 दिसंबर, 2022 को भारत ने **''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य''** के आह्वान के साथ **G20** की अध्यक्षता ग्रहण की थी। यह आदर्श वाक्य हमारी पुरातन सभ्यता का मूलभाव है। इसी को संस्कृत में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** कहा गया है।

भारत की राजधानी नई दिल्ली में **G20** सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें भारत ने रूस से दोस्ती निभाई और एक संयुक्त घोषणा पर दुनियाभर के दिग्गज राजनीतिज्ञों के बीच सहमति बनवाई। इस **G20** सम्मेलन के रूप में भारत ने पूरी दुनिया को अपनी मजबूती का अहसास करा दिया। इस व्यवस्थित बैठक हेतु देश में जिस उल्लास व संगठनात्मक शक्ति के रूप में कार्य किया गया, उसकी चर्चा विदेशों तक हो रही है।

भारत को **G20** की अध्यक्षता सौंपी गई थी, तब पूरा विश्व आर्थिक चुनौतियों, कोरोना एवं राजनैतिक संघर्षों में जकड़ा हुआ था और इनसे उबरने का प्रयास कर रहा था। ऐसे वक्त ने पूरी दुनिया भारत पर विश्वास व्यक्त करके अपनी उम्मीदों को पंख देने लगी और मुझे लिखते हुए गौरवानुभूति हो रही है कि हमारे देश ने विश्व की उम्मीदों का मान रखा और देश-विदेश में शान्ति व सौहार्द्र का संदेश देते हुए **G20** की सफलतापूर्वक मेजबानी की।

भारत के लिए **G20** अध्यक्षता विश्व में 'अमृतकाल' का शुभारम्भ है। इस अमृतकाल में विश्व में भविष्यवादी, समृद्ध, समावेशी और विकसित समाज, जिसकी मुख्य विशेषता मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण के लिए विशेष प्रयास समाहित हैं।

सम्माननीय पाठको! हमें भी अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित कर उस ओर अपने कदम गतिमान करने चाहिए और साथ ही संघ सेवा व राष्ट्र सेवा हेतु सदैव अग्रसर रहना चाहिए। परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का वरदहस्त एवं मार्गदर्शन हमारे साथ है तो संघ उत्थान में हमारा योगदान मील का पत्थर साबित होगा। इसी शुभभावना के साथ....

जय नानेश! जय रामेश!

-सह-सम्पादिका

Pujya Hukmesh

FEARLESS AND PRUDENT DECISION

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

After the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the English translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

Continued from 15-16 Aug. 2023.....

Dear children!

Pujya Acharya Shri Hukmesh used to exemplify the saying - "**ज्यां-ज्यां सेरी निसरे, त्यां-त्यां करे निहाल**" which means - Just as a perennial river, wherever it flows, makes the land fertile, similarly, wherever Pujya Shriji set foot, the stream of righteousness flowed. His aura was such that it influenced and enlightened many noble souls to embrace the ascetic life.

In regions like Marwar, Mewar, Thali Pradesh, and Malwa, there was a rapid growth in the followers of Pujya Hukmesh due to his strict adherence to Agam principles. Equally important was his precise and proper judgment of every situation in accordance with the principle of Dravya, Kshetra, Kaal, and Bhav.

One day, a saint suddenly lost consciousness, and upon seeing this, the other saints around him made him take an oath for Santhara (संथारा). A few days later, after feeling a sense of well-being in his body, he started experiencing excruciating hunger, causing him to writhe in pain. When Pujya Shri became aware of this, he immediately went there, expressing complete affection, and inquired about the incident. After gathering information, he said, "Brother, you were made to take an oath of संथारा while you were unconscious. If, while awakening the spirit of righteousness, you remain firm with determination, without tarnishing your soul with aggressive or wrathful thoughts and without any desire for life or death, then maintain this unwavering determination because it is certain that sooner or later, this body will die. Whatever thoughts you have, express them clearly and without hesitation. Leave the responsibility of the consequences to me."

Upon hearing Acharya Shri's clear and affectionate words, the Muniraj felt great tranquility and said, "Gurudev! I am trying to strengthen my thoughts, but the suffering from hunger makes my thoughts so meager that sometimes I..."

As he said this, tears began to flow from his eyes. Seeing his tears, Acharya Dev's heart filled with compassion. Pujya Shri started contemplating that the purpose of performing 'Santhara' (a religious practice of voluntary fasting unto death) is a symbolic representation of a learned person's death. However, achieving a state of non-aggressive and non-angry meditation (Aartadhyan - Raudradhyan) is possible only in the context of 'Santhara', but currently, the consequences seem to be influenced by aggressive and wrathful thoughts. In such a case, how can this lead to a peaceful death?

Secondly, he had undergone Santhara in an unconscious state. Yet, upon regaining consciousness, he spent so many days following it. This is indeed his uniqueness, but perhaps if he had consciously taken this decision himself, then the inclusion of santhara would be imperative. If there is a fault in it, purification can be done through repentance.

The principle of non-violence inherently symbolizes inclusion. We make efforts to protect even a small ant when it comes to the protection of non-violence. Then, in my presence, if a saint writhes in hunger and thirst and neglects due to the fear of spreading disharmony then that fundamental virtue of non-violence itself will be tainted. Contemplating this, he explained everything to the leaders of the Sangh and the saints, and taking a suitable vessel, he accompanied a saint for alms (भिक्षा). They brought back food suitable for him and, with great patience, said, "Brother! Now act in accordance with what your inner self believes." After saying this, he placed the vessel in front of him.

Then, to alleviate the unbearable hunger, he ate the food. After practicing self-discipline for many years, with complete vigilance, he finally embraced 'Santhara' in a state of full consciousness, symbolizing the death of the learned person. At that moment, everyone started praising the foresight of Pujya Acharya Dev.

Continued...

श्रमणोपासक

"जीवन में विशुद्धि एवं निर्मलता का महान मूल्य माना जाता है। यह विशुद्धि तभी आ सकती है, जब शुभ कार्यों की स्थिति को ध्यान में रखकर उनके बंध के कारणों को कार्यान्वित किया जाये। इससे जीवन में पवित्रता बढ़ेगी तथा दर्शन विशुद्धि एवं आत्मशुद्धि यदि उच्चकोटि की बनती जाये तो तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन भी किया जा सकता है। जीवन में विशुद्धि का महत्व इतना अधिक है कि जब कभी विचलित करने वाले प्रसंग भी सामने आते हैं तो इस निर्मलता की शक्ति से डगमगाने की तनिक भी स्थिति नहीं आती है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.
साभार- नानेशवाणी-21

धर्मदेशना

अहो! सेवा

-पद्म पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

कितने ही लोगों को सामायिक-पौषध आदि धार्मिक क्रियाएँ करने का तो खूब चाव होता है, परन्तु सेवाकार्य करने में अरुचि होती है और अगर किसी रोगी की सेवा करने का अवसर आता है तो उन्हें बड़ी कठिनाई मालूम होती है। रोगी कपड़ों में ही उल्टी-दस्त कर देता है और कभी-कभी रास्ते में ही चक्कर खाकर गिर पड़ता है। ऐसे रोगी की सेवा करना कितना कठिन है! फिर भी जो सेवाभावी लोग रोगी की सेवा को परमात्मा की सेवा मानकर करते हैं, उनकी भावना कितनी ऊँची होगी?

वास्तव में यह अखिल संसार सेवा के कारण ही टिक रहा है। जब संसार में सेवाभावना की कमी हो जाती है, तभी उत्पात मचने लगता है और जब सेवाभाव की वृद्धि होती है तब यह संसार स्वर्ग के समान बन जाता है। अतएव सेवाकार्य करने में तनिक भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और न ही छल-कपट करना चाहिए। जो मनुष्य माता-पिता अथवा अन्य किसी भी मनुष्य की सेवा करने में छल-कपट करता हुआ अपने को सेवाभावी कहलवाता है, वह वास्तव में सेवाभावी नहीं वरन् ढोंगी है। सच्चा सेवक तो वही है जो सेवा करने में झूठ-कपट का आश्रय नहीं लेता और सेवाकार्य के प्रति घृणाभाव भी प्रदर्शित नहीं करता। जहाँ घृणा है वहाँ सच्ची सेवा नहीं हो सकती।

मुनि के लिए किस सीमा तक सेवा करने का विधान किया गया है, यह बताने के लिए एक उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न करता हूँ-

नंदीषेण नामक एक मुनि बहुत ही सेवाभावी थे। उनकी सेवा की प्रशंसा इन्द्रलोक तक जा पहुँची। इन्द्र ने देवसभा में नंदीषेण मुनि की सेवा की प्रशंसा करते हुए कहा- ''राजकुमार से दीक्षित होने पर भी नंदीषेण मुनि ऐसी सेवा करते हैं कि उन जैसी सेवा करना दूसरों के लिए बड़ा कठिन है।''

इन्द्र के ये प्रशंसात्मक वचन सुनकर एक देव ने विचार किया- ''इन्द्र महाराज देवों के सामने एक मनुष्य की इतनी प्रशंसा क्यों कर रहे हैं? उस सेवाभावी मुनि की परीक्षा क्यों न की जाये? आखिर नंदीषेण मुनि मनुष्य है। मनुष्य की नाक में दुर्गन्ध आती है, अतएव दुर्गन्ध से उनका घबराना स्वाभाविक और सरल है।'' इस प्रकार विचार करके उस देव ने नंदीषेण मुनि की परीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

उस देव ने साधु का स्वांग बनाकर जहाँ नंदीषेण मुनि ठहरे थे, वहाँ पास के एक जंगल में जाकर अपने शरीर को ऐसा रुग्ण बना लिया कि शरीर के छिद्रों से रक्त और मवाद बहने लगा। उस रक्त और पीव में से असह्य दुर्गन्ध निकल रही थी। इस प्रकार रोगी साधु का भेष धारण करके उस देव ने नंदीषेण मुनि के पास समाचार भेजा कि पास के जंगल में एक साधु बहुत बीमार हालत में पड़े हैं। उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं है। अत: उन्हें बहुत अधिक कष्ट हो रहा है।

नंदीषेण मुनि को जैसे ही यह समाचार मिले तो वे तुरन्त उन रोगी साधु की सेवा करने के लिए चल पड़े। मुनि मन ही मन विचारने लगे- ''मेरा सौभाग्य है कि मुझे साधु-सेवा का ऐसा सुअवसर मिला है।''

इस प्रकार विचार कर नंदीषेण मुनि रोगी साधु की सेवा करने के लिए जंगल में पहुँचे। मुनि उस वेशधारी रोगी साधु की ओर ज्यों-ज्यों बढ़ने लगे, त्यों-त्यों उन्हें अधिकाधिक दुर्गन्ध आने लगी। परन्तु नंदीषेण मुनि उस असह्य दुर्गन्ध से न घबराकर रोगी साधु के समीप पहुँच गये। नंदीषेण मुनि को आते देखकर वह साधु वेशधारी देव क्रुद्ध होकर कहने लगा- ''तुम इतनी देर करके क्यों आये? मुझे कितना कष्ट हो रहा है, इसका तुम्हें ख्याल ही नहीं है? सेवाभावी कहलाते हो और सेवा करने के समय इतना विलम्ब करते हो!'' साधु रूपधारी देव इस प्रकार कहकर नंदीषेण को उपालंभ देने लगा।

यद्यपि देव ने अपना शरीर घृणोत्पादक बनाया था और उसके शरीर से दु:सह्य दुर्गन्ध फूट रही थी, फिर भी नंदीषेण मुनि दुर्गन्ध से न घबराकर उसकी सेवा करने हेतु उसके पास गये। मगर पास पहुँचते ही वह साधुवेशधारी देव नाराज होकर उपालंभ देने लगा। उपालंभ सुनकर नंदीषेण मुनि तनिक भी नाराज न हुए, उल्टे विलम्ब के लिए क्षमायाचना करने लगे। उन्होंने सेवा करने की आज्ञा देने की भी मांग की।

नंदीषेण मुनि की बात सुनकर रुग्ण साधु ने कहा– ''देखते नहीं, मेरा शरीर कितना कृश, दुर्बल, अस्वस्थ बन गया है। शरीर की सेवा करने के सिवाय और क्या आज्ञा तुम चाहते हो?''

नंदीषेण मुनि ने विचार किया– ''अगर मैं नगर से दवा लेने जाऊँगा तो बहुत देरी हो जाएगी।'' ऐसा विचार कर उन्होंने रुग्ण साधु से कहा– ''अगर आप नगर में चलें तो?''

रुग्ण साधु– ''मेरे पैरों में चलने की शक्ति होती तो तुम्हारी सहायता की आवश्यकता ही क्या थी?''

नंदीषेण मुनि– ''मेरे पैर भी तो आपके ही है। आप मेरे कंधे पर बैठ जाइए। मैं उठाकर नगर तक ले चलूँगा।''

रुग्ण साधु– ''मेरे हाथों में भी तो शक्ति नहीं है। तुम्हारे कंधे पर चढ़ूँ तो कैसे चढ़ूँ?''

नंदीषेण मुनि– ''कोई बात नहीं, मैं खुद ही अपने कंधे पर आपको बैठा लूँगा।'' **सच्चा सेवक अपनी शक्ति को दूसरों की ही शक्ति मानता है और अपना तन–मन पर की सेवा के लिए समर्पित कर देता है। सेवा का यह आदर्श अगर जनसामान्य के हृदय में अंकित हो जाये तो यह संसार स्वर्ग बन जाये।**

नंदीषेण मुनि ने उस देव को अपने कंधे पर बैठा लिया। रुग्ण साधुवेशधारी देव ने नंदीषेण मुनि को सेवा की प्रतिज्ञा से विचलित करने के लिए अपने शरीर में से रक्त और पीव की धारा बहा दी, मगर नंदीषेण मुनि अपनी सेवा भावना को स्थिर और दृढ़ करते हुए उन रुग्ण साधु के दुर्गन्धमय शरीर को उठाकर नगर में ले गये। उन रुग्ण साधु के शरीर से निकलती दुर्गन्ध के कारण तथा देवमाया की प्रेरणा से प्रेरित होकर नगरजन मुनि से कहने लगे– ''आप ऐसे रोगी मनुष्य को नगर में नहीं ले जा सकते। एक रोगी के पीछे अनेक को रोगी नहीं बनाना चाहिए।''

नागरिकों का विरोध देखकर मुनि असमंजस में फँस गए। ऐसी विषम स्थिति में मुनि के मन में अनेक प्रकार के तर्क–वितर्कों का उत्पन्न होना स्वाभाविक था। परन्तु उन्होंने बेकार का तर्क–वितर्क नहीं किया। ये समभावपूर्वक नागरिकों की बात सुनते रहे। मुनि ने मन ही मन विचार किया– ''मैं नगरजनों को भी दु:खी नहीं कर सकता और इन रोगी साधु की सेवा का भी परित्याग नहीं कर सकता। हे प्रभो! ऐसी विकट स्थिति में क्या करूँ?''

नंदीषेण मुनि इस प्रकार विचार कर ही रहे थे कि इतने में साधु वेशधारी देव ने भी विचार किया– ''ऐसी विषम परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी इन मुनि के हृदय में सेवा के प्रति उतना ही दृढ़ विश्वास है। इन मुनि की सेवाभावना की इन्द्रदेव ने जितनी प्रशंसा की थी, वास्तव में इन मुनि का सेवाभाव वैसी ही प्रशंसा का पात्र है।'' इस प्रकार विचार करके साधु वेशधारी देव, साधुवेश का त्याग करके अपने स्वाभाविक रूप में नीचे उतरा और मुनि के पैरों पर गिरकर कहने लगा– ''हे मुनिश्रेष्ठ! आपकी सेवाभावना की जैसी प्रशंसा इन्द्र महाराज ने की थी, आप वैसे ही सेवामूर्ति हैं। आपने सेवा द्वारा देवों को भी जीत लिया है।''

सेवा करने वाला देवों को भी जीत लेता है। शास्त्र में भी कहा है–

''देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सयामणो''

अर्थात् जिनका मन धर्म में सदा अनुरक्त रहता है, उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं।

वैय्यावृत्य करने वाले व्यक्ति के आगे देव भी नतमस्तक होते हैं, फिर साधारण लोग अगर सेवाभावी को नमस्कार करें तो इसमें आश्चर्य ही क्या? सेवाभावी व्यक्ति के मन में विकार भाव नहीं होता, देव भी उनकी सेवा करते हैं। अतएव मन को पवित्र रखो।

साभार– श्री जवाहर किरणावली–16 (उदाहरण माला–1)

सुमति चरण रज, आतम अर्पणा,
दर्पण जेम अविकार, सुज्ञानी।
मति तर्पण बहु सम्मत जाणिये,
परिसर्पण सुविचार, सुज्ञानी।।

इस जीवन सरिता की सृजनशक्ति का आँकलन किन कार्यों से किया जाए? वस्तुत: इसके प्रभाव क्षेत्र में चन्द कार्य या शक्तियाँ ही क्रियान्वित नहीं होती हैं, बल्कि विशाल दृष्टि से देखें तो इस जीवन में विविध प्रकार की अनन्त विधाओं का समावेश है। इस जीवन सरिता का स्रोत जिधर भी मोड़ने का प्रसंग आता है, उधर ही मानव के जीवन में एक विशिष्ट शक्ति प्रसारित हो जाती है। इसका मोड़ यदि सेवा की दृष्टि से प्रवाहित हो जाए तो विश्व का अमित उपकार भी किया जा सकता है। सेवा के क्षेत्र में भी संघ सेवा को एक विशिष्ट महत्व दिया गया है तथा इसको वैय्यावृत्य तप की संज्ञा दी गई है।

धर्मदेशना

वैय्यावृत्य तप

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

सेवा का स्वरूप

वैय्यावृत्य तप की दृष्टि से जब भगवान महावीर से प्रश्न किया गया कि–

वेयावच्चेणं भंते! जीवे किं जणयई?

अर्थात् हे भगवन्! वैय्यावृत्य से इस जीव को किस विशिष्ट फल की प्राप्ति होती है? तो भगवान ने उत्तर दिया–

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्म निबंधई।

अर्थात् वैय्यावृत्य में उत्कृष्ट रसायन आ जाए तो सर्वोत्तम पुण्य प्रकृति तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध होता है।

इस दृष्टि से यह विचारणीय विषय है कि चतुर्विध संघ की सेवा का प्रसंग कितना अधिक महत्वपूर्ण होता है? अत: संघ सेवा का सही मूल्यांकन प्रत्येक भव्य प्राणी को करना चाहिये। अपने-अपने स्थान पर रहते हुए एवं अपनी-अपनी मर्यादाओं का समुचित रीति से वहन करते हुए चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य को अपने संघ सेवा के कर्त्तव्यों के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहने की आवश्यकता होती है।

भगवान महावीर का यह निर्देश, वीतराग देव की यह अमूल्य वाणी संसार के सभी भव्य प्राणियों के लिए हितावह है। इस उपदेश का सम वितरण करना, उनको जन-जन तक पहुँचाना-यह भी इस शासन की सेवा का प्रसंग है। चतुर्विध संघ में साधु और साध्वी दोनों अंग अपने विराट जीवन मूल्यों को लेकर विश्वस्तरीय व्यापक दृष्टिकोण को वहन कर रहे हैं अर्थात् इन्होंने समस्त प्राणियों को अपनी आत्मा के तुल्य समझकर तीन करण व तीन योग से स्थूल एवं सूक्ष्म हिंसा का परित्याग किया है तथा पाँच महाव्रतों को अंगीकार करके ये उनका ईमानदारी से पालन कर रहे हैं। ऐसे सन्त और सती वर्ग की स्थिति का एक अनुपम आदर्श इस विश्व के सामने है।

सन्त-सती वर्ग अपने इन आदर्शों, संकल्पों तथा प्रतिज्ञाओं को सुरक्षित रखते हुए चतुर्विध संघ की, वीतराग देवों की वाणी की और प्रभु महावीर के शासन की जितनी सेवा बनती है उसमें वे तत्परता रखते हैं। तीर्थंकरों की अनन्त परम्परा का अनूठा आदर्श उपस्थित करना उनकी विशिष्ट सेवा है। यदि सन्त और सती वर्ग इस विशिष्ट सेवा को विस्मृत करके अपनी मर्यादाओं का ध्यान नहीं रखें और सिर्फ प्रचार और प्रसार में ही लगने की चेष्टा रखें तो इस रूप में शासननिष्ठा की दृष्टि से सेवा नहीं होगी, बल्कि एक दृष्टि से असेवा होगी।

जिन तीर्थंकरों ने, विशिष्ट महापुरुषों ने अपने समग्र जीवन को त्याग के विराट रूप में परिणित करके जो अद्वितीय आदर्श उपस्थित किया, उन तीर्थंकरों की परम्परा, निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति की सुरक्षा का उत्तरदायित्व प्रधान रूप से सन्त और सती वर्ग पर आता है। यदि सन्त एवं सती वर्ग ही उन आदर्शों, परम्पराओं और श्रमण संस्कृति को ओझल करके उस विराटता से नीचे उतरते हैं और सीमित हिंसा आदि से आबद्ध गृहस्थ की सीमा पर आ जाते हैं तो यह तीर्थंकरों की परम्परा के स्वरूप को विस्मृत करने का कार्य कहलाएगा। ऐसी विस्मृति की अवस्था में भावी पीढ़ी तीर्थंकरों के उस त्याग मार्ग को भली प्रकार नहीं समझ सकेगी। वह सोच सकती है कि अनन्त तीर्थंकरों की परम्परा के अनुसार प्रचार और प्रसार के लिए हिंसक साधनों को उपयोग में ला सकते हैं। बिजली के बल्बों और पंखों के नीचे अन्य साज-सज्जाओं के साथ बैठकर महाआरंभ अस्त्रों को भी अपना सकते हैं। यह रूप यदि भावी पीढ़ी के जनमानस में आ गया अथवा नहीं भी आया, पर जो संत-सती वर्ग हिंसाकारी साधनों में प्रचार-प्रसार आदि के नाम से अपना सहकार दे रहे हैं, यह अनन्त तीर्थंकरों की बहुत बड़ी अवज्ञा की स्थिति है और इस प्रकार उनकी सेवा के बदले असेवा का ही प्रसंग उपस्थित होता है। सन्त जीवन में आधुनिक युग में पनप रही ऐसी प्रवृत्तियाँ अवश्य ही इस दृष्टि से विचारणीय हैं।

संघ सेवा और साधु मर्यादा

सन्त-सती वर्ग की अपनी संयम-मर्यादाएँ होती हैं तथा श्रमण संस्कृति की सुरक्षा का मूल भार उन पर होता है। इसके अलावा ये साधु और साध्वियाँ तीर्थंकरों की परम्परा के जीवन्त दीपक होते हैं, जिन्हें सामने देखकर उस परम्परा का सहज अनुमान होता है। इसलिए संत व सती वर्ग के द्वारा संघ सेवा का मार्ग उनकी अपनी संयम-मर्यादाओं के अनुरूप निर्मल रहना चाहिए। इस दृष्टिकोण से स्वर्गीय युगदृष्टा आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने अपने पूर्व के व्याख्यानों में इस प्रश्न का विस्तार से उल्लेख किया था एवं अपना दृढ़ विचार प्रकट किया था कि सन्त और सती वर्ग को अपनी विराट मर्यादाओं में रहते हुए ही प्रचार और प्रसार करना है। अपनी मर्यादाओं को तोड़कर प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में भाग लेना सन्त-सती वर्ग के लिए योग्य नहीं हैं।

उन महापुरुष की एक अनूठी सूझ थी कि प्रचार-प्रसार के कार्य में श्रावक-श्राविका वर्ग को कुछ अधिक त्याग का परिचय देकर प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित हो जाना चाहिए। सबसे बड़ी उपलब्धि यह होगी कि सन्त-सती वर्ग के द्वारा संघ सेवा का मार्ग निर्मल बना हुआ रह जाएगा।

श्रावक वर्ग की भूमिका

शान्त-क्रान्ति के जन्मदाता स्व. आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से इस उक्ति का उच्चारण होता था कि सौ सयानों का एक मत होता है, वैसा ही एक मत धीरे-धीरे ही सही, लेकिन इस संघ में बनता जा रहा है। नम्रता से, कोमलता से तथा सरलता से सभी अपनी संघ सेवा का योगदान देने के लिए तत्पर बन रहे हैं। चाहे कोई किसी पद पर रहे या नहीं रहे, संघ सेवा की एक सी लगन का निर्माण हो रहा है। दो शब्द हैं- स्वार्थ और परार्थ। स्वार्थ के लिए तो सभी दौड़ते हैं, परन्तु स्वार्थ के पीछे जाकर भी जो परार्थ का ख्याल करते हैं, वह एक विशेष बात कहलाती है। स्वार्थ और परार्थ को अच्छे भाव में लें तो यह अर्थ भी निकाल सकते हैं कि आत्मशुद्धि का स्वार्थ तथा प्रभु महावीर व तीर्थंकरों की इस निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति के भव्य रूप को सुरक्षित रखने के लिए प्रचार-प्रसार का परार्थ आत्मशुद्धि एवं आत्मकल्याण के लिए बहुत बड़ा योगदान है।

लेकिन कभी-कभी ज्ञात अथवा अज्ञात रूप में कुछ मानसिक वृत्तियाँ कई स्थानों पर कुछ का कुछ रूपक लेकर उभरती हैं। नहीं चाहते हुए भी कभी किसी सदस्य के मन में कदाचित् यह आ जाए कि संघ को अपनी सेवाएँ तो देनी हैं, लेकिन साधारण पद पर रहते

हुए उपयुक्त रूप से सेवा कैसे दी जा सकती है? तो ध्यान रखकर चलें कि पद और सेवा के साथ रहने का कोई प्रसंग नहीं होता है। सेवा का सम्बन्ध भावना से होता है और भावना है तो किसी भी पद के माध्यम से या बिना पद के भी भरपूर सेवा दी जा सकती है। साथ ही

कभी-कभी मष्तिष्क में ऐसी अज्ञात तरंग भी उठ सकती हैं कि जो सेवाएँ दी जाएँ, उनका कोई-न-कोई मूल्यांकन करने वाला भी होना चाहिए। मैं इतना आत्मयोग दूँ, सब कुछ करूँ फिर भी मेरे कार्य को कोई पहचाने नहीं, उसकी प्रशंसा करे नहीं तो सेवा का कार्य कैसे किया जाए? जिस समाज में सेवा को पहचानने की क्षमता नहीं, उस समाज की सेवा क्यों करें? ऐसा मानस भी कभी किसी का बन सकता है, लेकिन ऐसे मानस पर गंभीरता से विचार करने का प्रसंग है। क्योंकि जहाँ सेवा के पीछे सराहना का भाव जुड़ जाता है तो यह कामना की बात हो जाती है तथा ऐसी सेवा से आत्मशुद्धि का प्रसंग नहीं बनता है। वह तो सेवा नहीं हुई, एक सौदेबाजी या व्यापार हो गया कि मैं सेवा देता हूँ, तुम मुझे प्रशंसा दो। सेवा धंधा नहीं है, यह तो आत्मभोग का रूपक है। सेवा की गहराई से स्वत: ही समाज में जो सराहना होती है वह दूसरी बात है, लेकिन सेवा करने वाले को सराहना की कामना लेकर नहीं चलना चाहिए।

सेवक का आदर्श

चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य को यह विचार रखना चाहिए कि निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति के भव्य रूप की भली प्रकार सुरक्षा हो जाए, यही उसकी सेवा का सही मूल्यांकन होगा। इसके लिए अपने स्वयं का

स्वरूप समझ आत्मशुद्धि का कर्त्तव्य लेकर चलना चाहिए। दुनिया चाहे सेवा करने वाले को सत्कार दे या न दे, सेवा का मूल्यांकन करे या न करे अथवा यश-कीर्ति, गुणगान करे या न करे, लेकिन जो संघ सेवा का कार्य है, वह वैय्यावृत्य तप है तथा उसका प्रयोजन स्वयं की आत्मशुद्धि है, इस भावना से चलना चाहिए।

संघ सेवा के सम्बन्ध में ऐसी शुद्ध-वृत्ति का निर्माण होने से दोहरा लाभ होता है। आत्मशुद्धि की दृष्टि से आत्मभावों में तो पवित्रता आती ही है, साथ-साथ सबके प्रति माता के समान वात्सल्य भावना का भी विकास होता है। जैसे एक माता अपने पुत्र के लिए सब कुछ न्यौछावर कर सकती है, लेकिन बदले में कुछ लेने की बात नहीं सोचती है। उसी प्रकार सेवा करने वाला अपना आत्मयोग देकर चलता है। सेवा का कार्य भी अपनी स्थिति से सुचारू रूप से चलाने का प्रयत्न करता है फिर भी दुनिया अपनी स्थिति से उसकी भूलें देखे तो उस सेवा करने वाले को हताश भी नहीं होना चाहिए

और माता की तरह उन पर वात्सल्य भाव में कमी नहीं आने देनी चाहिए। जो व्यक्ति यश-कामना से रहित होकर सेवा कार्य करता है, उसको कोई पद मिले या नहीं मिले, उससे उसकी सेवा में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

इस निर्ग्रंथ श्रमण संस्कृति की रक्षा तथा भव्य शासन चतुर्विध संघ की सेवा के कार्य में ऐसे ही दयामय जीवन को लेकर चलने की आवश्यकता है ताकि सच्ची सेवा का आदर्श उपस्थित हो सके।

आध्यात्मिक संघ : एकता

लोग कभी नाम के पीछे कल्पना करते हैं, लेकिन नाम तो आता है और चला जाता है। नाम का कोई मूल्य आँकने की आवश्यकता नहीं है। भगवान महावीर के शासन की जो दिव्य महिमा है, उसका नेतृत्व आचार्य पद की स्थिति से चलता आ रहा है। पूर्वाचार्यों ने अपने-अपने समय में क्रांतिकारी कदम उठाये हैं। स्व. आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. तथा स्व. आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. ने भी क्रांति करके एक आचार्य के नेतृत्व का प्रसंग उपस्थित किया। उसको ध्यान में रखते हुए मैं स्वयं सतर्कतापूर्वक चलता हूँ तथा चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य को भी अपने-अपने कर्त्तव्य का ध्यान रखना है। इसके साथ यह सावधानी भी रखनी है कि इस आध्यात्मिक संघ की एकता दृढ़ीभूत बनी रहनी चाहिए, जिससे शासनोन्नति में चार चांद लग सकें।

आध्यात्मिक संघ की एकता में सतर्कता की बात यह है कि कहीं भी संघ का कोई सदस्य किसी तरह की आग लगाने की चेष्टा न करे। यदि कोई निर्दयी इसमें आग लगाता भी हो तो सुज्ञों का कर्त्तव्य है कि उस आग को समाप्त करके भव्य-रूप उपस्थित करें। जो तोड़-फोड़ की नीति में पड़ता है, एकता को छिन्न-भिन्न करता है, आध्यात्मिक संघ की एकता में विभेद करता है, उसको कठोरतम प्रायश्चित्त का प्रसंग आता है। ऐसा प्रसंग इस संघ के प्रांगण में उपस्थित होगा, ऐसी आशंका भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इस संघ का सिंचन पूर्व में क्रांतिकारी महापुरुषों ने किया है और संघ का प्रत्येक सदस्य अपने आप स्वयं ही जागृत है। भगवान महावीर और अनन्त तीर्थंकरों के इस धर्म संघ को पूर्वाचार्यों ने अपने-अपने समय में विकसित करने का प्रयास किया है। आज भी यदि प्रभु महावीर स्वामी के शासन की समुचित स्थिति प्राप्त करना चाहें तो आपको इस क्रांतिकारी परम्परा में सुरक्षित मिल सकती है। यह कथन मैं इस परम्परा में हूँ इसलिए नहीं कह रहा हूँ बल्कि तटस्थ भाव से कह रहा हूँ। कोई भी व्यक्ति तटस्थता की डाल पर बैठकर चिंतन करेगा तो वह समझ जाएगा कि तीर्थंकरों की शुद्ध परम्परा आज भी इस युग में अक्षुण्ण है। ऐसी स्थिति में यह हम सबके चिंतन का विषय रहना चाहिए कि इसकी समुन्नति कैसे हो।

जो अनन्य भाव और बिना किसी आकांक्षा से चतुर्विध संघ की सेवा करता है, वह अपनी आत्मा को भी गुण-गरिमा से संयुक्त बनाता है। जहाँ उसे अपने में किसी प्रकार का स्खलन प्रतीत होता है तो वह विनयपूर्वक अपनी भूल को सुधार लेता है। यह गुण जब श्रावक वर्ग में दिखाई देता है तो लगता है कि संघ के प्रमुखों में प्रेम और स्नेह की कैसी भव्य सरिता बह रही है। यह सरिता यहीं तक सीमित न रह जाए, प्रत्येक साधारण सदस्य तक भी पहुँचे। यह एकता के कार्य का प्रारंभ है और इस दृष्टि से निरन्तर आगे बढ़ते रहें। यह आध्यात्मिक संघ की एकता जीवन से समग्र उत्थान में अतीव सहायक सिद्ध होगी।

संघ सेवा के प्रकार

संघ सेवा को वैय्यावृत्य तप माना गया है। इसकी यथाशक्ति विविध प्रकार से सेवा की जा सकती है। कोई संत-सती या श्रावक-श्राविका कहे अथवा नहीं कहे, संघ सेवा सम्बन्धी किसी न किसी शुभ कार्य को अवश्य अपने हाथ में लेकर प्रचार-प्रसार के कार्य में प्रगति करते हुए जिनशासन प्रभावना का भव्य प्रसंग उपस्थित करना चाहिए, यह तभी बन सकता है जब सुज्ञजन स्वत: सेवा कार्य करने के लिए तत्पर रहें। आत्मशुद्धि के लिए संघ सेवा भी एक सशक्त साधना है। वैयावृत्य तप के अनेक रूप हैं, उनमें एक रूप यह संघ सेवा का भी है। संघ सेवा की दृष्टि से प्रत्येक सदस्य को कुछ न कुछ संकल्प लेना चाहिए। वर्ष में चार महीना, तीन महीना, दो महीना जैसी भी शक्ति और सुविधा हो, संघ सेवा के लिए समय देना चाहिए। कम से कम वर्ष में पन्द्रह दिन का समय तो देना ही चाहिए। यदि इतना भी नहीं बनता है तो वह वर्ष में पर्युषण महापर्व पर जो आत्मशुद्धि का प्रसंग आता है, पवित्र संस्कृति का वहन करने वाले सन्त-सती वर्ग हर स्थल पर नहीं पहुँच सकते; इससे उन स्थानों के व्यक्ति धर्म लाभ से वंचित रह जाते हैं। उनकी भावना भी रहती है कि हमें आठ दिन कोई वीतराग वाणी का श्रवण कराकर पर्वाराधन करावें। ऐसे व्यक्तियों को आठ दिन महापर्व पर्युषण पर धर्म दान के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। यह उन क्षेत्रों की जनता के लिए बड़े प्रमोद का विषय हो जाता है। मैं सोचता हूँ कि आज अपने आन्तरिक जीवन से जो भाई-बहिन समृद्ध हैं, बुद्धिबल, मनोबल या ओजस्वी वाणी के धारक हैं, ऐसे व्यक्ति वर्ष में यदि पन्द्रह दिनों के लिए संसार की स्थिति से व्यापारिक और पारिवारिक बन्धनों को गौण करके संघ सेवा के कार्य में संलग्न हो जाएँ तब भी काफी उन्नति हो जाती है।

संस्कार सुधार भी एक प्रकार से सेवा का ही क्षेत्र है। धर्मपाल भाई अच्छे संस्कारों के लिए लालायित हैं, यदि आप में से कई लोग निवृत्तिपूर्वक कुछ न कुछ समय भी देने लगें तो यह पवित्र कार्य नियमित रूप से चल सकता है। कम से कम धर्मपालों के समीप क्षेत्रों में रहने वाले श्रावक-श्राविकाओं को तो कुछ न कुछ संस्कार सुधार का भव्य रूप उपस्थित करना चाहिए।

जीवन प्रवाह का उपयोग

चतुर्विध श्रीसंघ का भी जो प्रसंग है, उसमें एक प्रकार से अनेक जीवन सरिताओं का प्रवाह बह रहा है। उसको संघ सेवा की दृष्टि से सार्थक बनाने का प्रसंग है। हमारा जीवन आज है, कल क्या होगा, यह कहा नहीं जा सकता, लेकिन उसके माध्यम से संघ में जो समुन्नति लाई जाएगी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। नदी का जल प्रवाह जब तक चल रहा है, तब तक वैज्ञानिक लोग उससे बिजली पैदा कर लेते हैं, खेती का विकास कर लेते हैं और उसके द्वारा अन्य अनेक कार्य करके लोगों का जीवन निर्वाह-हित पूरा कर लिया जाता है। उसी प्रकार जब तक जीवन सरिता का प्रवाह चल रहा है, तब तक इससे स्व-पर के आत्मकल्याण और आत्मशुद्धि तथा धर्म आराधना के कार्यों का सम्पादन कर लेना चाहिए, वरना जब प्रवाह रुक जाएगा, फिर तो कुछ नहीं हो सकेगा।

चतुर्विध संघ के नाते संत-सती वर्ग और श्रावक-श्राविका वर्ग को अपने-अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् रीति सें निर्वाह करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उसमें मेरा कहीं स्खलन तो नहीं हुआ है। किसी अन्य की त्रुटि देखें तो ऐसे विवेक से काम लें कि त्रुटि भी सुधर जाए और सद्भाव बना रहे।

साभार- नानेशवाणी-30 (आपका भविष्य आपके हाथ)

मुख्य बात यही है कि निश्छल भाव से संघ के सेवा माध्यम से आत्मा का सर्वतोमुखी विकास करके अपने जीवन को सार्थक बनाएँ तथा पवित्र संस्कृति की सुरक्षा के प्रहरी बनें।

श्रमणोपासक

धर्मदेशना

विरोध तजें, सहयोग दें

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्म आराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

महापर्व पर्युषण के रूप में धर्माराधना का एक अनूठा अवसर हमें प्राप्त हुआ था। निश्चित ही हम सबकी पुण्यवानी है कि हमें धर्म के संस्कार मिले हैं। इस भौतिकवादी अर्थप्रधान युग में जहाँ व्यक्ति भाग-दौड़ में लगा रहता है, धर्म को समझने के लिए उसके पास फुरसत नहीं है, वहाँ हम लोग भाग्यशाली हैं कि हमें प्राप्त संस्कारों के कारण हम धर्माराधना के लिए तत्पर हैं। कल मैंने एक बात कही थी-

आओ-आओ खमा लें आज, संवत्सरी आई सा।
हल्का कर लें बोझ सब आज, संवत्सरी आई सा।।

एक साल के बाद हमें संवत्सरी का अवसर प्राप्त होता है। यह ऐसा क्षण होता है जिसमें हमारे भाव कोमल एवं सरल बन जाते हैं। आपने अनुभव किया होगा कि जिस समय आप किसी से क्षमायाचना करते हैं, उस समय आपके भावों में ऋजुता आ जाती है, हल्कापन आ जाता है। यह अनुभूति की बात है। भले कितना ही पारा चढ़ा हुआ हो किंतु जिस समय क्षमायाचना की जाती है, कम-से-कम उस समय हृदय में कुछ अंतर होता है। उस समय मन-मस्तिष्क ऋजुता का अनुभव करते हैं। उनमें सरलता की अनुभूति होती है, हलकेपन का अहसास होता है।

यदि अपने बोझ को एक क्षण के लिए ही हलका कर लिया तो उसका भी बड़ा महत्त्व है। वही बोझ सदा के लिए हट जाए तो कितने आनंद की अनुभूति होगी, इसकी परिकल्पना कर सकते हैं।

समुदाय में रहने पर कुछ-न-कुछ विचार हो जाता है। मन-मस्तिष्क उसके लिए कार्यरत हो जाता है और दूसरों की तरफ ध्यान चला जाता है। दूसरों का व्यवहार हर्ष या खिन्नता का बोध कराने वाला हो जाता है। यह आपने बहुत बार सुन ही लिया है कि दूसरों द्वारा किया गया व्यवहार हम में कोई फर्क देने वाला नहीं होना चाहिए। कोई कितनी भी प्रशंसा कर रहा हो उससे कोई फर्क नहीं आए। यदि कोई ऐसा सोचे कि प्रशंसा करने से वे प्रशंसित हो गए, अच्छे हो गए, तो ऐसी सोच खोटी है। ऐसा जरूरी नहीं है कि प्रशंसा करने से पात्रता आ जाएगी। यह दृढ़ विश्वास अपने मन में बिठा लिया जाए कि जिसमें योग्यता होगी, अर्हता होगी, उसकी किसी ने बुराई कर दी, उसे गलत बता दिया, तो वह गलत नहीं हो जाएगा। अपनी क्षमता का आँकलन स्वयं करना सीख लेंगे तो विकास होगा।

बहुधा हम अपने सामर्थ्य को नहीं समझ पाते और दूसरों के कहने से आश्वस्त हो जाते हैं, जबकि ऐसा न होकर हमें अपना सामर्थ्य ज्ञात होना चाहिए। कोई व्यापारी, व्यापार करने के लिए उद्यत होता है तो वह चाहता है कि अधिक विकास करूँ। अपने पास उपलब्ध साधन के अनुसार और कुछ नया करूँ।

जिसके पास परचून की छोटी दुकान खोलने का साधन नहीं हो, वह चाहे कि फैक्ट्री लगाऊँ तो क्या वैसा

कर पाएगा? नहीं। हाँ, धीरे-धीरे विकास से वैसा हो सकता है। इसलिए सोच निरंतर अपने सामर्थ्य को बढ़ाने वाली होनी चाहिए। आध्यात्मिक जीवन में निरंतर सामर्थ्य बढ़ाने के लिए अवश्यमेव हमें दो तरह की तैयारी करनी चाहिए। एक प्रत्याख्यान ऐसा होना चाहिए जो जीवनपर्यंत के लिए हो। जैसे श्रावक का पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्रत जीवनपर्यंत के लिए है। साथ ही कुछ ऐसा भी होना चाहिए जो रोजाना करें, प्रतिदिन करें। ऐसा नहीं हो कि प्रतिदिन के लिए तो कुछ करें और जीवनपर्यंत के लिए कुछ नहीं हो। जीवनपर्यंत के लिए भी कोई प्रत्याख्यान होना चाहिए और प्रतिदिन के लिए भी कोई-न-कोई प्रत्याख्यान स्वीकार करते रहें।

साधु-साध्वी हों या नहीं हों, त्याग-प्रत्याख्यान की भावना निरंतर विकसित होती रहनी चाहिए। 14 नियम बहुत सरल हैं। अपनी मर्जी के अनुरूप जैसा चाहें वैसा एक दिन के लिए त्याग कर सकते हैं। जैसे, जिस दिन ज्यादा कहीं बाहर नहीं जाना है उस दिन अपने विवेक अनुसार वाहनों का त्याग करें। पानी की जरूरत के आधार पर उसकी लिमिट कर लें। थोड़ा सा समय उधर देने से जीवन सही दिशा में मुड़ जाता है। ज्यादा समय नहीं चाहिए। मेरे खयाल से पाँच मिनट पर्याप्त है। आपके पास 14 नियमों की सूची रहे, पाँच मिनट में उसमें अंक भर लें और दूसरे दिन वापस उसको चितारें कि कोई दोष तो नहीं लगा।

यदि थोड़ा-सा समय दे दिया तो जीवन आध्यात्मिक बन जाएगा और जीवन की दिशा बदल जाएगी। हम सही दिशा में आगे बढ़ने वाले बनेंगे।

कल मैंने व्याख्यान के दौरान अरिहंत भगवान, सिद्ध भगवान आदि से क्षमायाचना की। आचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का इस जीवन पर महान उपकार रहा है। यहाँ बैठने वाले अमूमन सभी ने उनके दर्शन किए होंगे। आज भी हमारे दिल-दिमाग में उनकी सूरत, उनके उपकार बसे हुए होंगे। उनको भूले नहीं होंगे, क्योंकि उनसे नजदीक का रिश्ता रहा है। आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. आदि को हमने नहीं देखा है, किंतु आचार्य पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. के दर्शन किए हैं। दु:ख-दर्द की बात भी उनके सामने की है। उनके उपदेशों से मन को सुकून भी मिला है। ऐसे महान आचार्य के अनेक उपकार हैं हम पर। कोई कल्पना नहीं थी, कोई विचार नहीं था, किसी संभावना की बात ही नहीं थी कि मुझे इस दायित्व का निर्वाह करना पड़ेगा या यह दायित्व मेरे सिर पर आने वाला है। कहीं-से-कहीं तक कोई कल्पना की बात नहीं थी, किंतु जो कुछ भी प्रसंग बना, महापुरुषों ने अपने ज्ञान में जैसा देखा, सोचा, अब मेरा विषय बनता है कि मैं उनके विश्वास पर खरा उतरूँ।

“कोई कल्पना नहीं थी, कोई विचार नहीं था, किसी संभावना की बात ही नहीं थी कि मुझे इस दायित्व का निर्वाह करना पड़ेगा या यह दायित्व मेरे सिर पर आने वाला है। कहीं-से-कहीं तक कोई कल्पना की बात नहीं थी, किंतु जो कुछ भी प्रसंग बना, महापुरुषों ने अपने ज्ञान में जैसा देखा, सोचा, अब मेरा विषय बनता है कि मैं उनके विश्वास पर खरा उतरूँ। उनकी अपेक्षाओं के अनरूप यदि मैं कर नहीं पाया अथवा अन्य किसी प्रकार से भी उन महापुरुषों की कोई अवज्ञा-आशातना हुई हो तो अन्तर्हृदय से, अन्तर्भावों से क्षमायाचना करता हूँ।”

अहिंसा | सत्य | अचौर्य | ब्रह्मचर्य | अपरिग्रह

उनकी अपेक्षाओं के अनरूप यदि मैं कर नहीं पाया अथवा अन्य किसी प्रकार से भी उन महापुरुषों की कोई अवज्ञा-आशातना हुई हो तो अन्तर्हृदय से, अन्तर्भावों से क्षमायाचना करता हूँ।

उपाध्याय प्रवर, साधु-साध्वी, श्रावक वर्ग से आपने कल बातें सुनीं। मैं भी बैठा हुआ था। मेरे मन में एक विचार पैदा हुआ, जो कल व्यक्त करने वाला था, किंतु बारिश के शोर में मुझे चुप रहना पड़ा।

कर्नाटक के सम्राट कृष्णराय के यहाँ तेनालीराम नाम का व्यक्ति रहता था। ऐसा माना जाता था कि वह बड़ा चतुर था। लोगों ने राजा के कान तक बात पहुँचाई कि इसने अभी तक आपको अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित नहीं किया। आपके लिए भोज की व्यवस्था नहीं की। एक बार लोगों ने उसके सामने ही सम्राट से कहा- ''हुजूर! हम चाहते हैं कि तेनालीराम के यहाँ एक बार आपके भोजन की व्यवस्था हो। अब तेनालीराम क्या बोले? वह मना कर नहीं सकता था।''

सम्राट ने उसकी ओर देखा तो उसने कहा- ''हाँ हुजूर! आप तो कृपा कराईए।'' सम्राट ने पूछा- ''कितने लोगों को साथ में लाना है?'' तेनालीराम ने कहा- ''जितने लोग हों, जो भी आपके साथ आना चाहें उन्हें ले आएँ। सब आमंत्रित हैं।'' तारीख निश्चित हो गई। सम्राट अपने गुप्तचरों से जानकारी करते रहे। पता चला कि दिन नजदीक आ रहे हैं, किंतु तेनालीराम कोई तैयारी नहीं कर रहा है।

नीमच संघ वाले नेमीचंद जी कल बोल गए कि जब से चातुर्मास खुला तभी से तैयारी चालू हो गई।

खैर, तेनालीराम ने सब लोगों को आमंत्रित किया, किंतु तैयारी कुछ लग नहीं रही थी। लोग सोच रहे थे कि ऐन वक्त पर हाथ खड़े तो नहीं कर देगा। एक दिन तेनालीराम को बुलाकर सम्राट ने उससे कहा- ''क्या बात है, तुम्हारी अनुकूलता नहीं हो तो समय पर बता देना।'' उसने कहा- ''आप निश्चिंत रहिए महाराज! सब ठीक है, समय पर सब हो जाएगा।'' एक दिन पहले तेनालीराम मुँह लटकाए सम्राट के सामने आया। सम्राट ने पूछा- ''क्या हुआ, व्यवस्था नहीं हो पा रही है तो मना करवा दूँ क्या?'' उसने कहा- ''राजन्! सभी व्यवस्था है, मगर नगर में विवाह-शादियाँ बहुत होने से मेरी लाख कोशिश के बाद भी बरतन नहीं मिल पाये। सारी व्यवस्था हो गई, किंतु थाली, लोटा, गिलास, कटोरियों की व्यवस्था करने में मैं लाचार हूँ। विवश हूँ। इसलिए मेरा निवेदन है कि जो भी भोजन करने पधारें, वे अपने साथ थाली, लोटा, गिलास, कटोरियाँ लेकर आएँ।''

राजा ने घोषणा करवा दी कि लोग अपने घर से थाली, लोटा, गिलास, कटोरियाँ लेकर चलें। यह आप भी जानते हैं कि अपने घर पर कोई फूटी थाली में भी खा लेगा किंतु कहीं बाहर जाने पर फर्क पड़ेगा। अपने घर में कैसी भी पोशाक चलेगी, किंतु बाहर मेहमान बनकर जाएँगे तो अन्य पोशाक पहनेंगे। यह फर्क होता है या नहीं?

(श्रोता- होता है)

सभी लोग बड़ी उमंग से जा रहे थे कि तेनालीराम को आज मजा चखाएंगे। तेनालीराम ने सबके भोजन की व्यवस्था की। परोसगारी करने वाले परोसगारी कर रहे थे। तेनालीराम, सम्राट के पास पंखा लेकर खड़ा था। एक से बढ़कर एक खाने की चीजें थीं। ऐसी व्यवस्था थी कि सभी लोग धन्य-धन्य कहने लगे। सारे लोग कहने लगे, धन्य हो तुम। तुमने बढ़-चढ़कर व्यवस्था की है। सम्राट ने भी कहा- ''तुमने अच्छी व्यवस्था की, सुंदर व्यवस्था की।''

तेनालीराम ने कहा- ''हुजूर! **''अन्न आपरो, धन आपरो, म्हारी तो वाहवाही है।''** यानी अन्न आपका है, धन आपका है, मेरी तो सिर्फ वाहवाही हो रही है।'' लोगों ने सोचा कि बहुत विनम्रता दिखा रहा है।

जब सारे लोग खाना खाने के बाद अपनी-अपनी थाली उठाकर जाने लगे तो उसने हाथ जोड़कर कहा कि आप इतना तो मेरा अपमान मत करें। मैं थालियों की व्यवस्था नहीं कर पाया था, किंतु इन्हें धुलवा तो सकता

हूँ। उसने कहा कि थालियाँ आप यहीं छोड़ दीजिए, इनको मँजवाने का काम मेरा है। ये यथासमय सबके घर पहुँचा दी जाएगी। सब लोगों ने अपने-अपने थाली-लोटे आदि वहीं छोड़ दिए। एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीते। किसी के यहाँ थाली आदि बरतन नहीं पहुँचे।

सम्राट के सामने बात पहुँची कि बरतन नहीं आए तो सम्राट ने तेनालीराम को बुलाकर पूछा- ''भाई! सबके बरतन नहीं पहुँचे, क्या बात है?''

उसने कहा- ''हुजूर, सारे-के-सारे बरतन अमुक सेठ के यहाँ गिरवी रखे हुए हैं। मैंने आपसे पहले ही कहा था कि 'अन्न आपरो, धन आपरो, म्हारी तो वाहवाही है।' आपने कहा तो सारी व्यवस्था हो गई, किंतु मेरे पास इतने साधन नहीं थे, इसलिए सारे लोग अपने-अपने हिसाब से पैसे देकर बरतन छुड़ा लाएँ।''

(श्रोतागण हँसने लगे)

हँसने की बात नहीं है। वही सारा खेल यहाँ पर है। जितनी भी अच्छाइयाँ हैं, सभी उपाध्याय-प्रवर, साधु-साध्वियों की वजह से हैं। मेरा तो केवल नाम है। मेरी तो केवल वाहवाही है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। समुदाय से काम होता है। आपको जो भी काम नजर आ रहे हैं, जो भी अच्छाई नजर आ रही है, वह केवल मेरी नहीं है, उसमें सबका समावेश है। न केवल साधु-साध्वी, न केवल उपाध्याय-प्रवर, बल्कि श्रावक-श्राविका आदि सभी का महान योगदान है।

आज हम जो सही व्यवस्था देख रहे हैं, उसमें परम पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की सोच थी, उनका सपना था। परम पूज्य आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. ने स्तम्भ खड़े किए। परम पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने छत डाली और हम उस छत के नीचे आराम की अनुभूति कर रहे हैं। समुदाय में मतभिन्नता भी होती है। मतभिन्नता कोई बुरी बात नहीं है। मतभिन्नता होती है और होनी भी चाहिए किंतु राजनीति में चल रहे परिदृश्य की तरह देखा-देखी नहीं होनी चाहिए। जैसा कि विरोधी पार्टियों को देखते हैं कि वे सरकार को कोई काम नहीं करने देती, अड़ियल रूप बनाकर खड़ी रहती हैं। वैसा अड़ियल रूप आपको अच्छा लगता है क्या? आपका मन उसका समर्थन करना चाहता है क्या? आपके लोकसभा-विधानसभा में जो खेल होते हैं, क्या वे अच्छे हैं?

हमारे धर्म संघ में, धर्म क्षेत्र में, धर्मनीति में, राजनीति का प्रवेश नहीं होना चाहिए। यह लक्ष्य हम सबके दिमाग में आ जाना चाहिए।

आचार्य पूज्य गुरुदेव फरमाते थे कि जहाँ भी गुटबंदी होती है, ग्रुपिंग होती है, वहाँ कहीं-न-कहीं हिंसा का संबंध जुड़ता है। इससे मन मलिन होता है और मन में द्वेष की भावना बनती है। धर्म करके, आराधना करके जो शुद्धि होनी चाहिए वह नहीं होती, दृष्टि में अंतर आ जाता है। दृष्टि का वह अन्तर मन को मैला किए बिना नहीं रहेगा।

संघ की व्यवस्था के लिए अध्यक्ष या मंत्री के पद पर किसी एक का चयन किया जाता है। वह केवल व्यवस्था की दृष्टि से है। वह भी अल्पकाल के लिए, न कि जिंदगीभर के लिए। किसी को अध्यक्ष-मंत्री कितने समय के लिए बनाया जाता है? एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष। नीमच संघ को चातुर्मास मिला तो जिम्मेदारी किसकी बन गई? केवल अध्यक्ष-मंत्री की जिम्मेदारी है या पूरे समाज-संघ की भी जिम्मेदारी है?

(श्रोतागण बोले- पूरे संघ की जिम्मेदारी बनती है)

परम पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की जीवनी में लिखी हुई बात है। उदयपुर का प्रसंग था। कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष उपस्थित हुए थे। उस समय आचार्यश्री ने बड़ी सुंदर बात कही थी कि आप अध्यक्ष साहब की जय-जयकार बोल रहे हो, उनका स्वागत कर रहे हो, किंतु उनके साथ कदमताल नहीं हो पाए तो जय-जयकार औपचारिक है।

भारतीय संस्कृति में वर, वधू को माला पहनाने के बाद जीवनपर्यंत उसका साथ निभाता है। आपने भी अध्यक्ष साहब को माला पहनाई है। इसका मतलब है

कि आपका इनके साथ संबंध जुड़ गया। उनको निभाना अब आपकी जिम्मेदारी है। कोई अध्यक्ष, कोई मंत्री योग्य नहीं भी हो किंतु यदि उनको अध्यक्ष, मंत्री बना दिया गया है तो आपका क्या कर्तव्य है? आप फजीहत करेंगे या घर की बात घर तक ही सीमित रखेंगे?

(श्रोतागण बोले- घर की बात घर तक ही सीमित रखेंगे)

फजीहत करेंगे तो सबसे पहले आपकी फजीहत होगी कि आपने अयोग्य को पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

एक पिता ने अपने लड़के की शादी की। शादी से पहले उसने लड़की को परखा-देखा। शादी होने के बाद उसका स्वभाव मैच नहीं हो रहा है तो क्या करना चाहिए? यदि वह योग्य है तो उत्तम बात है। यदि योग्य नहीं है तो उस पिता की जिम्मेदारी क्या बनती है?

नाना गुरु ने मुझे इस स्थान पर बिठाया है, मैं नहीं समझ रहा था कि मेरे में योग्यता है। आज भी वही मान रहा हूँ, किंतु सब निभा रहे हैं तो गाड़ी चल रही है। वैसे ही आपका भी दायित्व बन जाना चाहिए। इस संघ के सदस्यों को सोच लेना चाहिए कि घर की बात जगजाहिर नहीं हो। ऐसा सपोर्ट रखें कि लोगों को मालूम ही नहीं पड़े कि हमारा अध्यक्ष अयोग्य है। योग्य है तो कोई बात ही नहीं। कदाचित् अयोग्य हो तो भी संघ सदस्यों को चाहिए कि दूसरे लोगों को पता ही नहीं पड़े कि अमुक संघ का अध्यक्ष योग्यता में न्यून है।

यह बात एक बार पहले भी मैं बोल गया था कि कृष्ण वासुदेव ने गोवर्धन पर्वत को अंगुली पर उठा लिया। ग्वालों ने अपने डंडे उस पर्वत के नीचे लगाए। क्यों लगाए?

उनका मानना था कि श्रीकृष्ण पर पूरा भार न आ जाए, इसलिए हम भी डंडे लगा दें। ग्वालों द्वारा डंडे लगाने से भार हल्का हुआ या नहीं हुआ, वह बात अलग है, किंतु उनकी सोच भार को हल्का करने की रही। वैसा ही लक्ष्य यदि हमारा बनता है तो संघ का प्रवाह व्यवस्थित रूप से चलेगा अन्यथा हम धर्म की बात करेंगे, किंतु मन धर्म में भीगेगा नहीं। मन में द्वेष धधकता रहेगा। वह बात, वह विषय, वह व्यक्ति सामने आते ही मन उद्विग्न हो जाएगा। भले ही हमें कितने ही सुंदर अवसर मिले हैं, किंतु माथे पर भार बनाए रखेंगे तो उद्धार नहीं हो पाएगा। इसलिए-

आओ-आओ खमा लें आज, संवत्सरी आई सा।
हल्का कर लें बोझ सब आज, संवत्सरी आई सा।।

आज हम सारे बोझ को हल्का करने वाले हैं। काम करने वालों से सैकड़ों गलतियाँ हो सकती हैं। उन गलतियों का सुधार जरूरी है, न की उनकी चर्चा। चर्चा करने से गलती का सुधार हो जाएगा, यह मानना भ्रांति है। मिल-बैठकर बातचीत करें कि कैसे उन गलतियों का सुधार हो सके। हो सकता है कि एक की दृष्टि में गलती हो, दूसरे की दृष्टि में गलती नहीं हो। एक गलत मान रहा हो और दूसरे को गलत लग ही नहीं रहा हो। जो चलेगा वह ठोकर खाएगा। ठोकर खाकर गिरने की बात नहीं है, संभलकर आगे बढ़ने की बात है। यदि ठोकर खाकर गिरने पर सोचें कि चलें ही नहीं तो कभी भी मंजिल नहीं मिलेगी।

आज अध्यक्ष-मंत्री कोई है, कल कोई और होगा। हमारे यहाँ ऐसी व्यवस्था नहीं है कि कोई जीवनपर्यंत के लिए अध्यक्ष हो जाए। संघ की व्यवस्था के अनुसार 2, 3, 4 साल के अध्यक्ष-मंत्री बनते हैं। इस दौरान टाँग खींचते रहेंगे तो विकास नहीं हो पाएगा।

कुछ दिन पहले एक भाई ने कहा कि म.सा.! हम काम करना चाहते हैं, किंतु लोग काम नहीं करने देते। टाँग खिंचाई करते हैं। मैंने बात को विनोद का रूप दे दिया। मैंने कहा- भाई सामने वाला तुम्हारे पैर पकड़ रहा है, और क्या चाहिए। तुम्हारे पैर पकड़ रहे हैं, अब तुम ताकत लगाकर पैर को उसके सहित ऊपर उठा लो। यदि टाँग खिंचाई अच्छी नहीं लग रही है तो नियम लें कि किसी की टाँग नहीं खींचेंगे और कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे। ऐसा होगा तो फिर आप देखना कि संघ का कितना विकास होता है किंतु लोग अलग होकर बैठ जाते हैं। कोई बोलता है कि उनके साथ मुझसे काम नहीं हो सकता। कल यदि आप अध्यक्ष बनेंगे तो आपके साथ

कौन काम करेगा, यह सोचने की बात है। यह किसी एक संघ की बात नहीं है। हर संघ में राजनीति का थोड़ा-थोड़ा असर आ रहा है। समझदार व्यक्ति समझ लेता है। उसको समझाने की ज्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती।

नीमच संघ की भावना गुरुदेव के समय से चलती रही है। गुरुदेव के चातुर्मास की स्वीकृति भी हो गई थी। विहार भी हो गया, किंतु स्वास्थ्य की अनुकूलता नहीं होने से उनका वापस उदयपुर पधारना हो गया। चातुर्मास स्वीकृति के समय मैंने स्पष्ट किया था कि हम आगारों के साथ स्वीकृति देते हैं। स्वीकृत स्थान पर पहुँचना हो जाए ऐसा लक्ष्य रहता है, किंतु उसके बावजूद पहुँचना नहीं हो पाए तो कोई उधारी नहीं रहती, कर्जे का काम नहीं रहता। उधारी का काम माथे पर भार देने वाला होता है, इसलिए हमारे यहाँ उधारी का काम नहीं है।

चाहे किसी भी संत-सती की स्वीकृति दी जाए, यदि पहुँचना नहीं हो पाए तो वहाँ चातुर्मास नहीं होगा। बंबोरा संघ के चातुर्मास की स्वीकृति हुई, किंतु महासतियाँ जी पहुँच नहीं पाईं। नहीं पहुँच पाईं तो नहीं पहुँच पाईं। उधारी नहीं रही। ऐसे ही गुरुदेव का यहाँ पहुँचना नहीं हुआ तो ऐसा नहीं कि वह उधार रह गया। नीमच संघ का उत्साह बहुत है। लोग तपस्या में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। उपाध्यायश्री जी ने कहा कि 200 अठाई की तपस्या होनी चाहिए। 200 का लक्ष्य बनाया और यहाँ के भाई जुट गए। नवीन जी अकेले तपस्या करते तो कितनी कर लेते! सबका सहयोग था या नहीं! कई लोगों ने कहा कि आपने बोल दिया इसलिए करते हैं। हालत अच्छी नहीं है, शक्ति नहीं है, किंतु भैया ने बोल दिया तो तपस्या करनी है। ऐसे भी लोग हैं, ऐसी भी तपस्याएँ हो रही हैं।

हालांकि जोर-जबरदस्ती का मेरा भाव नहीं रहता। हकीकत में ऐसा भाव उपाध्यायश्री जी का भी नहीं रहता, किंतु आलस्य को दूर करने के लिए, शक्ति को जगाने के लिए प्रेरणा है। कई बार तपस्या से बीमारियाँ भी दूर हो जाती हैं।

यह पुरुषार्थ और प्रेरणा की बात है। इसी क्रम में नीमच संघ ने पुरुषार्थ किया और काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की। हम नीमच में लगभग 53 साधु-साध्वी हैं। हमारे द्वारा नीमच संघ तथा नीमच के किसी भी परिवार को गोचरी से लेकर मांगलिक तक के विषय में कोई पीड़ा हुई हो, किसी भी व्यवहार से किसी भी भाई का दिल दुखा हो, चाहे अध्यक्ष-मंत्री हों, चाहे पदाधिकारी हों या कोई अन्य, उन सबसे मैं हृदय से क्षमायाचना चाहता हूँ। गोचरी-पानी के लिए किसी के यहाँ ज्यादा जाना हुआ, किसी के यहाँ कम, किसी के यहाँ जाना नहीं हुआ। हमारा लक्ष्य रहता है कि हर घर से गोचरी-पानी लाएँ। चाहे किसी भी समुदाय का घर हो। व्याख्यान में किसी को लक्ष्य बनाकर बात नहीं की जाती, किंतु कई लोग आते हैं और बोलते हैं, म.सा. आज का व्याख्यान तो मेरे ऊपर ही था। सामने वाले की दृष्टि होती है जो अपने ऊपर ले लेता है।

महापर्व पर्युषण की भावना लेकर दूर-दूर से दर्शनार्थी आते हैं। साधु-साध्वियों का पाथेय उनको मिला। व्याख्यान के बाद दोपहर में अलग-अलग विषयों पर कार्यक्रम रखा गया। अलग-अलग विषयों पर आपको जानकारी मिले इसका प्रयत्न किया गया और आपने उसका लाभ भी उठाया। इसके बावजूद यदि किसी के मन में कसक रह गई हो कि आचार्यश्री जी हमसे बात नहीं करते, हमें दया पालो नहीं कहते, मांगलिक नहीं देते, उपाध्यायश्री जी बात नहीं करते तो दिल को बड़ा रखकर क्षमा प्रदान कर देना।

भाई सुभाष जी विश्नोई, जो यहाँ व्याख्यान लिख रहे हैं, उनके सामने परीक्षा का प्रसंग आ रहा है। उसके लिए उनके साथियों ने बुलाया तो उन्होंने कहा कि यहाँ का सान्निध्य छोड़कर मैं जाना नहीं चाहता। उनको टीचिंग का बोला गया तो उन्होंने कहा कि मैं एक-दो दिन परीक्षा देने के लिए ही जाऊँगा। यह उनका धर्म-प्रेम ही कहा जा सकता है। इतना कहते हुए विराम।

– 22 अगस्त, 2023 को नीमच में फरमाए गए प्रवचन का अंश

3 बात काटना

★ "पुढो छंदा इह माणवा"
'संसार में मानव भिन्न-भिन्न विचार वाले हैं'
(श्री आचारांग सूत्र 1/5/2)

★ हर व्यक्ति अपने-अपने अनुभव के अनुसार बोलता है। जब वो कुछ बोलता है तो इस भाव से बोलता है कि कोई उसकी बात सुने-समझे और अच्छा लगे तो उसे माने। ऐसी स्थिति में जब कोई उनकी बात को सुने बिना काट देता है तो उसे इतना बुरा लगता है कि वह अपने आपको अपमानित महसूस करने लगता है।

★ **अपमानित महसूस होने के बाद 3 तरह की प्रतिक्रिया करने वाले लोग हो सकते हैं –**

(I) कुछ तो गम खाकर रह जाते हैं, मन को समझाकर शांत हो जाते हैं।

(ii) कुछ उस समय तो चुप हो जाते हैं, पर मन में बात को पकड़ लेते हैं और फिर वे भी सामने वाले की बात काटने लगते हैं।

(iii) कुछ लोग तो इतने हाइपर हो जाते हैं कि वहीं पर लड़ने लगते हैं। उनकी बात काटना, मतलब शेर के मुँह में हाथ देना है।

अब आप सोचिए दुनिया में 1st कैटेगरी वाले लोग ज्यादा हैं या 2nd या 3rd कैटेगरी वाले?

शायद आपका Answer है 2nd, 3rd कैटेगरी वाले।

बस इसलिए किसी की बात नहीं काटना चाहिए। हम उसकी काटें, वो हमारी काटे, फायदा क्या होगा?

★ हर व्यक्ति की बात हमें पसंद आ ही जाए जरूरी नहीं है, परंतु हम उसे सुन तो सकते हैं और कुछ देर के लिए अपना ध्यान उस पर केन्द्रित तो कर सकते हैं। कई बार सुनना ही काफी होता है। मानना भी जरूरी नहीं होता, परंतु लोग अपना धैर्य खो देते हैं और वहीं उस व्यक्ति की बात काटकर उसे यह बताने में लग जाते हैं कि उसकी बात कितनी बेकार है।

★ आपकी बात को कोई बेकार कहेगा तो आपको कैसा लगेगा? जब आप अपनी बात कटते हुए नहीं देख सकते तो दूसरे की बात कैसे काट सकते हैं?

★ आइए अब देखते हैं कि एक व्यक्ति से बात करते हुए अथवा अनेक लोगों के समूह के बीच में बात करते हुए हमें क्या कहना चाहिए और क्या नहीं कहना चाहिए।

ज्ञान धारा

ऐसी वाणी बोलिए

मधुर वचन

'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् **'मधुर वचन'** प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

15-16 अगस्त 2023 अंक से आगे....

	गलत तरीका (Don't)	सही तरीका (Do)
A	बोलते हुए को कभी न कहें – 'तू चुप रह, बीच में मत बोल।'	उसकी बात सुन लें।
B	कोई कह रहा है ऐसा करना अच्छा रहेगा, उसी समय ऐसा न कहें – 'कोई अच्छा नहीं रहेगा, तुम्हें कुछ समझ तो आता नहीं।'	बात नहीं जमे, तो भी ऐसे कहें– 'आपकी बात मैं समझ रहा हूँ, पर यदि ऐसा करें तो कैसा रहेगा?'
C	किसी ने कोई बात कही, उसी समय ऐसा न बोलें – 'बिल्कुल नहीं, ये बात 100 प्रतिशत गलत है, आप बिना प्रमाण की बातें कह रहे हो, आपको सोचकर बोलना चाहिए।' **Note -** यदि आपको लगता है कि इस तरह बोलने से कोई अपनी गलती स्वीकार कर लेगा, तो आपको गलत लगता है।	यदि बात सामान्य–सी हो, तो चुपचाप सुन लें क्योंकि कुछ लोगों को बिना सोचे बोलने की आदत होती है और यदि बताना जरूरी हो जाए, तो सहजता से कहें–'संभावना है कि ये बात ऐसी है।' **सामने वाला अपनी बात पर ही अड़े, तो आप मौन हो जाएँ।**
D	किसी ने कोई सुझाव दिया और आपके पास भी अपना एक सुझाव है, जो आपको ज्यादा अच्छा लग रहा है। फिर भी ऐसा न कहें – 'आपका आइडिया बेकार है, मेरे पास इससे बेहतर आइडिया है।'	ये अच्छा है मगर मैं भी एक सुझाव रखना चाहता हूँ, यदि आप सब आज्ञा दें तो?
E	किसी बोलने वाले के बीच में इस तरह न बोलें – 'आप ही बोलते रहेंगे या दूसरों को भी बोलने देंगे?'	बात पूरी होने तक सुनें। मीटिंग से पहले ही सबको समय सीमा का ध्यान दिला दें। व्यक्ति विशेष को बोलना ठीक नहीं है।
F	आपकी बात में कोई तंत नहीं है, ये भूलकर भी न बोलें।	तंत नहीं लगे, तब भी सुनें।
G	बोलते हुए के बीच में ऐसा न बोलें – 'आप हमारा समय खराब मत करो।'	समुदाय में समय खराब करने वाले लोग भी रहेंगे। हमें एक बार उनकी बात सुन लेनी चाहिए, क्योंकि उनके अंदर का चार्ज खाली नहीं हुआ तो आगे जाकर विस्फोट हो सकता है।
H	किसी को बीच में ऐसा कहकर न टोकें – 'आपको अनुभव तो है नहीं, संघ का नुकसान कराओगे क्या? आपकी एक भी बात मानने लायक नहीं है।'	सबकी बात सुनना, सबको Acknowledge (एक्नोलेज) करना – 'आप सबने बहुत अच्छे सुझाव दिए, सबके सहयोग से ही प्रत्येक गतिविधि सुचारू रूप से हो जाती है। मैं ऐसा सोच रहा था कि ये चीज ऐसे कर लें तो उचित रह सकता है। क्या आप सब इससे सहमत हैं?'

गलत तरीका (Don't)	सही तरीका (Do)
I किसी बड़े ने कहा – 'बच्चों को इतनी देर मोबाइल चलाने मत दो, बिगड़ जाते हैं।' उनकी बात तुरंत न काटें – 'कोई नहीं बिगड़ते'।	उनकी बात सुन लेना।
J किसी की बात वास्तव में गलत है तो भी उसे सुनते ही झुंझलाते हुए ऐसा न कहें – 'सब फालतू बातें हैं।'	शालीनतापूर्वक कहें – 'मैं आपकी बात समझ रहा हूँ पर मेरा विचार इससे भिन्न है। आप कहें तो मैं अपनी बात रखूँ?'

राजा जितशत्रु और सुबुद्धि प्रधान के वर्णन में :
सुबुद्धि प्रधान ने राजा के कथन को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि कथन स्वीकार करने योग्य भी नहीं था, फिर भी सुबुद्धि प्रधान ने अभद्र तरीके से उनकी बात न काटकर शालीनता से अपना विचार रखा और अपनी बात को सिद्ध करके भी दिखाया।

Note- इससे स्पष्ट है कि बात गलत हो तो स्वीकार नहीं करना है, परंतु किसी का अपमान भी नहीं करना। बल्कि शालीनता और सहजता से अपनी बात कहना है।

✶ बात सही हो, हितकारी हो और मान लेने से कोई नुकसान नहीं हो तो उसे मान लेना चाहिए।

:: आगमिक दृष्टांत ::

शकडाल पुत्र ने जब भगवान महावीर से सत्य धर्म को समझा, तब उन्होंने भगवान के पास श्रावक धर्म को ग्रहण किया। फिर उन्होंने अपनी पत्नी अग्निमित्रा से कहा – देवानुप्रिय! तुम जाओ भगवान की वंदना पर्युपासना करो, उनसे 5 अणुव्रत, 7 शिक्षाव्रत रूप 12 व्रतों को स्वीकार करो। तब पत्नी ने– 'आप ठीक कहते हैं' कहकर विनयपूर्वक उनका कथन स्वीकार किया।
इस प्रकार पूर्व के श्रावक–श्राविका जिनकी भगवान ने भी प्रशंसा की है, वे आपस में एक–दूसरे की बात का सम्मान करते थे।

– क्रमशः

विवेकवान श्रावक इन बिन्दुओं को समझकर संकल्प करें कि 'मैं अपमानजनक तरीके से किसी की बात नहीं काटूँगा।'

श्रमणोपासक

भक्ति रस

संघ सेवा

-कान्ता बैद, गाजियाबाद

संघ सेवा हमारा परम धर्म,
नेक कार्य में ना कोई अधर्म।
गुरु के इंगित इशारों पर चलते रहो,
अपनी मंजिल की ओर बिना रुके बढ़ते रहो।
सम्प्रदाय को कभी ना आड़े आने दो,
जरूरतमंद को सदैव प्रमुख स्थान दो।
तन हमारा सदा स्वस्थ रहे,
मन हमारा सजग रहे,
विवेक हमारा सदा जागृत रहे,
संघ सेवा हमारा लक्ष्य रहे।

पद-प्रतिष्ठा का प्रलोभन कभी ना आड़े आए,
काम ऐसा करें जो जन-मन सबको भाए।
संघ समर्पणा उत्तम सेवा कहाए,
मनुष्य जन्म इससे अपना कर्म खपाएँ।
आओ हम सब संघ सेवा से जुड़ जाएँ,
एक से ग्यारह होकर सशक्त बन जाएँ।
यही भावना नित प्रति भाएँ,
मनुज जन्म को सफल बनाएँ।
भवभ्रमण की भटकन को दूर भगाएँ,
गुरु रामेश का आशीर्वाद हम पाएँ।।

श्रमणोपासक

ज्ञान धारा

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 अगस्त 2023 अंक से आगे....

- कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मन:पर्ययज्ञान

प्र. 2383 मन:पर्यय ज्ञानी द्रव्य से मनोवर्गणा के कितने स्कंधों को जानते-देखते हैं?

उत्तर अनंत स्कंधों को जानते-देखते हैं।

प्र. 2384 मन:पर्यय ज्ञानी क्षेत्र से कितना जानते-देखते हैं?

उत्तर

1. क्षेत्र से अढ़ाई द्वीप में जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग अर्थात् मात्र इतने क्षेत्र में ही रहे हुए संज्ञी पंचेंद्रिय के भावों को और उत्कृष्ट रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे की क्षुल्लक प्रतरों को जानते-देखते हैं।
2. ऊर्ध्व दिशा में समभूमि से 900 योजन ऊपर तक की प्रतरों को अर्थात् ज्योतिषी के ऊपर के तल को जानते-देखते हैं।
3. तिर्यक् दिशा में संपूर्ण अढ़ाई द्वीप और
4. अधोलोक में 100 योजन सलिलावती एवं वप्रा विजय में रहे हुए पशु, मानव और देव के भावों को जानते-देखते हैं।

प्र. 2385 रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे की क्षुल्लक प्रतर किसे कहते हैं?

उत्तर श्री नंदीसूत्र चूर्णि में समभूमि से 900 योजन नीचे तक की प्रतरों को ऊपर के क्षुल्लक प्रतर और उसके नीचे के 100 योजन की प्रतरों को नीचे के क्षुल्लक प्रतर कहा गया है।

प्र. 2386 प्रतर और श्रेणी किसे कहते हैं?

उत्तर एक आकाश प्रदेश मोटे और चौकोर आकाश खंड को प्रतर कहते हैं। लोक में असंख्यात प्रतरें हैं। आकाश प्रदेशों की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं। जैसे- अधोलोक की 7 रज्जू लंबी और 7 रज्जू चौड़ी श्रेणियों का एक प्रतर है।

प्र. 2387 क्षुल्लक प्रतर किसे कहते हैं?

उत्तर अधोलोक की 7 रज्जू वाली प्रतरों और ऊर्ध्वलोक की 5 रज्जू वाली प्रतरों को छोड़कर लोक की सभी प्रतरें एक-दूसरे की अपेक्षा क्षुल्लक (छोटी) हैं।

प्र. 2388 सर्व क्षुल्लक प्रतर किसे कहते हैं?

उत्तर तिर्यक् लोक के मध्य भाग में एक रज्जू प्रमाण जितने प्रतर हैं, उन्हें 'सर्व क्षुल्लक प्रतर' कहते हैं। ये प्रतरें संख्यात हैं।

प्र. 2389 क्या मन:पर्ययज्ञानी अढ़ाई द्वीप के बाहर के द्वीप, समुद्र, पर्वतादि को देख सकता है?

उत्तर अढ़ाई द्वीप में रहा हुआ देव या जंघाचरणादि लब्धि वाला मनुष्य यदि अढ़ाई द्वीप के बाहर के द्वीप, समुद्र, पर्वतादि को स्मृति में ला रहा है तो मन:पर्ययज्ञानी उन्हें साक्षात् कर (देख) सकता है अन्यथा नहीं देख सकता है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमश: श्रमणोपासक

दसवाँ अध्ययन 'दुमपत्तयं' का सार गतांक में पूर्ण हुआ है, जिसमें प्रमाद से दूर रहने की प्रेरणा का बहुत सुन्दर कथन प्रकाशित है। प्रस्तुत अध्ययन 'बहुश्रुत पूजा' के साथ इसका संबंध इस प्रकार है- प्रमाद का परिवर्जन विवेकशील मुनियों के लिए संभावित है। यह विवेक श्रुत (शिक्षा) की आराधना से ही उत्पन्न होता है।

15-16 जून 2023 अंक से आगे....

प्रश्न 1. 'श्रुत' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर शब्द-अक्षर, ग्रंथ-पुस्तक, अनुभव आदि 'श्रुत' शब्द के अनेक अर्थ हैं।

प्रश्न 2. क्या श्रुत एवं श्रुतज्ञान समान अर्थ वाले हैं?

उत्तर नहीं। श्रुत, इन्द्रियों और मन का विषय है; ज्ञान आत्मा का गुण है। जो ज्ञान श्रुतपूर्वक उत्पन्न होता है, वह श्रुतज्ञान कहलाता है।

श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, वह श्रुतज्ञान है।

प्रश्न 3. श्रुत से क्या लाभ होता है?

उत्तर श्रुत से निम्नोक्त लाभ होते हैं-

1. श्रुत अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करता है।
2. श्रुत हमें अप्रमादी, निरभिमानी, सरल, कार्यशैली में कुशलता और मन को मोड़ने की समझ पैदा करता है।
3. श्रुत के माध्यम से हम अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन यापन कर सकते हैं।

प्रश्न 4. बहुश्रुत का क्या अर्थ है?

उत्तर जो साधु अनेक शास्त्रों एवं विधाओं में पारंगत होता है, जिनका श्रुत व्यापक (चारों ओर फैला हुआ और विशाल होता है) तथा जिनका ज्ञान, दर्शन और चारित्र अतिविशुद्ध हो, उस साधु को 'बहुश्रुत' कहा गया है।

प्रश्न 5. प्रस्तुत अध्ययन को 'बहुश्रुत पूजा' क्यों कहा गया है?

उत्तर जैन दर्शन में तीर्थंकर भगवान, सिद्ध भगवान, आचार्य एवं समस्त पाँच महाव्रतधारी साधुओं की पूजा भावों से होती है अर्थात् गुणगान, बहुमान, आराधना आदि से की जाती है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन को 'बहुश्रुत पूजा' कहा गया है।

प्रश्न 6. बहुश्रुत किन-किन नामों से प्रसिद्ध है?

उत्तर विभिन्न आगमों में बहुश्रुत के विभिन्न अर्थ मिलते हैं, जैसे-

1. जो आगमवृद्ध हों,
2. जो चतुर्दश पूर्वधर (14 पूर्वधर) हों,
3. जो शास्त्रार्थ पारंगत हों,
4. जो बहुत से सूत्र, अर्थ एवं तदुभय के धारक हों और
5. जिनको बहुत सूत्र (आगमों) का ज्ञान हो तथा जो बहुत से साधकों की चारित्र शुद्धि कराने वाले हों।

प्रश्न 7. क्या बहुश्रुतता प्राप्त करने के लिए ज्ञान ही आवश्यक है?

उत्तर नहीं। बहुश्रुत, ज्ञान और आचरण दोनों का संयुक्त रूप है। केवल ज्ञान से ही कोई बहुश्रुत नहीं बन सकता है। इसी संबंध में भगवान महावीर स्वामी ने प्रस्तुत अध्ययन की प्रथम गाथा में इस प्रकार फरमाया है–

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे।।1।।

भावार्थ– जो संयोग से मुक्त है, अणगार है, भिक्षु है, उनका मैं क्रमशः 'आचार' कहूँगा। मुझ से सुनो।

1. **संजोगा विप्पमुक्कस्स :** जो विशेष रूप से संयोग से मुक्त होता है। यह मुनि बनने की प्रथम भूमिका है।
2. **अणगारस्स : अनगार, भिक्खुणो –** भिक्खू।
3. **आयारं : आचार –** यहाँ उचित क्रिया में विनय को ग्रहण किया गया है।

प्रश्न 8. मुनि को कौनसे संयोग से मुक्त होना चाहिए?

उत्तर मुनि को दो प्रकार के संयोग से मुक्त होना चाहिए, जो इस प्रकार हैं–

द्रव्य संयोग : बाह्य – माता–पिता, परिवार, धन, गृह आदि।

भाव संयोग : आभ्यन्तर – अज्ञानता, मोह, ममत्व आदि।

प्रश्न 9. 'अणगारस्स' का क्या अर्थ है?

उत्तर प्राचीनकाल में गृह का नाम 'अगार' हुआ करता था, जिसके 'अगार' नहीं होता वह 'अनगार' होता है। गृह में रहते हुए 'अणगार' धर्म प्रकट नहीं होता है। जब तक 'मेरे घर' का भाव खत्म नहीं होगा, तब तक वह 'अणगार' नहीं होता है।

प्रश्न 10. 'भिक्खुणो' का क्या अर्थ है?

उत्तर जो साधक अपने गृह को त्यागकर भिक्षा से अपने जीवन का निर्वाह करते हैं, वे 'भिक्खु' कहलाते हैं। याचना भी ज्ञान को बढ़ाती है। भिक्षा में संयम की सारी क्रियाएँ आ जाती हैं। जैसे– एक भी जीव की हिंसा न हो, इस बात पर मुनि हर क्षण जागृत रहकर गवेषणा करते हैं। बिना आज्ञा किसी वस्तु को ग्रहण नहीं करते तथा जितनी आवश्यकता हो उतना ही ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 11. 'विप्पमुक्कस्स' शब्द की क्या महत्ता है?

उत्तर संयोग विमुक्त, अनगार, भिक्खु – ये तीनों एकार्थक शब्द हैं। सभी प्रकार के संयोग से विमुक्त मुनि के पास कुछ नहीं होता है, फिर भी वे सम्पूर्ण विश्व की सुख–सम्पदा के सहज ही स्वामी बन जाते हैं।

प्रश्न 12. मुनि संयोग से विमुक्त कैसे बने?

उत्तर इसके दो उपदेश हैं–

1. इस अध्ययन का ज्ञान भली–भाँति करके और
2. अपने जीवन में श्रुत का निर्माण करके।

इसका भाव इस प्रकार है– यह ज्ञान हमारे जीवन में प्रकाश लाने का प्रयास है। हम अपनी ज्ञान–शक्ति से कषाय, राग–द्वेष आदि चिरकालीन आदतों को बदल सकें, ऐसी हमारी चित्तवृत्ति होनी चाहिए। **– क्रमशः**

15-16 जून 2023 के अंक में 'दुमपत्तय' अध्ययन में कहानी के माध्यम से जो केवलियों की संख्या बतायी गयी है, उसका वर्णन आगमों में नहीं है। अतः इसे इस तरीके से समझें कि गणधर आदि के केवली शिष्यों की संख्या तीर्थंकर भगवंत से अधिक नहीं हो सकती है।

मनुष्य के भेद

15-16 अगस्त 2023 अंक से आगे....

टिप्पणी : जैन धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैनधर्म का मौलिक इतिहास तथा लोकालोक आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का प्रयास किया जा रहा है। इसे अवश्य पढ़ें और श्रमणोपासक से जुड़े रहें।

कहलाता है। ऐसे ही द्वीन्द्रियादि जीवों में भी समझना चाहिए।

प्रश्न 62. सम्मूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य कितना होता है?

उत्तर अन्तर्मुहूर्त्त।

प्रश्न 63. क्या सम्मूर्च्छिम मनुष्य के माता-पिता होते हैं?

उत्तर नहीं, वे बिना माता-पिता के ही उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 64. जो माता-पिता के संयोग से पैदा होते हैं, उन्हें कैसे मनुष्य कहते हैं?

उत्तर गर्भज मनुष्य।

प्रश्न 65. गर्भज मनुष्य के कितने भेद हैं?

उत्तर दो सौ दो (202)।

प्रश्न 66. गर्भज मनुष्य के 202 भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर 86 युगलिक व 15 कर्मभूमिज- ये 101 अपर्याप्त व 101 पर्याप्त मिलाकर 202 भेद हुए।

प्रश्न 67. युगलिक गर्भज है या सम्मूर्च्छिम?

उत्तर युगलिक गर्भज हैं।

प्रश्न 68. अपर्याप्त और पर्याप्त शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर जिस जीव में जितनी पर्याप्तियाँ कही गई हैं, उन सभी पर्याप्तियों को पूर्ण कर लेने पर वह जीव पर्याप्त कहलाता है। जैसे- एकेन्द्रिय जीव के आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान, ये चार पर्याप्तियाँ हैं तथा स्वयोग्य पर्याप्तियों को जब तक पूर्ण नहीं कर लेता है तब तक वह अपर्याप्त

प्रश्न 69. पर्याप्त-अपर्याप्त की अपेक्षा जीव के कितने भेद हैं?

उत्तर 2 (लब्धि अपर्याप्त, लब्धि पर्याप्त)।

प्रश्न 70. लब्धि अपर्याप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो जीव नियमा अपर्याप्त अवस्था में काल करते हैं।

प्रश्न 71. लब्धि पर्याप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो जीव पर्याप्त होकर ही काल करेंगे, उन्हें लब्धि पर्याप्त कहते हैं।

प्रश्न 72. लब्धि पर्याप्त के कितने भेद हैं?

उत्तर 2- करण अपर्याप्त और करण पर्याप्त।

प्रश्न 73. करण अपर्याप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों ने अपनी स्वयोग्य पर्याप्ति अभी तक पूर्ण नहीं की है, लेकिन भविष्य में अवश्य करेंगे, उन्हें करण अपर्याप्त कहते हैं।

प्रश्न 74. करण पर्याप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों ने स्वयोग्य पर्याप्ति पूर्ण कर ली है, वे करण पर्याप्त कहलाते हैं।

प्रश्न 75. जीव कितनी पर्याप्तियाँ पूर्ण करके काल कर सकते हैं?

उत्तर तीन।

प्रश्न 76. जिस जीव ने श्वासोच्छ्वास (चौथी) पर्याप्ति पूर्ण कर ली क्या वह जीव अपर्याप्त अवस्था में काल कर सकता है?

उत्तर नहीं, क्योंकि श्वासोच्छ्वास नामकर्म का उदय पर्याप्त जीवों के ही होता है।

प्रश्न 77. छः पर्याप्तियों के नाम क्या है?

उत्तर आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, आनापान पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति और मन पर्याप्ति।

प्रश्न 78. अपर्याप्त की अवस्था में जीव ज्यादा से ज्यादा कितने समय तक रहता है?

उत्तर अन्तर्मुहूर्त्त।

प्रश्न 79. हमारे कितनी पर्याप्तियाँ हैं?

उत्तर छः।

प्रश्न 80. धातकी खण्ड और अर्द्धपुष्कर द्वीप के सम्मूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद हैं?

उत्तर 101 मनुष्य क्षेत्र हैं, इसलिए इनके भी 101 भेद हैं।

प्रश्न 81. सम्मूर्च्छिम मनुष्य में अपर्याप्त-पर्याप्त ऐसे दो भेद होते हैं या नहीं?

उत्तर नहीं, क्योंकि वे अपर्याप्त अवस्था में ही मर जाते हैं।

प्रश्न 82. सम्मूर्च्छिम मनुष्य में कितनी पर्याप्तियाँ हैं?

उत्तर चौथी पर्याप्ति का अपर्याप्त रहते ही मर जाते हैं।

प्रश्न 83. मनुष्य के कुल भेद कितने हैं?

उत्तर 303 भेद (101 क्षेत्र के गर्भज मनुष्यों के अपर्याप्त और 101 पर्याप्त और 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य मिलकर 303 भेद हुए)।

प्रश्न 84. मनुष्य के 303 भेद में से भरतक्षेत्र में कितने भेद हैं?

उत्तर 15 भेद (जम्बूद्वीप में 3, धातकी खण्ड में 6, अर्द्धपुष्कर द्वीप में 6 भेद, कुल 15)।

प्रश्न 85. जम्बूद्वीप में मनुष्य के कितने भेद हैं?

उत्तर 27 भेद। तीन कर्मभूमि के 9 भेद (अपर्याप्त, पर्याप्त, सम्मूर्च्छिम) और अकर्मभूमि के 18 मिलकर 27 भेद हुए।

प्रश्न 86. लवण समुद्र में मनुष्य के कितने भेद हैं?

उत्तर 56 × 3 = 168 भेद।

प्रश्न 87. धातकी खण्ड में मनुष्यों के कितने भेद हैं?

उत्तर 54 भेद (छः कर्मभूमि के 18 भेद, बारह अकर्मभूमि के 36 भेद मिलकर 54)।

प्रश्न 88. अर्द्धपुष्कर द्वीप में मनुष्यों के कितने भेद हैं?

उत्तर 54 (छः कर्मभूमि के 18 और बारह अकर्मभूमि के 36 भेद मिलकर 54)।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमशः

श्रमणोपासक

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15-16 अक्टूबर 2023** का धार्मिक अंक **'धर्म स्थान संबंधी विवेक'** पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में **15-16 नवम्बर 2023** का धार्मिक अंक **'स्वाध्याय विवेक'** विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम

(आप सभी के समक्ष एक धारावाहिक 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' के नाम से चल रहा है। आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती आनंदकँवर जी का जीवन चरित्र प्रतिमाह आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है।)

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

वैराग्य के बादल

महासती श्री आनन्दकुमारी जी म.सा. के व्याख्यान सुनने तो और भी कई बहिनें आती थीं, पर आनंदकुमारी जी का सुनना मात्र सुनने तक ही सीमित नहीं था। वे अपने जीवन में उस अमूल्य वाणी को उतारना चाहती थी। महासती जी ने जब उन बड़ी-बड़ी राजरानियों का वर्णन सुनाया, जो अपनी तरुणावस्था में संसार के कामभोगों को असार समझकर उन्हें ठुकरा कर निकली थी तो आनन्दकुमारी जी के हृदयाकाश में वैराग्य के बादल उमड़ने लगे। संसार के भोग-विलास उन्हें बन्धकारक, तुच्छ और नगण्य प्रतीत होने लगे। आनन्दकुमारी जी में अब तक विरक्ति तो मौजूद थी ही, पर वे एक तरह से सोई हुई थी। महासती जी के मर्मस्पर्शी, जोशीले उपदेश ने मानो उनको झकझोर कर जगा दिया।

प्रबुद्ध आत्माओं के लिए साधारण-सा संकेत ही दिशा-सूचन कर देता है। आत्मज्ञान होने वाला होता है तो मामूली-सी घटना से ही हो जाता है।

मिथिला के महाराजा नमिराज दाहज्वर की दारुण वेदना से पीड़ित थे। महारानियाँ और दासियाँ आदि उनके लिए चन्दन घिस रही थी। उनके हाथों में पहनी चूड़ियों की परस्पर रगड़ से आने वाली आवाज दाहज्वर की वेदना के कारण महाराज को असह्य थी। महाराज ने उसी समय प्रधानमंत्री को बुलाकर कहा- 'मंत्रीवर! यह शोर मुझसे नहीं सहा जाता। इसे बन्द कराओ।' अब चन्दन घिसने वाली महारानियों एवं दासियों ने अपने हाथ में सौभाग्यरूप केवल एक-एक चूड़ी रखकर बाकी सब चूड़ियाँ उतार दी। चूड़ियों के उतरते ही शोर बन्द हो गया।

थोड़ी देर बाद ही नमिराज ने पूछा- 'क्या चन्दन घिसने का कार्य पूर्ण हो गया है?'

मंत्री- 'नहीं महाराज!'

नमिराज- 'तो शोर कैसे बंद हुआ?'

मंत्री ने सारी घटना बता दी। उसी समय नमिराज के मन में आकस्मिक भाव उठा। उन्होंने सोचा- 'हाँ, अब मेरी समझ में आया कि जहाँ एक से अधिक होते हैं, वहाँ शोर होता है। जहाँ सिर्फ एक होता है वहाँ शान्ति रहती है।' इस गूढ़ चिन्तन के परिणामस्वरूप उन्हें अपने पूर्वजन्म का स्मरण हुआ और शान्ति की प्राप्ति के लिए समस्त बन्धनों को छोड़कर अकेले विचरने की इच्छा जागृत हुई। व्याधि शान्त होते ही वे महलों से ऐसे निकले जैसे काले बादलों के कारागृह से निर्मल चन्द्रमा निकल आया हो। त्याग व तपश्चर्या की अपूर्व ज्योति जगमगाने लगी। इन्द्र भी उनके त्याग और तपश्चर्या की कसौटी करने आया, पर वह भी उनका प्रगाढ़ वैराग्य देखकर चकित, विस्मित और भ्रमित रह गया।

आत्मा में योग्यता हो तो वह किसी भी निमित्तकारण को पाकर कर्त्तव्य-पथ पर कटिबद्ध हो

जाती है। महासती जी का उपदेश सुनने वाली सैंकड़ों बहिनें थी, परन्तु आनन्दकुमारी जी ही ऐसी थी जिन्हें वैराग्य का स्पर्श हो पाया। पूर्वजन्म के संस्कारों के बिना किसी भी मनुष्य का असाधारण विकास नहीं हो सकता। पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण भूमिका तैयार थी और ज्यों ही बीज पड़ा वह अंकुरित हो उठा। अब तो दिन-रात महासती जी द्वारा सुनाई हुई राजरानियों की जीवनियाँ आँखों के सामने घूमने लगी। कितनी त्याग की मूर्तियाँ थी वे! यौवन की उन्मत्त दशा में भी इतनी विलक्षण वैराग्य साधना! भोगविलास की अपूर्व सामग्री उनके पास थी, फिर भी ठोकर मार दी! वह महासती राजीमती मेरे जैसी ही तरुण थी। उस सिंहनी को माया के पिंजरे में डालने का कितना प्रयास किया गया, किन्तु वे सच्ची सिंहनी थी; बिलकुल नहीं फँसी। क्या मैं व्यर्थ ही संसार के मोहजाल में फँसी रहूँगी? नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मेरी आदर्श वह ब्रह्मचारिणी महासती राजीमती जी हैं। मैं उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने का प्रयत्न करूंगी। अब तक मेरी नौका लक्ष्यशून्य हो इस अन्धकारयुक्त संसार समुद्र में गोते खा रही थी, परन्तु अब तो मुझे महासती जी के त्यागमय जीवन से प्रकाश स्तम्भ मिल गया है। अब अपनी जीवन नौका को मैं इधर-उधर नहीं भटका सकती। यदि प्रकाश पाने पर भी कोई भटकता रहे तो उसका उद्धार होना कठिन ही नहीं अपितु सर्वथा असम्भव है।

मेरे सामने ही मेरे पतिदेव की अकाल मृत्यु हो गई, फिर भी मैं जागृत न होऊँ! वह मृत्यु मुझे जागृत करने आई थी, वह मुझे अमर बनने का सन्देश देने आई थी। मेरे एक सांसारिक बन्धन को तो वह तोड़कर चली गई है। यह संसार कितना दु:खों से भरा हुआ है। जन्म, जरा और मृत्यु के दु:ख से संसार छटपटा रहा है। इस जीवन का क्या भरोसा? आज है, कल नहीं। भवन, स्वजन, तन और धन सब यहीं रह जाने वाले हैं और वह अमर देवता आत्मा और कहीं उड़कर चला जाता है। कहीं दूसरी जगह ही अपना बसेरा करता है। इन वस्तुओं के मोह में पड़ा रहना ही क्या जीवन की सार्थकता है? और यह शरीर भी मिट्टी का पुतला है। इससे धर्म की कमाई कर ली जाए तो ही इसका होना सार्थक है, नहीं तो ऐसे-ऐसे अनन्त शरीर मिलने पर भी कुछ नहीं होता। मैं क्यों मूर्खता कर रही हूँ? मुझे जल्दी से जल्दी सावधान हो जाना चाहिए। मुझे अब अपने जीवन का मार्ग बदलना चाहिए।

आपकी वैराग्य भावना प्रबल हो उठी थी। आपने सोचा कि मुझे अब वैराग्य की गंगा में स्नान करना है। मेरे सामने भोगों के उच्चतम पहाड़ विघ्न डालने वाले थे, पर अब मैंने उन पहाड़ों पर चढ़ाई कर ली है। सामने ही वैराग्य की गंगा नदी प्रबल वेग से बहती हुई मुझे दिखाई दे रही है। अब जरा तेज कदमों से चलूँगी तो उस नदी को पा सकूँगी। आपने अपनी अन्तरात्मा से बातें की और अपने मन में दृढ़निश्चय कर लिया कि ''मैं अवश्य ही इन महासती जी के श्रीचरणों का आश्रय लूँगी।''

यह है आनन्दकुमारी जी की वैराग्य के प्रति दृढ़ता का ज्वलन्त प्रमाण। यह है भावी जीवन को उच्च बनाने का शुभ संकल्प। शुभ संकल्प एक ही क्षण में केवलज्ञान तक छलांग लगा सकता है और दु:संकल्प एक ही क्षण में सातवें नरक की यात्रा करा सकता है। शुभ संकल्प करके आनन्दकुमारी जी साधना के दुर्गम पथ पर चलने के लिए उत्सुक हो गई। वे इस कठोर मार्ग पर किस प्रकार प्रखर गति से अग्रसर हुई, यह आगे पढ़ेंगे।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमश:

श्रमणोपासक

आरंभ किसलिए करते हैं? कारण क्या हैं? मैं जिन्दा रहूँ, मेरा परिवार जिन्दा रहे, यह जीवेषणा आरम्भ से जोड़ती है। इससे जितने गहरे जुड़ते हैं उतने ही हिंसा से जुड़ते हैं। जीवेषणा से जितने-जितने ऊपर उठेंगे, उतने-उतने अहिंसक बनेंगे और जिस दिन जीवेषणा पूर्णत: समाप्त हो जायेगी वह दिन हमारे पूर्णत: अहिंसक बन जाने का होगा। वह दिन समता का होगा। अभी हम अहिंसा से जुड़े जरूर हैं, किन्तु उस कोटि की अहिंसा प्राप्त नहीं हुई है। पर लक्ष्य बना हुआ है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

साभार- श्री राम उवाच-7

बालमन में उपजें ज्ञान

– मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेन्द्र बच्चो! जिस तरह आपकी wishes, desires unlimited हैं, उसी तरह जैन धर्म में ज्ञान का खजाना भी unlimited है। जितना सीखो, जितना समझो, उतना ही कम है। आप सभी ने step by step बहुत सारी अच्छी आदतें सीखी, विवेक को समझा, ज्ञान को ग्रहण किया। ये सभी आपके जीवन को सही दिशा दिखाएंगे ही, आपके friend, family और relatives हैं, उन पर भी effect करेंगी।

आज सौरभ की माताजी बहुत खुश थी, बच्चों में आया बदलाव उन्हें बहुत आनन्द दे रहा था। उन्होंने सोचा कि क्यों ना आज बच्चों को कुछ different तरीके से सिखाया जाए। तो आईए, पढ़ते हैं कि उन्होंने कैसे अलग अंदाज में बच्चों को जीवन परिवर्तनकारी कुछ बातें सिखाई।

आओ बच्चों! आओ बच्चों!
हाथ पकड़ सब साथ चलो।
नितिन, नीलिमा, पंकज, सौरभ,
अभी तो बाकी है ज्ञान का नभ।।

जैन धर्म को तुमने सीखा,
संस्कारों का है ये खजाना।
जीवन में गर मिल जाए सफलता,
विनम्रता को कभी ना भुलाना।।

चलते-चलते गर गिर जाओ,
जीवन की उलझनों में फंस जाओ।
बाधाओं से मत घबराना,
अपने गुरु का ध्यान लगाना।।

जीवन हो जाएगा आसान,
जब समझ जाओगे कर्मसिद्धान्त।
जैसा करोगे वैसा भरोगे,
और जो किया है पीछे तुमने,
आगे वैसा ही होगा समझे।।

पुरुषार्थ, सरलता, धैर्य और सहजता
इन्हीं से बांधो अपना बस्ता।
आज का समय तुम्हारा है,
कल क्या हो किसको पता।।

गुणी बनो, गुणवान बनो,
संस्कारी बन जैन धर्म की शान बनो।
आज सीखो, कल समझो
सदा के लिए अन्तर में उतारो।।

एक-एक गुण बहुमूल्य है,
हृदय में इन्हें बसा लो।
अहिंसा, सत्य, अचौर्य,
ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह,
इन्हीं से मिलती हर मुश्किल में फतह।।

माता-पिता का कहना मानो,
गुरु ही सर्वश्रेष्ठ हैं इतना जानो।
ये हैं तुम्हारे भाग्यविधाता,
इनकी अंगुली सदा ही थामो।।

संस्कारों की डोर कभी ना छोड़ना,
धर्म-ध्यान में पीछे ना हटना।
मौज-मस्ती तो है कुछ पल का मजा,
गर चूक गए जरा भी तो
भुगतनी पड़ेगी सजा।।

'बालमन में उपजे ज्ञान'
ज्ञान से बन जाता मनुष्य महान।
सदा सीखो अच्छी बात,
ज्ञान जैसे खुला आसमान।।

आओ हम सब हाथ बढ़ाएँ,
एक ऐसा समाज बनाएँ।
गुणों की हो पूजा जहाँ,
अवगुणी धूर्त कहलाए।।

आत्मसुख ही सच्चा सुख है,
खुद समझें औरों को समझाएँ।
आओ बच्चों! आओ बच्चों!
हाथ पकड़ सब साथ चलो।
साथ चलो और साथ रहो।
एक सशक्त समाज बनाओ।।

श्रमणोपासक

राम चमकते भानु समाना

॥ जय महावीर ॥

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

Exam Date 01 Oct. 2023

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें।

परीक्षा

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा भाग 1 से 12 तक आयोजित होगी, जिसमें सकल जैन समाज के सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

(भाग 1 से 4 भाग तक)
12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं 55 वर्ष से ऊपर जो लिखने में असमर्थ हो उनके लिए ओरल परीक्षा होगी।

अधिक जानकारी के लिए इस मोबाइल नंबर पर सम्पर्क कर सकते है :-
7231933008

संस्कार सौरभ

संघ गरिमा एवं कर्त्तव्य बोध ही संघ विवेक

-पदमचन्द गाँधी, जयपुर

सदियों से भारतवर्ष ऋषि-मुनियों, साधु-साध्वियों, सन्त-महात्माओं के तपोवन के रूप में जाना जाता है। इसी देश में श्रमण भगवान महावीर का शासन अहिंसा का शासन कहलाता है। अहिंसा की रक्षा के लिए भगवान ने साधु-साध्वियों, श्रावक एवं श्राविकाओं के आधार पर चार तीर्थ की स्थापना की है। 'तीर्थ' अर्थात् जो भवसागर से तिराने वाले, पार लगाने वाले तथा जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाले होते हैं। तीर्थ को अहिंसा का पालन करने एवं संघ एकता को बनाये रखने हेतु समन्वयकारी नीति के 'स्तम्भ' कहा गया है। यदि इनमें से एक भी स्तम्भ क्षीण हो जाये तो वह सम्पूर्ण संघ एकता को क्षीण कर देता है। **इसके लिए वास्तव में आज ऐसे निर्लिप्त, निर्भीक, पारदर्शी एवं स्वच्छ संघात्मक एकता की इमारत के निर्माण हेतु कुशल नेतृत्व जो संघनायक, संघ संचालक द्वारा दिया जाता हैं उनकी पालना नितान्त जरूरी हैं।**

सौहार्द्रता, मैत्रीभाव, समर्पण, सहिष्णुता एवं समन्वय के प्रदाता प्रभु महावीर ने सदैव अनेकान्त को अपनाया है जिसमें कभी भी किसी भी तरह का कोई विवाद सम्भव नहीं है, क्योंकि इसके लिए निष्काम, नि:स्वार्थ जन-जन की भावनाओं को समझने वाला, सेवाभावना से ओतप्रोत तथा आगमसम्मत मौलिक सिद्धान्तों पर चलने वाले नेतृत्त्व की आवश्यकता होती है। क्योंकि संघ एवं संगठन रूपी हृदय की धड़कन नेतृत्त्व ही होती है। बिना दिशा सूचक यन्त्र के नाव समुद्र में चलती जरूर है, लेकिन मंजिल नजर नहीं आती है।

संघ की आवश्यकता क्यों?

मानव अपनी मौतिक विशेषता के कारण समूह में रहने वाला प्राणी है। परन्तु मनुष्य अत्यधिक मननशील होने के कारण एकाकी रूप से पूर्ण होना चाहता है। इस हेतु वह 'पर' को त्यागकर आत्मगुणों को विकसित करने का प्रयास करता है। किन्तु अपने अल्प विकास और आत्मशक्ति की न्यूनता के कारण उसे साधना के क्षेत्र में अपने से अधिक विकसित अनुभवियों के अनुभव से लाभान्वित होने के लिए और अल्प विकसित साधक को अवलम्बन देने के कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के लिए समान विचार और आचार वाले

साधकों के समूह में निवास करना पड़ता है। यद्यपि साधक मुक्ति (पर से छूटकर एकत्व) की प्राप्ति के लिए संयोगों से विप्रमुक्त अणगार बनता है, तदपि साधना की सुरक्षा के लिए संघ नगर में निवास करना पड़ता है और अपने चरम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए संघ रथ में आसीन होना पड़ता है। प्रभु महावीर ने साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविकाओं के पारस्परिक व्यवहार के पावन सूत्र को, उसकी आचार प्रणाली में दर्शनाचार के चार बाह्य आचारों उपबृंहण, स्थिरीकरण, वात्सल्य और प्रभावना में इस प्रकार विस्तृत किया कि साधक आत्मदृष्टि से साधना करते हुए संघ के रूप में सहजता में जुड़कर संगठित हो जाते हैं।

संघ का स्वरूप

संघ में कायदा नहीं, व्यवस्था होती है। संघ में सूचना नहीं, समझ होती है। संघ में कानून नहीं, अनुशासन होता है। संघ में शोषण नहीं, पोषण होता है। संघ में आग्रह नहीं, आदर होता है। संघ में सम्पर्क नहीं, सम्बन्ध होता है। संघ में अर्पण नहीं, समर्पण होता है। उपकारी स्वभाव के कारण ही संघ आगे बढ़ता है। आध्यात्मिक रूप से संघ का उद्देश्य आत्म-कालुष्य को धोकर निर्मलता की ओर बढ़ना है तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही संघ सार्थक होता है। 'संघ' शब्द का प्रयोग आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले त्यागियों के समुदाय के लिए हुआ है। संघ में संयम, तप, सम्यक्त्व, शील तथा स्वाध्याय आदि के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया गया है। नन्दीसूत्र में संघ की उपमाओं को स्पष्ट करते हुए कहा है-

गुण-भवनगहण। सुय-रमण भरिय।
दंसणविसुद्धरत्थागा।
संघनगर। भद्दं ते, अखण्ड चारित्त पागारा।।

अर्थात् गुण रूपी-भवनों में व्याप्त श्रुतरूपी रत्नों से पूरित, दर्शन विशुद्धि रूपी रथ्याओं और अखण्ड चारित्र रूपी परकोटे वाले हैं। संघ नगर तुम्हारा कल्याण हो। संघ में रथ, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र, मेरुपर्वत आदि की उपमा देकर संघ के विशिष्ट गुणों को प्रतिपादित करते हुए **'णमो संघस्स'** अर्थात् संघ को आदरपूर्वक वन्दन किया गया है। संघ को नगर बताते हुए सद्गुणों का भवन, श्रुत शास्त्र को रत्न, विशुद्ध सम्यक्त्व को वीथी और निर्दोष चारित्र-पालन को उसका परकोटा कहा गया है। इसी प्रकार संघ को चक्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए संयम को तुम्ब-नाभी, द्वादशविध रूप को चक्र के आरे तथा सम्यक्त्व को उसका रक्षा पटल बताया है। संघ को रथ के रूप में निरूपित करते हुए आचार्य देववाचक ने शील को उसकी पताकाएँ, तप और नियम को उसके घोड़े एवं स्वाध्याय को मधुर घोष कहा है।

नन्दीसूत्र में आचार्य देववाचक ने साधु संघ का पद्म (कमल) के रूप में वर्णन करते हुए उसे जल रूपी कर्मरज से अलिप्त बताया है। श्रुतरत्न को उस कमल की दीर्घनाल, पंच महाव्रतों को सुदृढ़ कर्णिकाएँ, उत्तरगुणों को पराग, श्रावकजनों को मधुकर तथा श्रमणों को उसकी पंखुड़ियाँ बताया है। संघ चन्द्रमा के समान निर्मल तथा सम्यक्त्व रूपी चाँदनी से युक्त होता है। संघ सूर्य के तेज रूप से दीप्त एवं सम्यग्ज्ञान रूप प्रकाश से युक्त होता है तथा संघ समुद्र के समान गम्भीर तथा धैर्य को उसके तट के रूप से सुशोभित किया है। संघ को सुमेरुपर्वत के रूप में निरूपित करते हुए सम्यग्दर्शन को उसकी भूपीठिका कहा है। इस प्रकार स्पष्ट है कि संघ की शोभा उसमें व्याप्त सद्गुणों से होती है। संघ सद्गुणों का आकर होता है इसलिए वन्दनीय है।

संघ का लक्ष्य संसार के दु:खों, क्लेशों से छुटकारा प्राप्त करना है। जिसके लिए सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना की जाती है। सद्गुणों के विकास के साथ त्याग, समर्पण, सहयोग, वैय्यावृत्य, ज्ञानदान आदि का निरंतर सिंचन होता है। संघ वह सरिता है जिसमें सद्गुणों का संचय होता है। इसलिए इसे **'संघो गुणसंघाओ'** अर्थात् गुणीजनों का संघात कहा गया है। प्रभु महावीर के शासन की 'सम्प्रदाय' एक इकाई होती है जिसका भी अपना संघ होता है। जिसका उद्देश्य है कि धर्म के आचरण को किस तरह बढ़ाया जाय तथा इसका उत्थान किस तरह किया जाय। धर्म और सम्प्रदाय परस्पर जुड़े हुए होते हैं। ये आपस में विरोधी नहीं होते। अच्छी व्यवस्था पद्धति को चलाने के लिए, मजबूत करने के लिए सम्प्रदाय होता है, जिसमें कट्टरवाद नहीं होता।

'मैं जिनशासन संघ का सदस्य हूँ, यह मेरे लिए गौरव की बात है।'

कर्त्तव्यबोध एवं संघ गरिमा को कैसे बनाये रखें?

संघ की आचार प्रणाली, सामाचारी ही उसकी गरिमा होती है अर्थात् संघ के स्वरूप एवं लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो कार्य किये जाते हैं, जिनसे संघ आगे बढ़ता है, वही उसकी गरिमा होती है। प्रभु महावीर की अनमोल वाणी समता, सहिष्णुता और समर्पण, दया, अनुकम्पा का जहाँ पालन किया जाता हो, वह संघ मजबूत होता है। जिस संघ में दया, अनुकम्पा, संवेदनाएँ नहीं, जहाँ कर्त्तव्य परायणता नहीं, उदासीनता का भाव हो, वह संघ प्रगतिशील नहीं बन सकता। संघ की तुलना घड़ी से की गई है। यदि घड़ी का एक भी पुर्जा बन्द हो जाता है तो घड़ी बन्द हो जाती है। अत: संघ को चलाने के लिए कुशल नायक की जरूरत होती है। उसके लिए आवश्यक है-

(1) संघ प्रचार प्रधान नहीं, आचार प्रधान

जहाँ आचरण होता है, चारित्र धर्म होता है, वहाँ प्रचार की आवश्यकता नहीं। इत्र के बाजार में जाने से स्वत: महक का अनुभव होता है, हमारी ज्ञान और क्रिया को मजबूत करना है, आचरण को शुद्ध बनाना है। किसी की जेब में कस्तूरी हो तो कहने की आवश्यकता नहीं। जहाँ आचार-विचार की शुद्धता हो वह स्वत: प्रचारित हो जाती है तथा वन्दन, वाणी, संयम सभी प्रकट कर देते हैं। हमारा दायित्व होता है ऐसे गरिमामय संघ के हम सहयोगी बनें। अपने आपको धन्य महसूस करें कि 'मैं जिनशासन संघ का सदस्य हूँ, यह मेरे लिए गौरव की बात है।'

(2) संघ सुरक्षा कवच होता है- धर्म की रक्षा करना संघ का काम होता है। हम सब धन्य हैं कि हमें ऐसा पावन संघ मिला है। जहाँ आचार-विचार की, आगमवाणी की, धर्मक्रियाओं की प्रधानता है, विचारों की पवित्रता है, निर्मलता है, जहाँ अहिंसा का, दया का भाव है, वह संघ महान होता है। धर्मसंघ हमारा गौरव है, जिसके तले हम सुरक्षित हैं, क्योंकि संघनायक जो आदेश देते हैं उनका हम श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं। धर्म की रक्षा हम करते हैं तो धर्म हमारी रक्षा करता है।

(3) संघनायक से जुड़ाव- यदि हम संघ का विकास चाहते हैं तो संघनायक के प्रति श्रद्धा, समर्पण, आस्था रखें, संघनायक हमें स्फूर्ति एवं शक्ति से भर देते हैं, क्योंकि वे शक्ति के पावर हाऊस होते हैं। उनसे प्रेरणा पाकर, संघ को आगे बढ़ा सकते हैं। यदि हम संघनायक से जुड़ते है तो सम्पूर्ण संघ 'जड़' (मूल) से जुड़ जाता है, वही संघ पुष्पित, पल्लवित होता है। पौधों को हरा-भरा

रखना है तो जड़ में पानी की जरूरत होती है, लेकिन पत्तों को पानी पिलाया तो पौधा जीवित नहीं रह पाता है। अत: हमें जड़ से जुड़ना है।

(4) हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध हो- संघ एक ताकत है, एक शक्ति है, सहायता का केन्द्र है, आश्रितों की शरण स्थली है, वह एक न्यायालय भी है, वह सर्वशक्तिमान है तथा अनेकान्त दृष्टि लिए होता है। हमारे लिए आवश्यक है कि बनाये गये नियमों का पालन करना, दी गयी जिम्मेदारियों का ईमानदारी से पालन करना, अनुशासन एवं मर्यादाओं को ध्यान में रखकर कर्त्तव्य पूर्ण करना। यह कर्त्तव्य प्रभु प्ररूपित दया धर्म के प्रति समर्पित हो। कर्त्तव्य परायणता एवं निष्ठा ऐसी हो जिससे हमारा कार्य हमारी पहचान बन जाय। संघ सेवा व्यक्ति का कर्त्तव्य ही नहीं स्वभाव बने, आदत बने। इस भावना से सेवा प्रदर्शन नहीं, दर्शन बन जाती है, प्रपंच नहीं प्रेम बन जाती है। जिसमें दिखावा, आडम्बर, प्रदर्शन एवं अहंकार के भावों को स्थान नहीं मिलता।

(5) संघ सेवा में सर्वहित का भाव- संघहित के लिए व्यक्तिगत हित एवं स्वार्थ का त्याग किया जाता है तथा 'सर्वहित' सर्वोपरि होता है। संघ सेवा व्यक्तिगत साधना का समुच्चय होता है, व्यक्तिगत साधना एवं सेवा स्वत: समाविष्ट हो जाती है। संघ की सेवा वही कर सकता है जो व्यक्तिगत हित एवं सुविधा को महत्त्व नहीं देता। स्वधर्मी के दु:ख को दूर करने की तल्लीनता में वह स्वयं को भूल जाये यही सच्ची सेवा होती है। व्यक्तिगत हितों का त्याग करने के कारण ही उदारता, मैत्री, निर्लोभता, सन्तोष, आत्मीयता आदि गुण विकसित होते हैं।

(6) संघ सेवा कर्मनिर्जरा को बढ़ाती है- संघ सेवा में विकथा को महत्त्व नहीं दिया जाता। यदि विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाये, प्रतिकूलताएँ आने लगे या विषम परिस्थितियों में शब्दों के व्यंग बाणों में समताभाव, धैर्य रखना पड़ता है। जोश में आकर अपने होश को नहीं भूलने की प्रेरणा संघ देता है। ऐसे समताभाव रखने से मृदु वचनों से समन्वयकारी नीति से हमारे मन में विकार उत्पन्न नहीं होते। कषायों का शमन होने से हमारी कर्मनिर्जरा होती है, जिससे संघ की गरिमा बढ़ती है तथा संघ चरम तक पहुँचता है।

(7) संघ में पदलोलुपता, मान-सम्मान को महत्त्व नहीं दिया जाये- संघ का गौरव तब बढ़ता है जब चुनाव नहीं, चयन होता है, धन नहीं गुणों को महत्त्व दिया जाता हो, पद एवं प्रतिष्ठा नहीं, सेवा को महत्त्व एवं समय के भोग को देखा जाता है। क्योंकि संघ में पदलोलुपता, यश लिप्सा आदि स्वार्थ जब हावी हो जाते हैं तो संघ विवादित बन सकता है तथा टूट भी सकता है। अत: संघ हितैषी, आत्मीयभाव से, नि:स्वार्थ भाव से बिना यश, कामना के विवेकपूर्ण संघ हेतु कार्य करें। पद प्राप्त व्यक्ति अपने को 'कार्यकर्त्ता' मानकर कार्य करें क्योंकि 'संघ मेरा है' इस भावना से ओतप्रोत होने से मान-सम्मान प्राप्त करने की भावना को स्थान नहीं रहता। क्योंकि सही मायने में संघ के अन्तर्गत जो अधिक कार्य करे, वो अधिकारी कहलाता है, जो सेवा हेतु स्वयं आगे आवे, वह स्वयंसेवक कहलाता है तथा जो कार्य को अपना कर्त्तव्य समझे, उसे कार्यकर्त्ता कहा जाता है। इसके लिए संघ में व्यक्ति अपने को मुख्य या प्रमुख नहीं समझें। संघ में काम करते समय व्यक्ति को अपने अहम् को छोड़ना पड़ता है। अहम् के कारण ही परस्पर टकराव होता है, जिससे संघ का हित गौण एवं आत्म-प्रतिष्ठा की लड़ाई मुख्य बन जाती है।

(8) संघ में सद्गुणों के विकास को महत्त्व दिया जाये- धर्मसंघ में व्यक्ति का जितना समर्पण बढ़ता है उतना ही वह विनम्र, सरल बनता है। संघनिष्ठा एवं संघ समर्पण व्यक्ति को भीतर से बदलता है। गुणीजनों का सम्मान जिस संघ में होता है वह संघ आगे बढ़ता है। क्योंकि **'गुणीसु प्रमोदं'** चरितार्थ होता है।

जीवन्त संघ वह है जिसमें अपने से अधिक गुणवान को देखकर प्रमोद होता है तथा उनके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् करने की प्रेरणा जगती है।

(9) संघ में धन को नहीं, धर्म को महत्त्व दिया जाये- धन का उपयोग आडम्बरों, दिखावे एवं अन्य कार्यों में खर्च किया जाता है। धनवान व्यक्ति अधिक देकर अपना नाम, यश, कीर्ति को प्राप्त करना चाहते हैं। जन्म-जयन्ती, पुण्य-स्मरण, दीक्षा-जयन्ती, तप-सम्मान आदि ऐसे कार्य हैं जिनके क्रियान्वय में धन की नहीं, धर्म की महत्ता है। राग-द्वेष एवं विषय-कषायों की नहीं अपितु इनके त्याग की महत्ता है। जिस संघ में धन को महत्त्व दिया जाता है, वह परिग्रह को जन्म देता है, जिससे कषाय बढ़ते हैं। वह संघ धर्मसंघ नहीं रहकर भौतिक लालसाओं की पूर्ति करने वाला संघ रह जाता है। ऐसा संघ विघटित हो जाता है। अत: धर्म की महत्ता को समझकर कार्य करें।

(10) संघ सेवा में पारदर्शिता जरूरी है- संघ के लेखे-जोखों में पारदर्शिता जरूरी होती है। वह संघ मजबूत होता है जिस पर किसी प्रकार से अंगुली नहीं उठे। पारदर्शिता 'अर्थ' या 'लेखों' की ही नहीं, गतिविधियों की, निर्णयों की तथा अन्य विविध कार्यों की हो। प्रत्येक व्यक्ति का जुड़ाव इस गुण के कारण बढ़ता है तथा संघ आगे बढ़ता है। संघ नेतृत्त्व यदि धनपति, दौलतमन्द लोग करने लगे तो पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है।

(11) संघ सेवा निष्काम भाव से हो- संघ सेवा जितनी निष्काम भाव से होगी, शान्त भाव एवं गोपनीयता से होगी वह संघ हित और आत्महित में उतनी ही कारगर होगी। चूंकि-

कार्य मेरा कर्त्तव्य हो जिससे
किसी के अधिकारों का दमन ना हो।
श्रम मेरे श्रमण जैसा हो
जिससे किसी प्राणी का हनन ना हो।।

इस प्रकार हमें अपने संघ के स्वरूप को समझना है, कृतज्ञ भाव से, निष्काम सेवाभाव से सेवा करनी है। यह आवश्यक है यदि मैं संघ में सहायक न बनूँ तो कोई बात नहीं, लेकिन निन्दक नहीं बनूँ। मेज पर मजबूत नहीं, मैदान में मजबूत बनूँ। मंच पर जगह बनाने की आतुरता के स्थान पर मन में जगह बनाऊँ, ऐसा भाव रखें। कर्त्तव्य के बिना अधिकार धिक्कार बन जाते हैं, इसका ध्यान रखें तभी संघ मजबूत होता है, यही संघ विवेक है।

श्रमणोपासक

सुख और दु:ख

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

सुख और दु:ख मन की छाया हैं। हम अपने मन को जिस अनुकूल अवस्था में लगा देते हैं उस अवस्था को सुख मान मन को अमनोज्ञ बना लेते हैं, वहीं दु:ख का वेदन करने लगते हैं। यदि मन समभाव में स्थित हो जाए तो सुख-दु:ख की छाया भी समाप्त हो जाएगी। उस अवस्था में हमारे साथ कोई कैसा भी व्यवहार करे हम घृणा या नफरत अथवा प्रेम व स्नेह से अछूते ही रहेंगे, क्योंकि हमारे मन ने उस व्यवहार का स्वाद ही नहीं लिया। अत: दु:ख से छुटकारा पाना हो तो घटनाओं-अवस्थाओं को मन से स्पर्श नहीं होने दें, क्योंकि मन में जब किसी चीज की पकड़ हो जाती है तो वहीं से सुख-दु:ख की अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। साभार- नीरव का रव

संघ सेवा विवेक

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

संघ सेवा से स्वयं का उत्थान है।
जो इसका आराधना करता,
बनता वह जग में महान है।
वीर प्रभु की आज्ञा में ही हम सबका कल्याण है।।

संघ शब्द दो अक्षरों से बना है- 'सं'+'घ'। सं = सम्यक् प्रकार से, घ = घोषित यानी सम्यक् प्रकार से संगठित सम विचारों की क्रमबद्धता जहाँ पर होती है, वह संघ की विवेकशीलता है। प्रभु महावीर ने संघ को तीर्थ की उपमा से उपमित किया है। तीर्थ उसे कहते हैं जिससे तिरा जाए। संसार सागर से पार उतरा जाए वह तीर्थ है। ऐसे तीर्थ की सेवा करना महान पुण्य का उपार्जन करना है।

आज वर्तमान में धनोपार्जन की अंधी दौड़ में गुरुभक्ति, संघ सेवा आदि को हम भूलते जा रहे हैं। मूल में ही भूल हो रही है। इस भूल को मिटाने का नाम है संघ सेवा, समर्पणा। जिन्दगी तो एक कहानी की तरह है। जिन्दगी कितनी लम्बी है यह नहीं, वरन् उसकी सजीवता और सरसता विचारणीय होती है। सिर्फ जिन्दगी की लम्बाई का क्या मूल्य है? अभिमन्यु की अपेक्षा जयद्रथ ने लम्बी उम्र पाई थी और गजसुकुमाल मुनि की अपेक्षा सोमिल ब्राह्मण ने लम्बी जिन्दगी पाई थी। इसी सन्दर्भ में महाभारत का एक सूत्र है-

''मुहूर्त्तं ज्वलितं श्रेयः च तु धूमायितं चिरम्''

अर्थात् लम्बे समय तक सुलगने की अपेक्षा मुहूर्त्त भर जलना श्रेष्ठ है। आजकल लोग इस चिन्ता में ज्यादा रहते हैं कि हम लम्बे समय तक कैसे जीएँ? जीवन तो उन्हीं का श्रेष्ठ है जो आवश्यकता पड़ने पर या संकट आ जाने पर स्वयं को दूसरों के लिए न्यौछावर कर देते हैं। जिन्दगी ऐसी हो जो सिर्फ अपने लिए ही नहीं औरों के लिए भी हो। इस जीवन को चन्दन के पेड़ की तरह बनाएँ, जो वृक्ष के रूप में अवस्थित है, फिर भी सुगन्ध देता है और रगड़ने पर भी सौरभ बिखेरता है। ऐसा सुवासित जीवन ही सार्थक जीवन कहलाता है।

"He that does good to others, does good to himself" अर्थात् जो दूसरों की भलाई करता है, वह अपनी भी भलाई करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवन बाँसुरी के दिव्य स्वर को जगा सकता है। बस थोड़ी-सी अंगुलियाँ साधने की आवश्यकता है।

हमेशा के लिए रहना नहीं, इस दौरे फानी में।
कुछ अच्छा काम कर लो, चार दिन की जिंदगानी में।।

किसी भी वस्तु का उपयोग दो ढंग से होता है- एक Best और दूसरा Waste, यानी सही और गलत तरीके से उपयोग हो सकता है। इसीलिए वस्तु की प्राप्ति का इतना महत्त्व नहीं है, जितना कि उसके उपयोग का है। इस पृथ्वी पर चन्द लोग ही ऐसे हैं जो वस्तुओं एवं जीवन का सही उपयोग करके उनका मूल्य बढ़ाते हैं। वास्तव में देखा जाए तो दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त करके उन्हें संभालना एवं सार्थक करना बहुत कठिन है।

साहित्यिक शब्दकोष में दो शब्द मिलते हैं- योग और प्रयोग। प्रयोग के बिना योग व्यर्थ है। प्रयोग भी दो प्रकार के होते हैं- सत्प्रयोग और दुष्प्रयोग। प्रयोग की सम्यक् विधि के अभाव में दिव्य पदार्थ भी सामान्य बन जाते हैं। कहते हैं वर्णमाला के सभी स्वर और व्यंजनों में अमोघ शक्ति है। यदि कोई उन्हें व्यवस्थित रूप से संयोजन करके निष्ठापूर्वक जपने की विधि जानता हो तो वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर महामंत्र बन सकता है। सभी वनस्पतियों में अचिन्त्य शक्ति है। यदि उनका व्यवस्थित मिश्रण और परीक्षण किया जाए तो दिव्य औषधियाँ बनाई जा सकती है।

किसी भी वस्तु का सत्प्रयोग ही व्यक्ति को सुखी बनाता है। जीवन का योग मिल गया तो सब कुछ मिल गया, ऐसा मत समझो। जीवन का उतना ही मूल्य है जितना हम उसमें पैदा करेंगे। यदि हमारे पास स्वर्ण की ईंटें हैं तो उसका उपयोग उसे संभाल कर रखने में नहीं अपितु सही प्रयोग करने में है। उपयोग के अभाव में ईंट चाहे सोने की रखी हो या पत्थर की, इससे क्या फर्क पड़ता है। धन का मूल्य उसके उपयोग में है, पकड़ने में नहीं। धन जितना चले उतना उपयोगी होता है। इसलिए तो धन को Currency कहा जाता है। Currency का मतलब जो चलता रहे, बहता रहे, ऐसे ही हमारे जीवन को हम जितना संघ सेवा में लगाएँगे उतना ही स्वस्थ, मस्त, प्रसन्नचित्त रहेंगे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय बर्मा के एक जंगल में आदिवासियों के हाथ हवाई जहाज लग गया। अब आदिवासियों को यह ज्ञात ही नहीं था कि यह कोई हवाई जहाज है, वे तो बैलगाड़ी को ही जानते थे। अत: उन्होंने हवाई जहाज में बैल जोत लिए और नए ढ़ंग की बैलगाड़ी का इस्तेमाल करके वे बहुत प्रसन्न हुए।

कुछ दिनों के बाद एक शहरी आदमी जिसे हवाई जहाज का अनुभव नहीं था किन्तु उसने केवल बस एवं ट्रकों को ही देखा था; उसने आदिवासियों को समझाया कि इसमें बैल जोतने की जरूरत नहीं है। यह तो बस है। आदिवासियों ने कोशिश करके दो-चार दिन उस हवाई जहाज को बस की तरह चलाया। जब किसी बुद्धिमान ने बताया कि यह बस नहीं हवाई जहाज है, तब वह हवाई जहाज उड़ सका। हम सब भी उन आदिवासियों की तरह मनुष्य जन्म को बैलगाड़ी समझकर घसीट रहे हैं। बुद्ध पुरुष कहते हैं कि अनन्त सम्पदाओं के मालिक बनकर उस सम्पदा का समुचित उपयोग करना चाहिए। जीवन का जितना उपयोग विराटता में किया जाए उतना ही जीवन अर्थपूर्ण बन जाता है। अपना पेट तो पशु भी भर लेते हैं किन्तु मनुष्य वह है जो दूसरों की आवश्यकताओं का भी अनुभव करे, उन्हें अपनी आवश्यकताएँ माने और उनकी पूर्ति के लिए समय-समय पर जागृत रहे। प्रत्येक आत्मा को आत्मवत् अनुभव करना, सेवा और मानवता का बीज मंत्र है। मनुष्य की संवेदनशीलता, करुणा, उदारता और जरूरत पड़ने पर दूसरों के काम आ सकने, न्यौछावर तक हो जाने की क्षमता के कारण ही मनुष्य को महान कहा गया है।

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे।
मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रभु महावीर से जिज्ञासा व्यक्त की- **''वेयावच्चेणं भंते! जीवे किं जणयइ?''** अर्थात् हे भगवन्! सेवा करने से आत्मा को क्या प्राप्त होता है?

तब प्रभु ने इसका समाधान करते हुए कहा- **''वेयावच्चेणं तित्थयर नामगोत्तं कम्मं निबंधई''** अर्थात् सेवा से तीर्थंकर गोत्र का बंध होता है। सेवा से वह मिल जाता है जिसके बाद कुछ भी असंभव और अप्राप्य नहीं रह जाता। सेवा का अर्थ है किसी की पीड़ा को दूर करने में सहायक होना, किसी को खुशी देना। यह सब सेवा धर्म अपनाने से जितना दूसरों का भला होता है उससे कई गुना अधिक भला स्वयं का होता है, क्योंकि सेवा करने वाला दूसरों की नहीं अपितु स्वयं की सेवा कर रहा है। सेवा से पवित्रता, सहृदयता और सरलता की प्राप्ति होती है। सेवा करने वाले का हृदय विशाल और व्यक्तित्व महान होता है। उसकी दृष्टि अपने तक ही सीमित नहीं होती। उसकी संवेदनाएँ दूर-दूर तक जाती है। सेवा से अपना जीवन भी मधुर बनता है और दूसरों का भी। दूसरों की पीड़ा को जो अपनी पीड़ा समझता है वही सेवा कर सकता है।

नहीं वह जिन्दगी जिसे ज़हां नफरत से ठुकराए,
नहीं वह जिन्दगी जो मौत के कदमों पर झुक जाए।
नहीं वह जिन्दगी जो नाम पाती है भलाई में,
जिन्दगी तो वह है जो खुदी को छोड़कर
पहुँच जाती है खुदाई में।।

प्रत्येक आत्मा को आत्मवत् अनुभव करना सेवा और मानवता का बीज मंत्र है। जब तक जीवन-पुष्प में नि:स्वार्थ सेवा का पराग नहीं होगा तब तक यह जीवन-पुष्प मूल्यहीन, परागहीन और अनुपयोगी बना रहेगा।

जिन्दगी की रस्म है जीए जाईए,
गमजदा दिलों पर मरहम लगाईये।
दूसरों को जिलाने में फनाकर जिन्दगी,
जिन्दगी के बाग में जिन्दगी महकाईये।।

संस्कार सौरभ

संघ सेवा - अनमोल सेवा

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

धर्मपथ धर्मपथ

संघ हमारा अविचल मंगल,
नन्दनवन सा महक रहा।
हम सब इसके फूल व कलियाँ,
सुन्दरतम निज संघ अहा।।

संघ को नन्दनवन की उपमा से उपमित किया गया है। जिस तरह नन्दनवन अनेक तरह के सुन्दर, मनोहर, सुगंधित पुष्पों से सुशोभित है, उसी तरह यह संघरूपी नन्दनवन भी संघ के सभी सेवकों, कार्यकर्त्ताओं से सुशोभित है। नन्दनवन की शोभा, सुन्दरता को बढ़ाने में हर फूल व हर कली का योगदान रहता है तो संघ में भी सभी सेवकों, कार्यकर्त्ताओं का योगदान किसी न किसी रूप में अवश्य रहा हुआ है और उसी योगदान का परिणाम कि हमारा संघ आज प्रगति के उच्च से उच्चतर और उच्चतम शिखर की ओर प्रवर्द्धमान है।

संघ क्या है? संघ की परिभाषा क्या है? संघ को कैसे परिभाषित करें? यह समझना संघ सेवा के लिए आवश्यक है। समान विचारधारा को मानने वाले लोगों के समूह को संघ कहा गया है। हमारे संघ की विचारधारा आध्यात्मिक है, जिसमें स्व-पर कल्याण, परोपकार को प्रधानता दी गई है। अत: हमारा संघ मात्र संघ नहीं धर्म संघ है।

संघ को नन्दनवन के अलावा अन्य कई उपमाएँ दी गई हैं-

नगर, चक्र, रथ, पद्म, चन्द्र, रवि,
सागर, मेरू की उपमा।
सूत्र नन्दी में संघ गौरव की,
क्या कोई है कम महिमा।।

उक्त उपमाओं से स्पष्ट हो जाता है कि संघ की महिमा की पूर्ण व्याख्या करना बड़ा ही कठिन कार्य है। अत: संघ की महिमा को व्यक्त करने के लिए उपमाओं का सहारा लेना पड़ा। जिस संघ की गौरवगाथा को नन्दीसूत्र में स्थान दिया गया है, उसकी महिमा कितनी विराट होगी, विशाल होगी, व्यक्त कर पाना सहज नहीं है। ऐसे महिमामय संघ को पा लेना हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। अगर कहें कि बड़े ही पुण्योदय से ऐसा संघ हमें प्राप्त हुआ है तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नन्दनवन में खिल जाना हर पुष्प का सौभाग्य है।

ऐसा संघ तो हमें मिल गया है, लेकिन इसके प्रति हमारा क्या दायित्व बनता है? क्या कर्त्तव्य बनता है? संघ के प्रति हमारा कर्त्तव्य बनता है संघ सेवा का। संघ सेवा भी कैसे की जाए? सेवा होनी चाहिए नि:स्वार्थ भाव से। वैसे भी सेवा शब्द जहाँ आ जाता है वहाँ स्वार्थ टिकना भी नहीं चाहिए। सेवा के प्रतिफल की आकांक्षा भी नहीं होनी चाहिए। नि:स्वार्थ संघ सेवा में संगठन एवं समर्पण की आवश्यकता रहती है।

संघ की परिभाषा में ही स्पष्ट है कि संघ कई लोगों का समूह होता है। इन कई लोगों का एक साथ मिलकर कार्य करना ही संगठन है। दैनिक जीवन में कई काम ऐसे होते हैं जिन्हें अकेले कर पाना बड़ा मुश्किल या असंभव होता है, लेकिन कई व्यक्ति मिलकर प्रयास करते हैं तो वह काम सहज ही सम्पन्न हो जाता है।

एक सूत्र कोई भी तोड़े, रस्सी हस्ती को बाँधे।
एक एक मिल बना संघ यह, दु:संभव को भी साधे।।

सूत का एक धागा अकेला है तो उसकी शक्ति कितनी होगी? उसे कोई दुर्बल व्यक्ति भी तोड़ सकता है, लेकिन ऐसे कई धागे संगठित होकर एक रस्सी का रूप ले लें तो उस रस्सी को कोई तोड़ सकता है क्या? नहीं।

अब वे संगठित धागे रस्सी बनकर इतने मजबूत बन गए कि वे किसी सबल हाथी को भी बाँधने में सक्षम हो गए। यह कैसे संभव हुआ? उन धागों में इतनी शक्ति कहाँ से आ गई? धागे तो वही थे, लेकिन पहले संगठित नहीं होने से उनमें शक्ति नहीं थी और अब संगठन से शक्ति आ गई। यह शक्ति धागों की नहीं, संगठन की है।

संघ सेवा में भी इसी तरह संगठन की आवश्यकता एवं महत्त्व होता है। संघ को रथ की भी उपमा दी गई है। रथ, जो कई पहियों पर टिका होता है और उन्हीं के आधार पर गति करता है। पहिये का कार्य है रथ को गति देना। लेकिन सभी पहिये अगर एक दिशा में न चलकर अलग-अलग दिशा में चलेंगे तो रथ का क्या होगा? रथ आगे नहीं बढ़ पाएगा। आगे बढ़ना तो दूर रथ के अस्तित्व पर भी खतरा पैदा हो जाएगा?

संघ रथ है तो हम संघरूपी रथ के पहिये हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि सभी मिलकर संघहित में एकजुट हो संघ सेवा करें। रथ को आगे बढ़ाने के लिए सभी पहियों का एक ही दिशा में गतिशील रहना ही होगा। वैसे ही हमें भी सबको संघ को गतिशील, प्रगतिशील बनाने के लिए एक साथ, एक ही लक्ष्य के लिए कार्य करना होगा, सेवा करनी होगी। यही संघ के हित में होगा। सभी पहियों का एक ही दिशा में संघ हित के लिए गति करना, कार्य करना संघवाद है।

व्यक्तिवाद विद्वेष बढ़ाता, संघवाद दे प्रेम सदा।
व्यक्तिवाद को छोड़, समर्पण संघवाद में रहे सदा।।

व्यक्तिवाद यानी रथ के पहियों का अपनी-अपनी दिशा में चलना और संघवाद यानी सभी पहियों का संघहित में एक ही दिशा में चलना। संघ सेवा में व्यक्तिवाद अहितकर होता है। संघवाद की भावना सदा संघहित में रहती है। अत: हर संघ सेवक को व्यक्तिवाद त्यागकर संघवाद की भावना से संघ सेवा करनी चाहिए। संघवाद के लिए समर्पण की भी आवश्यकता रहती है।

समर्पणा कैसी होनी चाहिए? समर्पणा अर्थात् उसमें मिल जाना, रम जाना। समर्पणा में अपना अस्तित्व गौण करना होता है। स्वयं के अस्तित्व को गौण किये बिना समर्पणा कैसे प्रकट होगी? समर्पणा भी दो प्रकार की होती हैं- एक समर्पणा ऐसी होती है कि हम जिसके प्रति समर्पण कर रहे हैं, उसमें इस तरह घुलमिल जाए कि हम हमारा निजी अस्तित्व गौण कर उसका महत्त्व बढ़ा दें, यही सच्ची समर्पणा है।

दो अलग द्रव्य हैं- दूध और शक्कर। शक्कर दूध में घुलकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को गौण कर देती है। फिर दूध में शक्कर दिखाई तो नहीं देती, लेकिन उसका अहसास दूध की मिठास में हो जाता है। दूध में घुलकर शक्कर दूध की गुणवत्ता बढ़ा देती है, यह है सच्ची समर्पणा।

दूध में शक्कर की तरह नमक भी घुल सकता है, दूध के प्रति समर्पित हो सकता है, लेकिन उसकी समर्पणा दूध की गुणवत्ता को घटाने वाली समर्पणा है। कहने को तो शक्कर और नमक दोनों ही दूध में समर्पित हो जाते हैं, लेकिन शक्कर से दूध की गुणवत्ता बढ़ती है तो नमक से घटती है। हम भी शक्कर की तरह समर्पित होकर संघ सेवा करें, जिससे संघ की महिमा बढ़े।

संघ परम उपकारी, हमको संघ ने सम्यक्बोध दिया।
संघ ना होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया।।

संघ का हम पर उपकार है। संघ से हमें सम्यक्बोध मिला है। संघ ने हमको बहुत कुछ दिया है। संघ न होता तो हम क्या होते? एक तरह से संघ ने हमको गोद लिया तो हमें भी संघ के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली-भाँति समझकर संघ सेवा में तत्पर होना चाहिए।

यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झौंके जीवन, और न कुछ सूझे हमको।।

व्यक्तिवाद यानी रथ के पहियों का अपनी-अपनी दिशा में चलना और संघवाद यानी सभी पहियों का संघहित में एक ही दिशा में चलना। संघ सेवा में व्यक्तिवाद अहितकर होता है। संघवाद की भावना सदा संघहित में रहती है। अत: हर संघ सेवक को व्यक्तिवाद त्यागकर संघवाद की भावना से संघ सेवा करनी चाहिए। संघवाद के लिए समर्पण की भी आवश्यकता रहती है।

भक्ति रस

संघ हमेशा बड़ा रहेगा

-डॉ. दिलीप धींग, बंबोरा
शोध-प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शसुन जैन कॉलेज

संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।
संघ से जुड़ने वाला व्यक्ति, सदा धर्म से जुड़ा रहेगा।
और धर्म से जुड़ने वाला, सदा संघ से जुड़ा रहेगा।।

व्यक्ति से जुड़कर तो मित्रो, राग प्रबल हो उठता है।
पंथवाद गुरुवाद पनपता, तेज धर्म का घटता है।
धर्म बनेगा तेजस्वी तो संघ यशस्वी बना रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।1।।

संघ धर्म है, धर्म संघ है; दोनों इक-दूजे के पूरक।
सत्य ज्ञान के रक्षक दोनों, विग्रह-भावों के संहारक।
धर्म-संघ का भव्य भवन यह, सदा खड़ा था, खड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।2।।

जलकण सदा बदलते रहते, लेकिन निर्झर बहता रहता।
व्यक्ति आते-जाते रहते, संघ हमेशा कायम रहता।
अतः संघ बड़ा व्यक्ति से, गौरव इसका बड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।3।।

चार तीर्थ की जहाँ सुरक्षा, ज्ञान-ध्यान का हो विस्तार।
समता, त्याग, समर्पण, सेवा; निष्ठा, आपस में सहकार।
अनुशासन में बँधा संघ ही, श्रेष्ठजनों से जुड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।4।।

गुणधारी जयवन्त संघ का, सम्मान-सत्कार करते हैं।
हाथ जोड़कर शीश नमाकर, सदा नमस्कार करते हैं।
उपकारों से आलोकित मन, कृतज्ञता से भरा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।5।।

साक्षात्कार

जिस दिन विश्वास उठ जाएगा उस दिन विश्व भी नहीं रहेगा

नीमच में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामेश से साक्षात्कार

-विनोद जैन

मालवा मेवाड़ के संधि स्थल नीमच नगर का आध्यात्मिक वातावरण गौरवान्वित व प्रफुल्लित नजर आ रहा हैं। नीमच में देश की चारों दिशाओं से गुरुभक्तों का आवागमन प्रतिदिन हो रहा है। भिन्न-भिन्न भाव, भाषा व वेशभूषा का संगम यहाँ परिलक्षित हो रहा है। इस सदी के महान आचार्य परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. वर्षावास काल में नीमच (म.प्र.) में विराजित हैं। नगर का पुण्योदय ही कहा जा सकता है कि साधना के शिखर, अलौकिक महापुरुष, परमागम रहस्यज्ञाता, उत्कृष्ट संयम साधक गुरुदेव धर्मज्ञान की गंगा बहा रहे हैं। जैन स्थानक में हुआ आचार्य श्री रामेश का साक्षात्कार प्रस्तुत है-

प्रश्न- जातियों का निर्धारण किसने किया? क्या धर्मावतार जातियाँ बना गए थे?

गुरुदेव- भगवान ऋषभदेव के समय गुण-कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था का सूत्रपात हुआ था। संभवतया वंश के आधार पर जातियाँ बनी हैं।

प्रश्न- धर्म अगर इस दुनिया को स्वर्ग बना सकता है तो धर्म का अमलदार एशिया सदियों से जहन्नुम क्यों बना हुआ है? अगर धर्म इस दुनिया को स्वर्ग बना सकता है तो उसे इस दुनिया से परे क्यों बनाया?

गुरुदेव- धर्म जीवन को स्वर्ग बनाए या न बनाए, स्वर्ण अवश्य बना देता हैं। वर्तमान में धर्म गौण हो गया है। मजहब ने ही धर्म का चोला पहन लिया है। इसलिए धर्म की पहचान भ्रांत बन गई है। धर्म को क्षमा, मृदुता, सरलता, निर्लेपता, सत्य, संकल्प, संयम इत्यादि रूप में स्वीकार किया गया है। जहाँ ये तत्व रहेंगे, वहाँ स्वर्णमय जीवन होने में कोई संदेह नहीं रहेगा। जमीं पर भी एशिया, यूरोपादि भिन्न-भिन्न साम्राज्यों की स्थिति है, वैसे ही स्वर्ग की भी अपने स्थान पर अवस्थिति है। वहाँ भी भिन्नताएँ हैं।

प्रश्न- हर वो चमन जहाँ एकता, उन्नति और शांति के फूल खिलते हों, उसे स्वर्ग कहलाने का हक है। मगर धर्म की राह में बहा खून जमा किया जाए तो दुनिया के तमाम मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर उसमें डूब जाएँगे। क्या ये धर्म है?

गुरुदेव- स्वर्ग में भी संघर्ष है। स्वर्ग में भी अपराध होते हैं। उसमें रहते देव दण्डित भी होते हैं। अत: स्वर्ग को एकांत रूप से एकता, उन्नति व शांति के फूल खिलने जैसा नहीं माना जा सकता है।

स्वर्ग में सारे धर्मात्मा ही हो, ऐसा भी नहीं है। स्वर्ग में ऐसी अनेक आत्माएँ हैं, जो धर्म-कर्म को मानती भी नहीं हैं। उन्हें धर्म पर विश्वास ही नहीं है। धर्म पर बहाया गया खून न कभी धर्म था, न है। खून बहाने का अधिकांश कार्य धर्मान्धता से हुआ है। ऐसा कार्य मजहबी हो सकता है, धर्म से नहीं।

प्रश्न- जिंदा जा नहीं सकता, मरा हुआ बता नहीं सकता, तो फिर स्वर्ग-नरक की खोज किसने की? इनका निर्धारण कैसे हुआ?

गुरुदेव- भारत, अमेरिका आदि की जब तक खोज नहीं हुई थी, तब तक वे अज्ञात थे, किंतु उनका अस्तित्व नहीं था, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिन्होंने खोज की, उनके कथन पर दूसरों ने विश्वास भी किया। कुछेक ऐसे भी रहे होंगे, जिन्होंने विश्वास नहीं किया हो, पर किसी के विश्वास न करने से इनका अस्तित्व नहीं है, क्या ऐसा कहा जा सकता है? नहीं! स्वर्ग और नरक को सर्वज्ञों ने अपने ज्ञान में देखा है। उन्होंने जैसा देखा वैसे स्वरूप का कथन भी किया। उस पर विश्वास किया जाता है, किया भी जाना चाहिए। तत्व निर्णय में कसौटी ''शुद्ध पद प्ररूपणा'' को माना गया है अर्थात् जितने भी शुद्ध पद होते हैं, उनका वाच्य अवश्य होगा। स्वर्ग-नरक भी शुद्ध पद हैं। इसलिए इनका भी कोई वाच्य अवश्य होगा। इस न्याय से भी स्वर्ग-नरक की सिद्धि हो जाती है। विश्वस्त व्यक्ति के कथन पर विश्वास किया जाता है। सर्वज्ञ, सर्वरूपेण विश्वनीय हैं। अत: इनका कथन भी विश्वनीय है।

प्रश्न- आत्मा भारमुक्त होकर महाप्रयाण करता है तो अगले जन्म में कैसे कहा जाता है कि पिछले जन्म की पुण्यवानी है?

गुरुदेव- जो आत्मा मोक्ष जाती है, वह पूर्णरूपेण भारमुक्त होकर जाती है। संसारी आत्माएँ भी यदि भारमुक्त होकर जाए तो किस कारण से नया जन्म लेंगी? किस कारण से नया शरीर धारण करेंगी? नया शरीर प्राप्त करने का कोई न कोई कारण अवश्य होगा। जो कारण रूप हैं, वे ही पाप और पुण्य होते हैं।

प्रश्न- दुनिया में जब भी भगवान की चर्चा होती है तो हर कोई आसमान की तरफ अंगुली उठाकर कहता है- ईश्वर जाने! तो क्या भगवान ऊपर रहते हैं? देवलोक ऊपर है?

गुरुदेव- सिद्ध भगवान देवलोक से ऊपर हैं। उनका अवस्थान लोक के सर्व ऊपरी भाग में है।

प्रश्न- हर धर्म अनुयायियों को संत, महात्मा, महंत रोज उपदेश दे रहे हैं, धर्म-नीति, पाप-पुण्य समझा रहे हैं। सुनने वाले पर असर क्यों नहीं हो रहा है? क्यों आदमी उतना ही बेईमान, धोखेबाज, विश्वासघाती बना हुआ है?

गुरुदेव- यह कथन एकांत तथाभूत नहीं हैं। अनेक लोग नैतिकता के पक्ष में होते हैं। विश्व में कितने भी विश्वासघाती लोग हुए होंगे, पर उन विश्वासघातियों की हरकतों से विश्व में विश्वास उठ नहीं गया। विश्वास का खात्मा नहीं हुआ है। विश्वास कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा। जिस दिन विश्वास उठ जाएगा, उस दिन विश्व भी नहीं रह पाएगा। विश्वास के आधार पर ही विश्वासघात होता है। सत्य के आधार पर असत्य टिका हुआ है। ईमान न हो तो बेईमान का कभी अस्तित्व होगा ही नहीं। जो सत्य, ईमान, विश्वास आदि इतने आघातों के बावजूद बचे हुए हैं, वे एकमात्र धर्मोपदेश के कारण से बचे हैं।

प्रश्न- पाँचवें आरे में कोई आत्मा मोक्ष नहीं जाएगी, फिर उपदेश में मोक्ष मिलने की बात किस आधार पर कही जाती है?

गुरुदेव- यदि नीमच में आई.आई.टी. की कोई कॉलेज न हो तो क्या नीमच का कोई व्यक्ति वह ज्ञान प्राप्त कर ही नहीं पाएगा, ऐसा माना जाए? नहीं, ऐसा नहीं माना जाता। नीमच का विद्यार्थी नीमच में जितना पढ़ सकता है, उतना नीमच में पढ़ेगा और उसके आगे का ज्ञान अन्य स्थान पर जाकर प्राप्त करेगा। वैसे ही पंचम आरे में व्यक्ति इतनी आराधना कर सकता है कि दूसरा मनुष्य भव पाकर सिद्ध हो सकता है। अत: उसे उतनी तैयारी करने को उत्साहित करना उचित ही है।

प्रश्न- अन्नपूर्वी में नवकार मंत्र के पद आगे-पीछे क्यों दिए गए हैं? क्रमानुसार क्यों नहीं?

गुरुदेव- आनुपूर्वी नाम शुद्ध है। आनुपूर्वी का तात्पर्य ही होता है, अनुक्रम से नहीं होना।

प्रश्न- चौबीस तीर्थंकर हैं, पर अमृत प्रवचनों में दो-चार तीर्थंकरों के ही गुण गाए जाते हैं। अन्य तीर्थंकरों का जीवन नहीं सुनाया जाता कि उन्हें मोक्ष कैसे मिला? बाद में बने तीर्थंकर अपने से पूर्व में हुए तीर्थंकरों की उपासना आराधना नहीं करते थे क्या? जैसे महावीर स्वामी प्रभु पार्श्वनाथ जी की आराधना करते थे क्या?

गुरुदेव- जो निकट के उपकारी होते हैं, उनका कथन स्वाभाविक रूप से अधिक होता है। सभी तीर्थंकरों ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना से मोक्ष पाया। सभी तीर्थंकर ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करते हैं। तीर्थंकरों ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया ही नहीं, उन्होंने गुण ग्रहण का लक्ष्य रखा व उसका ही उपदेश दिया। अत: कोई भी तीर्थंकर अपने से पूर्व के तीर्थंकर की उपासना-आराधना नहीं करते, अपितु पूर्व तीर्थंकरों ने जिन तीन रत्नों- ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना की, वे भी उन्हीं तीन रत्नों की आराधना करते हैं।

-207, विकास नगर (14/2), निरोग धाम के पीछे, नीमच (म.प्र.)

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

विचारशक्ति का सदुपयोग करना चाहिए, उसे व्यर्थ बातों में नष्ट नहीं करना चाहिए। यह एक ऐसा शस्त्र है जिसके सदुपयोग से स्व-पर की रक्षा और दुरुपयोग से स्व-पर का नाश होता है। अगर इनसान यह सोचता है कि मेरी उन्नति में अमुक व्यक्ति बाधक है, उसको कैसे हटाऊँ या उसको कैसे दु:ख और आपत्ति में गिराऊँ तो वह अपनी विचारशक्ति का दुरुपयोग करता है। विचारशक्ति का सदुपयोग करने वाला सोचता है कि मुझे आपत्ति में डालने वाला कोई नहीं है। जो मेरी उन्नति में बाधक दिखता है, वह बाधक नहीं, सहयोगी है। वह चारों ओर से विचारों को केन्द्रित कर सत्य के मार्ग में गति और कर्त्तव्य को देखता है। ''अगर मेरी गति एवं कर्त्तव्य निरन्तर रूप से जारी है तो विश्व का कोई भी पदार्थ मुझे रोक नहीं सकता'' ऐसा सोचना विचारों का सदुपयोग है।

साभार- नानेशवाणी-40

युग निर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व अत्यन्त धर्मोल्लास के साथ सम्पन्न

देश-विदेश से उमड़ रहे श्रद्धालु

साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. के 45 उपवास एवं साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. व साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण, श्री गगन मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. मासखमण तप की ओर अग्रसर

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच (म.प्र.)।

नीमच साधना महोत्सव में छाई है बहार।
जन-जन पा रहा अध्यात्म का अनुपम उपहार।।

युग निर्माता, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रान्ति प्रदाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि ठाणा-45 के साधना महोत्सव चातुर्मास में अपूर्व धर्माराधना, ज्ञान आराधना, दर्शन आराधना, चारित्र आराधना, तपाराधना का ठाठ लगा हुआ है। जैन-जैनेतर सभी जन महापुरुषों के पावन सान्निध्य का लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य बना रहे हैं।

महापुरुषों द्वारा जीवन परिवर्तनकारी प्रवचन माला से नित नयी प्रेरणा व ऊर्जा प्रदान की जा रही है। तत्त्वज्ञान शिविर व कक्षाओं के माध्यम से धर्म का सच्चा बोध सभी को प्राप्त हो रहा है। द्वय महापुरुषों की कृपा से श्री गगन मुनि जी म.सा. अपने दूसरे मासखमण तप की ओर अग्रसर हैं। वहीं साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. 6 उपवास, साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा. 45 उपवास, साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. व साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. ने मासखमण तप करके शासन का गौरव बढ़ाया है। अन्य कई चारित्रात्माओं के एकान्तर एवं एकासन तप आदि चल रहे

पर्युषण महान है,
करना निज उत्थान है
-आचार्य श्री रामेश

आपसी संवाद के अभाव में कई
भ्रान्तियाँ जन्म लेती हैं
-उपाध्याय प्रवर

हैं। श्रावक-श्राविकाओं में कई गुप्त तपस्याएँ जारी हैं। **'लोच में क्या सोच'** कार्यक्रम के अन्तर्गत 265 गुरुभक्तों ने कायाक्लेश तप की आराधना की। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में धर्माराधना की होड़ लगी हुई है। नन्हे-मुन्ने बच्चे भी पूर्ण श्रद्धाभाव से एकासन, बियासन, उपवास आदि करके धर्म संस्कारों को दृढ़ीभूत कर रहे हैं। देश-विदेश से श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिनों का ताँता लगा हुआ है।

आचार्य भगवन् के आगामी होली चातुर्मास एवं अन्य विभिन्न प्रसंगों सहित वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों से विनतियाँ गुरुचरणों में समर्पित हो रही हैं। नीमच में साधना महोत्सव चातुर्मास में धर्म की विशेष अलख गतिमान है।

गर्भपात नहीं करने का संकल्प

16 अगस्त 2023। प्रात:कालीन शुभ मंगल बेला में **''सिद्ध अरिहंत को मन में रमाते चलो''** प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित हुए। धर्म तत्त्वबोध की जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दी। पर्युषण पर्व के तृतीय दिवस के उपलक्ष में प्रात: से ही हजारों कदम प्रवचन स्थल राठौर परिसर की ओर अग्रसर हो रहे थे। यहाँ आयोजित विशाल धर्मसभा में आगन्तुक गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''माँ का हृदय कोमल होता है, उसमें वात्सल्य भाव भरा होता है। माता के मन में सन्तान के जन्म के साथ ही मातृत्व भाव का जन्म होता है। माता की दिनचर्या का सन्तान पर प्रभाव पड़ता है। माता अन्जना जैसी होगी तो हनुमान जैसे पुत्र प्राप्त होंगे। देवकी रानी सन्तान बिना बिलखती रही। सात पुत्रों को जन्म देने के बाद भी न पुत्रों का लालन-पालन किया, ना कभी दुलार किया। श्रीकृष्ण अपनी माँ के दर्द को समझकर यथा अवसर उपाय करते थे।''**

आचार्य भगवन् ने माता-पिता और गुरु को तीर्थ निरूपित करते हुए जैन समाज में बढ़ रहे गर्भपात जैसे घृणित कृत्य पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए फरमाया कि **''आज हर घर कत्लखाना बन गया है। इससे मानवता कहाँ बचेगी? धरती कहाँ टिकेगी? माँ की ममता आज सूख गई है। बोलो मित्रो! किसने जैन धर्म को बदनाम किया? जैनी होकर जैन धर्म का हमने कितना नाम रोशन किया?''** सभा में उपस्थित हजारों भाई-बहिनों ने गर्भपात त्याग व ऐसे कार्यों में सहयोग नहीं करने का संकल्प आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किया।

आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में गीतिका **''आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में''** के साथ गौरवशाली आचार्यों की गौरवगाथा प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''गुरु बनाए नहीं जाते, गुरु स्वयं बन जाते हैं। आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. रामपुरा पधारे। वहाँ के एक श्रावक, जो 32 शास्त्रों के ज्ञाता थे, उनके घर पहुँच कर निवेदन किया कि मुझे शास्त्रों का ज्ञान प्रदान करें। व्यक्ति का मन ज्ञान ग्रहण करने हेतु आतुर होना चाहिए। श्रावक जी ने कहा- मुझे अवसर नहीं है। गुरुदेव लगातार सात दिन तक उन श्रावक जी के घर इस हेतु जाते रहे तो श्रावक जी ने छ: दिन तक तो मना कर दिया, लेकिन**

सातवें दिन वे श्रावक जी गुरुदेव के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे कि मैंने आपके जैसा संत नहीं देखा। मेरे पास शब्द हैं और आपके पास जीवन है। आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. की साधना गजब की थी। आपने अपने पाट पर श्री चौथमल जी म.सा. को बैठाया।''

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने गीत **''जीवन के जौहरी हम स्वयं बनें''** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि अनादिकाल से हमारी आत्मा मलिन बनी हुई है। आज हमारा खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, जीवनशैली आदि विकृत हो गये हैं। महापुरुषों के सान्निध्य में हम जीवन में निर्मलता, पवित्रता को आगे बढ़ाएँ।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र स्कंध के मूल अर्थ का सुन्दर विवेचन करते हुए गजसुकुमाल मुनि के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **''मेरे राम जिन नहीं पर जिन सरीखे हैं''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। वीर माता चन्दादेवी भूरा, सूरत/देशनोक एवं परम गुरुभक्त गौतम जी सोनावत, मनेन्द्रगढ़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया।

संघ के नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र जी गाँधी-जावद ने लोच करवाकर कायक्लेश तप किया। दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि में सैद्धान्तिक धारणा की जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रदान की। अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप निरन्तर जारी रहा। पक्खी पर्व की आराधना में भाई-बहिन धर्म क्रिया में लीन रहे। प्रतिक्रमण एवं संवर में लोगों का अपूर्व उत्साह रहा।

संयम मार्ग कायरों का नहीं, वीरों का है

17 अगस्त 2023। मंगलमय प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी व धर्म तत्त्व की जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रदान की। तत्पश्चात् विशाल धर्मसभा को धर्म रस से पान करवाते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''धर्म श्रद्धा को कठिन समय में भी मजबूत बनाए रखना चाहिए। हमारी श्रद्धा विचलित न हो। संशय आत्मा का विनाश करने वाला है। संयम कायरों का नहीं अपितु वीरों का मार्ग है। वीर पुरुष ही संयम में आगे आते हैं। कायरों का कलेजा कम्पायमान रहता है। न तो उनमें हिम्मत होती है और ना ही वे संयम रूपी हिमालय पर चढ़ने का साहस कर पाते हैं। साधु बनने के लिए मन मजबूत होना चाहिए। पुण्य होगा तभी भाव जगेंगे। हमारी शक्ति की पहचान हमें नहीं है। मनुष्य जन्म आनंद का स्रोत है। मनुष्य जीवन में अपूर्व अवसर है। 'धन्य होगा वह दिन जब साधु जीवन स्वीकार करूँगा'। गजसुकुमाल की तरह समभाव को धारण करें। आधे-अधूरे मन से कार्य करने वाला कभी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि **''गुरु का जीवन जीने के लिए है। हमारा कहना व सुनना जीवन बने। आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. अपने जीवन के अन्तिम 15 वर्ष रतलाम में विराजे। तत्पश्चात् श्री चौथमल जी म.सा. आचार्य पद पर विराजे। आपश्री जी ने 3 वर्ष आचार्य पद पर रहते हुए 32**

भव्यात्माओं को दीक्षा दी और कष्ट सहते हुए आत्मिक शक्ति को जागृत रखा। आपश्री सिद्धान्तवादी थे। आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. के पश्चात् श्री श्रीलाल जी म.सा. आचार्य पद पर विराजमान हुए। आपश्री जी ब्रह्मचर्य की मिसाल थे। ब्रह्मचर्य दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. की शादी छोटी उम्र में हो गई थी, पर गुरु महाराज के प्रवचन सुनकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत संकल्प ले लिया। इन्द्रियों को वश में करना अतिदुष्कर कार्य है। आपश्री जी 31 वर्ष की आयु में आचार्य बने एवं आचार्यत्व काल में 157 संतों को संयम की राह पर आरूढ़ किया। आपश्री जी फरमाते थे कि जिस दिन मेरा नित्य नियम न हो, समझना वह दिन मेरा आखिरी दिन है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र के मूल अर्थ का सुन्दर विवेचन करते हुए फरमाया कि अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में हमें गजसुकुमाल की तरह समभाव रखना चाहिए। साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें पर्युषण पर्व पर आराध्यदेव का सान्निध्य मिल रहा है। महापुरुषों की कृपादृष्टि से जीवन संवर जाता है। ''**हमें तार देना, भवसागर से हमें तार देना**'' सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर हमें नित नये आयामों के माध्यम से ज्ञान प्रदान कर रहे हैं। आत्म-जागरण की दिशा में हमें आगे बढ़ना है।

साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने ''**गाड़ी हकने वाली है, राम गुरु थाँने हेलो लगावे**'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सम्पूर्ण माहौल राममय बना दिया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

नशा, नाश का द्वार

18 अगस्त 2023। गुरुभक्ति से परिपूर्ण प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् प्रतिदिन की भाँति तत्त्वज्ञान कक्षा में नवयुवकों व श्रावक-श्राविकाओं को धर्मबोध कराया गया। पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हमने धर्म-श्रद्धा पर बहुत कुछ सुन लिया है और सुन रहे हैं। सुनना एक बात है और कठिन क्षणों में अपने आपको श्रद्धानिष्ठ बनाए रखना दूसरी बात है। जब तक कोई विपत्ति नहीं आती तब तक हमारी धर्म-श्रद्धा बनी रहती है किन्तु कठिनाई के समय हमारी धर्म-श्रद्धा विचलित न हो। तब हम समझ सकते हैं कि हमारी धर्म-श्रद्धा कितनी दृढ़ है। अपने आप पर विश्वास होना, अपनी पहचान होना कि मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ। इस पर गहरी श्रद्धा हो जाए तो धर्म से आत्मबोध जागृत होता है। पर्व पर्युषण आत्मविश्वास को जागृत करने वाले हैं। अन्तकृद्दशांग सूत्र में आज के प्रसंग से दो बातें सामने आई- 1. करें धर्म दलाली, 2. द्वारिका का विनाश। सोने की नगरी द्वारिका का निर्माण स्वयं देवों ने किया। इसके विनाश का कारण शराब को बताया गया। साथ ही अग्नि और द्वैपायन ऋषि निमित्त बने। आज शराब का बोलबाला बढ़ गया है। शहर हो या गाँव सबसे पहले शराब की दुकान के दर्शन होंगे। कितना बिगाड़ दिया है इस शराब ने! घरों की दुर्दशा हो रही है। ऊँचे लोगों की ऊँची पसन्द शराब, गुटका आदि भ्रष्ट चीजें हैं। नशा बिगाड़े जीवन की दशा। नशा नाश का द्वार है। नशा अपराध की जड़ है। पान पराग, गुटखा, तम्बाकु, बीड़ी, सिगरेट आदि नशे की लत बहुत ही बुरी होती है। भयंकर बीमारियाँ हो जाती हैं और ये नशीले पदार्थ मांसपेशियों को शिथिल कर देते हैं। नशे से तन-मन-धन की बर्बादी होती है। अन्तकृद्दशांग सूत्र में उल्लेख है कि जालि-मयालि एवं कई छोटे-छोटे राजकुमार आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ गये। श्रीकृष्ण ने घोषणा कर दी कि जो भी दीक्षा लेना चाहे उनके पीछे उनके परिजनों की सार-सम्हाल, उनकी आजीविका आदि की सारी व्यवस्था करने के लिए हम तैयार हैं। इस उद्घोष को**

सुनकर बहुत-से लोग दीक्षित हुए। इस प्रकार धर्मदलाली कर उन्होंने तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लिया। हमें भी मनुष्य जन्म मिला है, जिनेश्वर देव का धर्म मिला है, इस मौके का लाभ उठा लें। यह अपूर्व अवसर फिर कब मिलेगा? वर्तमान को सुधार लिया तो भविष्य सुधर जाएगा। दीक्षा आप भी लीजिये और औरों को भी दिलाइये।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''हमारे आचार्यों का जीवन उत्तम उपदेश है। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. के पश्चात् साधुमार्ग की पावन परम्परा में थांदला में जन्मे श्री जवाहरलाल जी म.सा. पाट पर विराजे। आप जब 2 वर्ष के थे तब माता जी एवं 5 वर्ष के थे तब पिता जी एवं फिर मामा जी क्रमशः कालधर्म को प्राप्त हो गये। मामा के देहान्त के बाद आपका मन उद्वेलित हो गया। आपने संकल्प ले लिया कि मुझे संसार का त्याग करना है। अनिर्णय अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है। एक तरफ जिम्मेदारी का बोझ व एक तरफ संयम के भाव। अगर मन पक्का हो जाए तो सारे कार्यों की क्षमता आ जाती है। संयम की सुरक्षा संयम है। संयम लेने के पश्चात् यथासमय आप आचार्य बने। कृषि महाआरम्भ की शंका को दूर करने सहित अन्य अनेक कठोर निर्णय लेना आपकी प्रकृति रही। आपके सान्निध्य में श्रमण संघ का निर्माण हुआ। श्री जवाहर किरणावली आपकी अनमोल देन है।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र का वाचन करते हुए फरमाया कि दीक्षा यानी संयम जीवन के लिए अगर घर-परिवार से कोई अग्रसर हो तो अन्तराय नहीं देना चाहिए। साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा. ने **''आया है धर्म का जोश, जोश को कायम रखो''** गीत प्रस्तुत कर फरमाया कि जीवन तो चारों गतियों के प्राणी भी निर्वाह कर रहे हैं, लेकिन हमें देव, गुरु, धर्म की कृपा से जीवन की दिशा को निर्वाण की ओर बढ़ाना है।

साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. ने **''योग मेरे सारे तेरे अनुसार हो''** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संयम का सुख निराला है, जो हमें शान्ति व समाधि देने वाला है। मनुष्य जन्म व जिनवाणी श्रवण का पराक्रम बहुत दुर्लभ है। साध्वी श्री निर्ग्रन्थ श्री जी म.सा. ने फरमाया कि सभी चाहते हैं कि हम आत्मा का विकास करें। इसके लिए हमें पुरुषार्थ करना होगा। आसक्ति को कम करना होगा। अनेक भाई-बहिनों ने दीक्षा में अन्तराय नहीं देने का संकल्प लिया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सूझता-असूझता की जानकारी दी। विभिन्न ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम हुए। अखण्ड नवकार महामंत्र जाप में सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

मान, बड़ाई, ईर्ष्या को छोड़ना बहुत कठिन

19 अगस्त 2023। प्रातःकालीन दैनिक धार्मिक कार्यक्रमों के क्रम में राठौर परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''यह पर्व पर्युषण मंगलकारी, जयकारी है। उत्तम पुरुषों के जीवन सुनते हैं तो अध्यवसाय निर्मल बनते हैं, पाप गलते हैं। सुदर्शन भगवान महावीर के दर्शन करने को चले, तो लोग क्या बोल रहे थे? कुछ भी बोल रहे थे, पर सुदर्शन की धर्म-श्रद्धा गहरी थी। अर्जुन माली को आते देखकर भयभीत नहीं हुए। सरल स्पष्ट जीवन निर्भयता का सूचक है। जिसने अभय साधना कर ली उसके पास भय कैसे आएगा! धर्म रक्षा का मतलब है अपने मन को पवित्र बनाए रखना। मन को दूषित होने से बचाना। फालतू की बातों से मन दूषित होता है। मन को शान्त बनाए रखना धर्म है। मन समाधि में बना रहे, ये धर्म का परिणाम है, ये धर्म की रक्षा है। भाव जितना पवित्र, निर्मल होता है उतनी लेश्या विशुद्ध होती है। जिसकी भावना जितनी निर्मल होगी, उनका उतना ही सशक्त आभामण्डल होता है। ये सुरक्षा का घेरा है। सेठ सुदर्शन को भय**

नहीं, तनाव नहीं, वे शान्त मुद्रा में भगवान को नमस्कार कर बैठ गए। परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ लिया। यक्ष भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं कर सका। सात्विकता के सामने तामसिक वृत्ति टिक नहीं पाती है। मन विचलित होने का कारण मेरे भीतर की कमजोरी है। सत्यतापूर्ण जीवन जीने वाले अडोल, अभय, अकम्प रहेगा। कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता उनका। मन के प्रतिकूल जब कोई बात हो जाए तो मन को कठोर व स्थिर रखना कठिन है। मान, बड़ाई, ईर्ष्या को छोड़ना बहुत बड़ी बात है। लघुता से प्रभुता मिलती है। छल, कपट वाले को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने गीत **''आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे, चमके देश में''** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''गुरु की स्तुति स्वयं के भीतर गुणों के विकास के लिए है। महान गुण का दर्शन हमारे भीतर महान गुणों को प्रकट करता है। आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. संयम के सजग प्रहरी थे। उन्हें अनुशासन बहुत प्रिय था। 1100 से अधिक साधु-साध्वियों का नेतृत्त्व छोड़कर शुद्धाचार व अनुशासन की क्रान्ति का बिगुल बजाया। संयम विरुद्ध कार्य एवं शिथिलता उन्हें पसन्द नहीं थी। उन्हें संख्या से नहीं, संयम से प्यार था।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र के मूल अर्थ का विवेचन प्रस्तुत कर फरमाया कि अर्जुन माली कर्म से शूरवीर थे तो धर्म में भी शूरवीर थे। साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा. ने फरमाया कि शुभ कार्य को कल पर न छोड़ें। सारी इच्छाएँ ही धरी रह जाएगी। साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. ने **''आगम की वाणी को सुनकर मेरी श्रद्धा बढ़े दिन-रात''** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि यह संसार दु:खों से भरा हुआ है। आचार्य भगवन् इस संसार सागर से सभी को निकालना चाहते हैं। नहीं तो छठा आरा आपके सामने विकराल रूप में खड़ा है।

साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा. ने **''मांगा है मैंने गुरुवर से वरदान एक ही''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमारी श्रद्धा व समर्पणा मजबूत होनी चाहिए। गुरु ही ऐसी शरण है, जहाँ शरण प्राप्त करने के बाद किसी अन्य शरण की आवश्यकता नहीं रहती।

24 घण्टे अखण्ड नवकार महामंत्र जाप निरन्तर जारी है। गृहस्थ जीवन में विवेक पर श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया। धर्मपाल क्षेत्र गुराड़िया एवं सिरीवाल क्षेत्र लक्ष्मीपुरा के गुरुभक्तों सहित देश के अनेक क्षेत्रों से धर्मप्रेमियों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। रात्रि में भी नवयुवकों ने ज्ञानचर्चा में अपूर्व उत्साह से भाग लिया। आर.एस.एस. के प्रचारक श्रीकान्त जी ने उभय गुरु-भगवन्तों के पावन दर्शन कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

स्वयं की खोज करो

पर्युषण महान है, करना निज उत्थान है

20 अगस्त 2023। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम **''रविवारीय समता शाखा''** में आबाल-वृद्धजनों की उपस्थिति देखते ही बनती है। धर्म तत्त्वबोध कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ज्ञान प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

गीत की पंक्तियों के उच्चारण के साथ फरमाया कि **''पर्युषण पर्व अब किनारे पर आ गए हैं। पर्युषण महान है, करना निज उत्थान है। स्वयं की खोज करो और अपने आपसे स्वयं को जोड़ो। धर्म तोड़ता है या जोड़ता है?**

धर्म तोड़ता भी है और जोड़ता भी है। धर्म से कर्म डरते हैं और आत्मा का संधान होता है। एवंता कुमार बचपन में ही गौतम गणधर के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गए और निश्चय किया कि अब खिलौनों से नहीं संयम के रंग से खेलना है। पहली बार भगवान की देशना सुनी और पहली बार में ही विचार बन गया कि मुझे साधु बनना है। समझदार व्यक्ति अपने आपको समझ लेता है और अपना निर्णय स्वयं करने में समर्थ हो जाता है। मुझे कब मरना है यह पता नहीं है। जीव अपने कर्मों के अनुसार परभव की यात्रा करता है। कर्मों से ही यह निर्धारित होता है कि जीव किस गति में जाएगा। जो कार्य मनुष्य भव में हो सकता है, वह कार्य देव भव में भी होना मुश्किल है। फिर नरक व तिर्यंच की बात ही क्या है? अभी अवसर का लाभ नहीं उठा पाए तो फिर अवसर कब मिलेगा? धर्माराधना के लिए सरलता बहुत जरूरी है। सरलता, क्षमा आ जाने पर परिणाम देखने को मिलेगा। सदाबहार प्रसन्नता रहनी चाहिए। उत्तम पुरुषों के जीवन से हम भी प्रेरणा लें।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने ओजस्वी प्रवचन में उपस्थित गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि **''गुरु का पढ़ना, सुनना इतना प्रभाव नहीं डालता जितना देखना प्रभाव डालता है। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के जीवन से प्रेरणा लें। आचार्यदेव मन से दृढ़ थे तो उनके वचनों में बहुत ही कोमलता थी। आचार्य श्री नानेश का जीवन गुणों का गुलदस्ता था। वे सभी के प्रेरणास्रोत थे।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र का सुन्दर विवेचन करते हुए अतिमुक्तक कुमार के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला। जिसका जन्म हुआ है उसका मरण निश्चित है। कब, किसकी, कहाँ मौत आ जाए कोई पता नहीं। जीव अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न गतियों में जाता है।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अज्ञानी जीव जन्म-मरण कर संसार में भटकते फिरते हैं। जो अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म में लीन रहते हैं, वे अपनी जीवन नैया पार लगाते हैं। इच्छाओं का निरोध तप है। हम प्रिय वस्तुओं का त्याग करें, सदैव सकारात्मक सोच रखें एवं नकारात्मक सोच से बचें।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर चतुर्विध संघ को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप का निरन्तर विकास कर रहे हैं। साथ ही सोई हुई चेतना को जागृत कर रहे हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या मोक्ष का मार्ग है, लेकिन आज के नवयुवक खाने-पीने के चक्कर में कहाँ-कहाँ पहुँच रहे हैं, कोई पता नहीं। साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. ने अपूर्व आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण की तपस्या कर रामेश शासन का गौरव बढ़ाया है।

साध्वी श्री दीप्ति श्री जी म.सा. ने **''निर्मल जल सा मन है जिनका''** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आम से विशिष्ट बनना है तो चिन्तन करना होगा कि मैंने आज तक क्या कार्य सार्थक किया और क्या निरर्थक किया? क्या-क्या कार्य शेष रह गए हैं और मैं क्या करने में समर्थ हूँ।

साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हम कम्फर्ट जोन में रहते हैं। जो जैसा चल रहा है वैसा ही चलने दें। हम अलग हटकर चलना नहीं चाहते, लेकिन विकास करना है तो अलग हटकर काम करना होगा। जो स्वयं निर्णय करने में सक्षम है वह विकास कर सकेगा। महापुरुषों से जो हमने पाया है उसे अंतर्हृदय में उतारना होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने तपस्या गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. अब तक 51 उपवास, 36, 34, 32, 31 चार बार 30 दो बार एवं वर्द्धमान ओली तप आदि कई तपस्याओं से जीवन सजा चुके हैं। वर्तमान में आपके बेला-बेला तप चल रहा है। साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा.,

साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा., साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **''मासखमण की है ये तपस्या, साता सभी मिल पूछें''** एवं साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''सुनो यह गुरुवर ज्ञान के दिवाकर हैं''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा. के मासखमण तप के उपलक्ष में विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। अनेक चारित्रात्माओं सहित कई श्रावक-श्राविकाओं के तपस्याएँ गतिमान हैं। वीर दादा लाभचन्द जी डांगी के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया। शाकाहार और जीवदया व व्यसनमुक्ति अभियान से प्रेरित होकर कसाई का धन्धा बन्द करने वाले मोहम्मद सलीम भाई, पिपलियाकलां के सुपुत्र रफीक भाई ने आज मांसाहार त्याग का संकल्प लिया। विकास सेन एवं जोगराज जी ने आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। पिपलियाकलां से पंकज जी शाह, रफीक भाई एवं पुष्पेन्द्र भाई आदि ने आचार्य भगवन् का वर्ष 2024 का चातुर्मास पिपलियाकलां हेतु प्रदान करने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने पौषध आदि की जानकारी दी।

भूलों को भूलकर ईर्ष्या व अहंकार को छोड़ें

1100 पौषध, संवर, 151 अठाई, सैंकड़ों तेले एवं उपवास, एकासन हुए

आठ दिन तक अखण्ड नवकार महामंत्र जाप

सबसे अच्छा है संवत्सरी पर्व, क्षमा का है द्वार।
क्षमा से बन्द होते हैं, राग-द्वेष के द्वार।।
भगवान महावीर ने किया हम पर बड़ा उपकार।
क्षमा से मिलता है शाश्वत मोक्ष का उपहार।।

21 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में पंचपरमेष्ठी का गुणगान करने के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वबोध प्रदान किया। आज के पावन प्रसंग पर आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''राग खतरनाक होता है किन्तु द्वेष उससे भी अधिक खतरनाक होता है। द्वेष के दो तत्त्व हैं- ईर्ष्या व अहंकार। 'देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ'। ईर्ष्या की पहचान है कि व्यक्ति दूसरों का उत्थान स्वीकार नहीं कर पाता है। अहंकार की पहचान है कि मन में ये भाव सदा बने रहते हैं कि सब तरफ मेरा ही मेरा बोलबाला हो। लोग मेरी ही तरफ आकर्षित हों। आज के दिन हम संकीर्णता की दीवारों को भेद देवें। अहंकार व ईर्ष्या दोनों मेरे हृदय से निकल जाएँ। ये निकल गई तो हृदय गुणों से लबालब भर जाएगा। एक छोटा-सा अहंकार बाहुबली के केवलज्ञान में बाधक बन गया था। अहंकार जितना सशक्त होगा, पतन उतना ही अधिक होगा। हमारा मन गुणपरक दृष्टि वाला होना चाहिए। गुणपरक दृष्टि होगी तो गुण आएँगे। दुर्गुणों पर दृष्टि होगी तो दुर्गुण देखते जाएँगे। गुणपरक दृष्टि बनाए रखने के लिए पर्व पर्युषण की आराधना होती है। यह पर्व शिक्षा देता है कि भूलों को भूलो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे कोई भूल न हुई हो।**

आओ-आओ खमा लें, आज संवत्सरी आई सा।
हल्का कर लें बोझ सब, आज संवत्सरी आई सा।।

भार को नहीं छोड़ पाए तो जन्म-जन्मांतरों में चले जाएँगे। इस बोझ के कारण कितना नीचे गिरेंगे पता नहीं है। यदि नरक में चले गए तो पता नहीं क्या दशा होगी। पशु योनि में चले गए तो बेरहमी से मारे जाएँगे। मन से आराधना करेंगे तो लाभ मिलेगा। ये पर्व का मौका बोझ हल्का करने के लिए मिला है। एकदम साफ कर देना है। यह जिन्दगी मन में भार ढोने का लिए नहीं, आनन्द के लिए है। किसी भी आत्मा को कुछ भी कठोर कहा गया हो, असाता पहुँचाई हो तो उनसे मन-वचन-काया से क्षमायाचना करते हैं। हमारे निमित्त किसी का भी दिल दुखा हो तो सरल भाव से क्षमायाचना करें।

सिद्ध-अरिहन्त भगवान, आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा. से लेकर आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. सभी से क्षमायाचना करते हैं।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''गुरु सामने हैं, आँखों में हैं, हृदय में हैं। हम जिन्हें देख रहे हैं वे भी गुरु हैं, जिन्हें नहीं देखा उन आठों पूर्वाचार्यों के दर्शन हम राम गुरु में करते हैं। राम गुरु का जीवन शुरू से ही दृढ़निश्चयी रहा और आप सत्य का अनुसरण करते रहे हैं। सत्य के मार्ग पर चलना कठिन है, पर राम गुरु उस राह पर गतिमान हैं। आपश्री के जीवन में अचानक का बहुत बड़ा संबंध है। बिना भूमिका के अचानक बड़े-बड़े निर्णय ले लेते हैं।''** उपाध्याय प्रवर ने गुरु राम से जुड़ी अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियों से श्रावकों को अवगत कराया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने अन्तकृद्दशांग सूत्र का सुन्दर वाचन एवं विवेचन प्रस्तुत करते हुए तपस्याओं का वर्णन किया। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने **''वंदन से कटते बंधन''** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि उत्तम गुरु संयम से प्रभावित होते हैं। उपाध्याय प्रवर बेले-बेले तप करते हुए उत्कृष्ट संयम का पालन कर रहे हैं। वे अप्रमत्त साधक हैं। आपश्री जी को अनुकूलता नहीं प्रतिकूलता पसन्द है। लालचन्द जी नाहटा, केकड़ी वालों ने आचार्य भगवन् को **'परमागम रहस्यज्ञाता'** एवं उपाध्याय प्रवर को **'प्रज्ञामहर्षि'** से सम्बोधित किया है।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज अंतरंग को जागृत करने का पर्व है। क्षमा का पर्व है। जीवों के प्रति दया-करुणा का पर्व है। एक-दूसरे से क्षमायाचना करने का पर्व है। कटुवचनों को जो पी जाता है, वह सबसे बड़ा है। पृथ्वी के समान मुनि को क्षमाशील होना चाहिए। आचार्य भगवन् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, सहजता व सरलता आदि गुणों के भण्डार हैं। आपश्री जी निर्लिप्त महापुरुष हैं। अनुशासन के सदैव पक्षधर हैं। आपने निम्नांकित गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया-

भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली हैं, जो पाए गुरु राम से।
अब कुछ ना मांगे भगवान से।।

श्री नीरज मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा. आदि संतवृन्द ने **''हुक्मसंघ के शिखर, श्रद्धा भक्ति से भरकर, सिर झुकाए''** गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा. ने **''यह अवसर मिला है, मिलेगा कहाँ''** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आत्मा से मुलाकात करने का यह दिन है। विभाव से स्वभाव में आने का दिन है। कषायों को हटाने का दिन है। संवर, पौषध, साधना का दिन है।

शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा. ने तपस्या गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी आत्मा ही कर्मों को बांधती है और हम कर्मों को तोड़ते हैं। जो कर्म हमने बाँधे हैं, उनको भोगे बिना उनसे छूट नहीं सकते। हम कर्म करते समय सोचते नहीं हैं, पर भोगते समय रोते हैं। कोई कर्म तत्काल उदय में

आता है, कोई बाद में आता है, लेकिन भुगतना सभी को पड़ता है।

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने **''संवत्सरी का पर्व सुहाना, महिमा इसकी महान''** गीत प्रस्तुत कर सबको आत्मविभोर कर दिया।

स्थानीय सुश्रावक जी ने कहा कि आचार्य भगवन् ने चातुर्मास प्रदान कर महान उपकार किया है। आपकी सरलता, सहजता हमको मिल जाए, हम कषाय रहित हो जाएँ और हमारा जीवन धन्य बन जाए।

श्री साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष ने उभय गुरु-भगवंतों के ऐतिहासिक साधना महोत्सव चातुर्मास में सभी के सहयोग के लिए अहोभाव व्यक्त किये। संघ मंत्री ने सभा का संयोजन करते हुए तपस्वियों का विवरण प्रस्तुत किया।

महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों के यशस्वी जीवन से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। सम्पूर्ण सभा **''खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे''** के उद्घोष से गूँज उठी।

गुरुकृपा से साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. के आज मासखमण तप पूर्ण हुआ। पूर्व में आपश्री जी ने दो अठाई, 7 उपवास दो बार, तीन माह तक लगातार एकान्तर, दो साल से लगातार एकासन आदि कई तप किये हैं। अठारह नये स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने अगले वर्ष पर्युषण पर्व पर सेवा देने की भावना जाहिर की। उपवास, बेले, तेले, अठाई, पौषध, दया, सामायिक, संवर आदि प्रचुर संख्या में हुए।

पाँच वर्ष से लगातार एकासन कर रही मानकँवर जी खींवसरा ने एक वर्ष और एकासन करने का संकल्प लिया। अग्रवाल समाज के उद्योगपति सुमित जी सिंघानिया ने दो साल तक जमीकंद त्याग एवं 9 माह तक रात्रिभोजन त्याग का नियम लिया। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने पट्टावली, आलोयणा, प्रवचन एवं कक्षा में सुन्दर जानकारी दी। सायंकालीन संवत्सरी प्रतिक्रमण में हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति से पाण्डाल एवं भवन आदि छोटा प्रतीत होने लगा। प्रतिक्रमण के पश्चात् सभी ने वर्षभर में हुई भूलों के लिए हार्दिक क्षमायाचना की। पर्युषण पर्व के दौरान विभिन्न परीक्षाएँ, ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ, 24 घण्टे अखण्ड नवकार महामंत्र जाप आदि अनेक कार्यक्रम हुए।

क्षमायाचना से भावों में आती है ऋजुता

22 अगस्त 2023। प्रात:कालीन शुभ बेला में सामूहिक क्षमायाचना का प्रसंग आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। नीमच सहित अनेक संघों के प्रतिनिधियों ने वर्षभर में मन-वचन-काया से हुई अविनय-आशातना व भूलों के लिए अंत:करण से क्षमायाचना की। नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र जी गाँधी, जावद ने सम्पूर्ण सभा की ओर से हार्दिक क्षमायाचना करते हुए सदैव कृपादृष्टि बनाए रखने का निवेदन किया एवं सभी से संघ सेवा में आगे आने का आह्वान किया।

इस पावन अवसर पर जगत् उद्धारक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''इस भौतिकवादी युग में व्यक्ति की भाग-दौड़ लगी रहती है। धर्म को समझने के लिए फुरसत नहीं है। ऐसे समय में हम भाग्यशाली हैं कि संस्कारों के कारण धर्माराधना के लिए तत्पर हैं। एक साल के बाद हमें यह अवसर प्राप्त होता है। जिस समय हम किसी से क्षमायाचना करते हैं उस समय भावों में ऋजुता आ जाती है। सरलता की अनुभूति होती है। हल्केपन का अहसास होता है। सदा के लिए बोझ हट गया तो कितने आनंद की अनुभूति होगी। आप समुदाय में रहते हैं तो कुछ ना कुछ बिगाड़ हो जाता है। दूसरों के व्यवहार, हर्ष या खिन्नता का बोध कराने वाला हो जाता है।**

किसी ने बुराई कर दी उससे हम गलत नहीं हो जाएँगे। कोई प्रशंसा कर रहा है तो हम प्रशंसित हो गए। ऐसा जरूरी नहीं है कि प्रशंसा करने से पात्रता आ जाएगी। अपनी क्षमता का आकलन स्वयं करना सीख लेंगे तो विकास होगा। श्रावक को प्रतिदिन 14 नियम चितारने चाहिए। हमारे धर्मसंघ में, धर्मक्षेत्र में राजनीति का प्रवेश नहीं होना चाहिए। जहाँ भी गुटबंदी होती है, वहाँ कहीं न कहीं हिंसा का संबंध जुड़ता है और मन में द्वेष भावना बनती है। अध्यक्ष, मंत्री कोई भी हो, उनको निभाना आपकी जिम्मेदारी है। काम करने वालों से सैकड़ों गलतियाँ हो सकती हैं। उन गलतियों का सुधार जरूरी है, न कि उनकी चर्चा। चर्चा करने से गलती का सुधार हो जाएगा, यह मानना भ्रांति है। मिल-बैठकर बातचीत करें कि कैसे उन गलतियों का सुधार हो जाए। टाँग खींचते रहेंगे तो विकास नहीं कर पाएँगे।''

इस अवसर पर विभिन्न त्याग प्रत्याख्यान हुए। किसी भी व्यवहार से दिल दुखा हो तो उसके लिए सभी ने एक-दूसरे से क्षमायाचना की। हृदय के शुद्ध भावों से '**क्षमा करना-क्षमा करना**' स्वर गूँज रहे थे। कई चारित्रात्माओं तथा श्रावक-श्राविकाओं के दीर्घ तपस्याएँ व अठाई, तेले, उपवास आदि के पारणे सम्पन्न हुए।

धर्म के मर्म को जानने वाले बहुत कम हैं

23 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं धर्म तत्त्व की जानकारी श्रद्धेय श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने प्रदान की। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में धम्म सद्धा चालीसा की पंक्तियाँ-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि ''धर्म क्रिया करने वाले बहुत हैं, धर्म का नाम लेने वाले बहुत हैं, लेकिन धर्म के मर्म को जानने वाले बहुत कम हैं। धर्म जब हृदय में उतर जाता है तो जीव कभी किसी प्रकार का कर्मबन्ध नहीं करता। हमारा शरीर किसके आधार पर चल रहा है? अपने शरीर के लिए हमें कितने प्राणियों की घात करनी होती है। हमें अपने जीवन के निर्वाह के लिए हिंसा करनी होती है। एक दिन में असंख्यात जीवों की हिंसा नियमा समझ लें। असंख्य जीवों की घात तो खाने एवं प्यास बुझाने में हो जाती है तो हम कैसे नाथ बन पाएँगे।'' सुनन्दा चारित्र का सुन्दर चित्रण आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सरलता से आत्मशुद्धि होती है। छल-कपट, मायाचार को छोड़कर सीधी चाल चलनी चाहिए। सरल बनने से भावों की शुद्धि होती है।

साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि तप करने से पूर्व संचित् कर्मों का क्षय होता है। तपस्या करने से मन की विशुद्धि होती है।

साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुनिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा. ने ''**ओ तपस्वी बहन तुझे करते नमन, तेरा जोश सवाया है गुरु राम के चरणों में**'' गीत प्रस्तुत किया। पूरी सभा '**केसरिया-केसरिया**' गीत से गुँजायमान हो उठी।

100 व्यक्तियों को व्यसनमुक्त करने का संकल्प विनोद जी साँखला, सिमोगा ने लिया। खाचरौद संघ ने होली चातुर्मास एवं अन्य प्रसंगों हेतु विनती प्रस्तुत की। दोपहर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी एवं श्रुत आरोहक की सुंदर समझाइश दी।

नारी का करे जो सम्मान, उसके घर उतरे देव विमान

24 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने बोध प्रदान किया। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म क्या है? स्थानांग सूत्र में दस प्रकार के सूत्र बताए गए हैं। वर्तमान में धर्म केवल किताबों की शोभा तक रह गया है, यह जीवन में बहुत कम मिल पाएगा। हम साधु जरूर बन गए हैं किन्तु साधुता का स्वाद नहीं मिल पा रहा है। जिन आदतों में हम जी रहे हैं, वे आदतें बदलना बहुत कठिन है। हमारे मन में क्या भरा हुआ है? ईर्ष्या, कलह, छल, कपट, बेईमानी। बहुत कम लोग मिलेंगे जिनका मन नफरत से भरा हुआ न हो। नारी का सम्मान होना चाहिए। नारी उत्तम नर की खान होती है। नारी में सकल जहाँ, सारी दुनिया समायी हुई है। 'जो करता है नारी का सम्मान, उसके घर उतरे देव विमान' अर्थात् उस घर में देवताओं का आगमन होता है। जिस घर में कलह नहीं होती, उस घर में लक्ष्मी का निवास होता है। न+आरी = नारी काटने का काम नहीं करती है। घर को बनाने और बिगाड़ने वाली नारी ही होती है। कई नारियाँ सम्मान पाने के लिए आरी बन जाती हैं।''** सुनन्दा चारित्र का सुन्दर चित्रण आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब इन्द्रियों के साथ मन का जुड़ाव हो जाता है, तब यह मन इन्द्रियों से जैसा चाहता है वैसा करवाता है। मन ही कर्मबंधन करवाने वाला एवं तोड़ने वाला होता है। हम इन्द्रियों की आसक्ति का त्याग कर मन को नियंत्रित कर सकते हैं।

गुरु बिन ज्ञान नहीं

25 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं धर्म तत्त्व का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''दो धर्म हैं- आगार धर्म और अणगार धर्म, श्रावक धर्म और साधु धर्म। साधु धर्म के लिए निश्चित मर्यादा है। उसमें कोई कटौती नहीं है। जिसको साधु जीवन स्वीकार करना है, उसको पाँचों महाव्रत लेने पड़ेंगे। कोई विचार कर ले कि मैं एक, दो या तीन महाव्रत ले लूँ तो ऐसा कोई विकल्प नहीं चलेगा। साधु जीवन स्वीकार करने वालों को पाँचों महाव्रत तीन करण और तीन योग से लेने होंगे। आगार धर्म में अपनी शक्ति के अनुसार व्रतों को स्वीकार किया जा सकता है। एक व्रत यावत् बारह व्रतों को स्वीकार करने वाला भी श्रावक होता है। साधु धर्म में कोई छूट नहीं है। साधु हो या श्रावक, दोनों की आराधना में अहिंसा को प्रधानता दी गई है। गुरुचरण पुण्य के प्रताप से प्राप्त होते हैं। गुरु बिना ज्ञान नहीं आवे, किसी न किसी के द्वारा उसने केवली प्ररूपित धर्म को सुना है। उसके सुने बिना ज्ञान प्रकट नहीं हो सकता। गुरु की आज्ञा अविचारणीय होती है। गुरु की आज्ञा करणीय होती है। गुरु ने कह दिया तो करूँ या न करूँ, इस सोच में पड़ने की जरूरत नहीं है। गौतम स्वामी विनय की साक्षात् मूर्ति थे एवं उन्होंने आज्ञा की आराधना की।''**

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सब चीज ढ़लते जा रही है। धन, परिवार, शरीर से आसक्ति संसार बढ़ाने वाली है। हमें अनासक्ति की दिशा में आगे बढ़ना है।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, रतलाम के 1000 सदस्यों ने उपस्थित होकर आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में विभिन्न प्रसंगों हेतु विनती प्रस्तुत की। ब्यावर संघ ने भी भावभरी विनती प्रस्तुत की।

धामणागाँव रेलवे में संथारा साधक श्री उत्साह मुनि जी म.सा. के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर उनके सांसारिक परिवारजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व संदेश प्राप्त किया। एक अलग कार्यक्रम में भाग्येश्वर मंदिर में उनकी सांसारिक धर्मसहायिका विमलाबाई छाजेड़ एवं अन्य परिवारजनों का श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, नीमच द्वारा आत्मीय बहुमान किया गया।

नशा अपराध करवाता है

26 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना पश्चात् धर्म तत्त्व कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए संयम साधना के सजग प्रहरी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''हमने बहुतों को मरते और जन्म लेते हुए देखा होगा। कइयों को कंधा देकर अन्तिम विश्राम स्थल पहुँचाया होगा। क्या आपने कभी सोचा है कि हमें भी कोई वहाँ तक पहुँचाएगा? आपने पूछा कौनसा ठिकाना है हमारा? हमारे सामने शरीर और आत्मा है। हम ज्यादा महत्त्व शरीर को देते हैं। मरेगा कौन, शरीर या आत्मा? जो शाश्वत है, उस तरफ हमारा ध्यान नहीं है। नशे की जितनी भी चीजें प्रचलित होती हैं, वो भारत की अस्मिता को समाप्त करने वाली होती है। हमें विदेशी चीज चाहिए। इसलिए हर वर्ष भारत सरकार लाखों टन बीफ (गौ मांस) निर्यात करती है। कौन बचाएगा भारत की अस्मिता को? शराब के पीछे कितनी मार-काट हो रही है। परिवार के परिवार उजड़ रहे हैं। इसके लिए कितने लोगों ने आवाज उठाई? ये अपराध बलात्कार से कम नहीं है। बीफ निर्यात से सरकार को राजस्व मिलता है। राजस्व मिले तो ऐसा काम कर लेगी सरकार। राजस्व जरूरी है या प्रजा की रक्षा? घर-परिवार, समाज की सुरक्षा बड़ी बात है। पैसा बढ़ता गया तो नशा बढ़ता जाएगा और नशा अपराध करवाता है। बुढ़ापा न आए इसके लिए लाख उपाय किए जाते हैं, पर आत्मा बूढ़ी न हो उसके लिए क्या उपाय करते हैं?''** सुनन्दा चारित्र का सुन्दर चित्रण आचार्य भगवन् ने प्रस्तुत किया।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सगे भाई के यहाँ पानी नहीं पीते हो जिनसे अनबन हो, उससे खमत-खामणा नहीं करते हो, फिर यह क्षमायाचना कैसी? असंयम से संयम की ओर आगे बढ़ें।

साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''तुमसे बढ़कर तुम्हारा तेज देखा गुरुवर''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चारित्रात्माओं सहित कई श्रावक-श्राविकाओं ने अनेक प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत समता महिला मण्डल, जावरा सहित कई भाई-बहिनों ने प्रतिदिन 1 घण्टा मौन और माह में 4 पक्की नवकारसी करने का संकल्प लिया।

आचार्य भगवन् के आगामी वर्ष 2024 के चातुर्मास हेतु जावरा संघ ने पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। आचार्य भगवन् के आह्वान पर चातुर्मास काल में 60 अतिरिक्त सामायिक एवं 60 घण्टा मौन रखने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहिनों ने लिया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने श्रुत आरोहक एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा में बहिनों को सुंदर मार्गदर्शन प्रदान किया।

मोबाइल के दुरूपयोग से बचें

27 अगस्त 2023। प्रात:कालीन बेला में रविवारीय समता शाखा में श्रद्धालु, धर्मप्रेमी भाई-बहिन समता आराधना करने हेतु भारी संख्या में उमड़े। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगल पाठ प्रदान

किया। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्व वंदनीय आचार्य भगवन् में अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''शरीर और आत्मा में भिन्नता है। जन्म-मरण शरीर का होता है, आत्मा का नहीं। आत्मा ही शरीर की पीड़ा, कष्ट, दु:ख का अनुभव करती है। शरीर पुद्गलों की संरचना है। चार दुर्लभ अंग बताए गए हैं- मनुष्य जन्म, जिनवाणी श्रवण, जिनवाणी पर श्रद्धा और संयम में पराक्रम।''**

धर्मसभा में मोबाइल की घंटी बजने पर गुरुदेव ने फरमाया कि **''एक मोबाइल ने सबका ध्यान बँटवा दिया। एक मोबाइल हमारा कितना बिगाड़ कर रहा है। निरंतर साथ होगा तो कितना बिगाड़ करेगा। वैज्ञानिक रिपोर्ट में बताया गया कि यदि मोबाइल को पेंट की जेब में लगातार रखते हैं तो किडनी की समस्या पैदा कर सकता है। ऊपर शर्ट की जेब में रखने पर हृदय को खतरा हो सकता है। हम इसका सदुपयोग नहीं, दुरूपयोग कर रहे हैं। जितनी सुविधाएँ हम ले रहे हैं, उनके पीछे उतनी दुविधाएँ भी हैं। हम जानते हैं कि ये सुविधाएँ छूट नहीं पाती हैं, पर इनके दुरूपयोग को तो हम रोक ही सकते हैं।''**

आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि **''तलाक की स्थितियाँ इगो पावर से बनती हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाए गए कानून का दुरूपयोग ज्यादा हो रहा है। दहेज प्रताड़ना कानून का दुरूपयोग करने वाली महिलाएँ इसका उपयोग हथियार के रूप में कर रही हैं। इगो के आगे वे झूठी एफ.आई.आर. दर्ज करवा देती हैं। लड़कियाँ इगो में तलाक मांगती हैं। इसमें उसे पीहर वाले व माँ-बाप भी उकसाते हैं। वे यह कृत्य कर तो लेती हैं, बाद में समझ आने पर बहुत पछताती हैं। कानूनन तलाक से पूर्व छह माह का समय पुनर्विचार के लिए दिया जाता है, ताकि उसे समझ आ जाए या कोई समझा सके। उसे अपने इगो का अहसास हो जाए।''**

बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **''संसार के समग्र प्राणियों के सुख के लिए जो रास्ता बताया गया है वो रास्ता हमें गुरु परम्परा से प्राप्त होता है। जहाँ कम्युनिकेशन की स्थिति स्पष्ट नहीं होती, वहाँ संवाद नहीं होता है। आपसी संवाद के अभाव में कई भ्रांतियाँ जन्म लेती हैं और अकारण वैर-विरोध होता है। संवादहीनता कई विषमताओं को जन्म देती है।''**

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। खान-पान, पहनावा, रहन-सहन आदि में बदलाव आ गया है। यह हमारी संस्कृति एवं आदर्शों को पतन की ओर ले जाने वाले बड़े कारण होंगे। साध्वीवृन्द द्वारा गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया।

सम्पूर्ण सभा ने आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से प्रात: उठते ही पाँच मिनट मोबाइल को हाथ नहीं लगाने का संकल्प लिया।

बच्चों के शिविर में जैन संस्कार पाठक्रम का गहन अभ्यास करवाया गया। त्रि-दिवसीय **'ऐसे जीएँ'** शिविर में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की। अनेक भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक शिविर में भाग लिया। आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में आगामी चातुर्मास की विनती निम्बाहेड़ा, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, जावद, जोधपुर आदि अनेक क्षेत्रों के संघों द्वारा प्रस्तुत की गई।

न्यायाधीश जिला मजिस्ट्रेट डॉ. कुलदीप जैन, ग्वालियर ने अपने भावोद्गार में कहा कि आज धर्मसभा में उपस्थित होकर गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। ऐसी सभा वंदनीय है। राम गुरु ने व्यसनमुक्ति अभियान चलाकर एवं विवाह के अवसर पर दिखावा, प्रदर्शन, आडम्बर से मुक्ति दिलाने हेतु सामाजिक उत्क्रांति का जो अभियान चलाया है, वह वंदनीय एवं अभिनंदनीय है। इतनी बड़ी विशाल सभा में सोशल मीडिया का पूर्णत: बंद होना एवं पूरी सभा का

साईलेंट होकर जिनवाणी सुनना, यह इनके त्याग-तपस्या का कमाल है। हमने भगवान महावीर का समवोसरण तो नहीं देखा, पर यहाँ साक्षात् दर्शन हो रहे हैं। यहाँ सभी लोग उपस्थित होकर भगवान महावीर की वाणी सुन जीवन सार्थक कर रहे हैं। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं जिनशासन की भारत में ही नहीं, अपितु विश्व में कीर्ति है।

28 अगस्त 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना व धर्मतत्त्व का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया। तत्पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपने दिव्य उद्बोधन में फरमाया कि **''हमारे जीवन में गुरु का साक्षात्कार हमारे अज्ञान के अंधकार को हटाता है। गुरु के कार्य हमारे कार्यों को तराशते हैं। गुरु की दिशा हमारी दिशा सुधार देती है। जगत् गुरु भगवान महावीर की देशना हमारे जीवन को शुचि बनाने वाली है। अनाथी मुनि के प्रसंग में मगध सम्राट मुनिराज को कहते हैं कि आप तरुण युवा होकर भी दीक्षित क्यों हो गए? क्या कारण है? मुनि कहते हैं- संयम लेने से पहले मैं अनाथ था। मेरा कोई नाथ नहीं था। राजा आश्चर्यचकित हुआ और कहा कि अब मैं आपका नाथ बनूँगा। मैं आपको सब कुछ दूँगा। मुनिराज कहते हैं- तुम खुद ही अनाथ हो। राजा को झटका लगा। जब आपको कोई ताना मारे कि आपके पास कुछ नहीं है, तो आप क्या करोगे? अपनी सम्पत्ति का प्रदर्शन करोगे।**

धन के दिखावे से बचने के लिए दिये गये उत्क्रान्ति आयाम के अन्तर्गत अनेक लोग शादियाँ एवं अन्य कार्यक्रमों में उत्क्रान्ति के नियम मानने हेतु तैयार हो गए, लेकिन कुछ लोग अब भी नहीं माने। वे सोचते हैं कि हमारे पास करोड़ों रुपये हैं। समाज को दिखाने का मौका शादियों में ही मिलता है। हम शादियों में नहीं दिखाएँगे तो कब दिखाएँगे? दूसरा कोई मौका ही नहीं है। धन जिनके पास नहीं है, वे भी दिखावा करते हैं। अभी भी समय है सम्भल जाएँ और दिखावे की दौड़ से बाहर होकर संयमित जीवन जीने की राह पर बढ़ें तभी हमारा जैन धर्म का अनुयायी होना सार्थक होगा।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि वाणी एवं पानी दोनों स्वच्छ होने चाहिए। व्यापार में सच्चाई का परिचय दें। सदैव हितकारी, प्रियकारी व सत्य वचन बोलें। साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा. ने **''वन्दन करते हैं गुरुवर''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दीर्घ तपस्याओं के प्रत्याख्यान के अवसर पर सम्पूर्ण पाण्डाल केसरिया-केसरिया गीतों से गूँज उठा। नीमच नगरपालिका अध्यक्ष स्वाति जी गौरव चौपड़ा व संतोष जी चौपड़ा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शरीर से ज्यादा महत्व आत्मा को देवें

29 अगस्त 2023। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना पश्चात् धार्मिक कक्षा में सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी व दशवैकालिक सूत्र आदि का विवेचन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने किया।

अपार जनमेदिनी से परिपूर्ण विशाल धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित गुरुभक्तों को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि **''शरीर के प्रति लगाव संसार में भटकाएगा। आत्मा व शरीर भिन्न-भिन्न हैं। मन शरीर के पुद्गलों में रमा रहता है। खुशियाँ मनाता है। इस कारण जीवन की जो भोर होनी चाहिए, वह नहीं हो पाती है। जीवन की भोर का मतलब है आत्मबोध जागृत होना। जीवन की भोर का मतलब है आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान होना। यह ज्ञान होना कि मैं कौन हूँ। अनादिकाल से हमारा आत्मभाव भटका हुआ है। वह शरीर में रमा हुआ है। उसी में उसको आनन्द आता है। दुनिया में अधिकांश व्यक्ति खाने-पीने और मौज-मस्ती में लगे रहते हैं। शरीर को शरीर नहीं समझकर उसे ही सब कुछ समझ लेना अज्ञान है। अज्ञान में आदमी भटकता रहता है। 'जहाँ देह अपनी नहीं, वहाँ न अपना कोय।' जब शरीर आपका नहीं है तो दुनिया आपकी कैसे हो पाएगी! इस**

शरीर को आप छोड़ना नहीं चाहेंगे फिर भी ये तो छूटेगा ही। आत्मज्ञान होने पर व्यक्ति चलकर शरीर छोड़ने को तैयार हो जाता है। संलेखना-संथारा करता है। शरीर का उतना ही ध्यान रखना चाहिए जितना ज्ञान, दर्शन, चारित्र के लिए उसकी आवश्यकता है। उससे बढ़कर उसे महत्त्व नहीं देना चाहिए। उससे ज्यादा महत्त्व देने का अर्थ कि हमारा आत्मा से ज्यादा ध्यान शरीर की तरफ है।''

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी वाणी में गंभीरता, प्रामाणिकता व सत्यता होनी चाहिए। बिना विचारे कभी भी नहीं बोलना चाहिए। आवेश में तुरन्त जवाब नहीं देना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **''राम गुरुवर इस दुनिया में सबसे निराले संत हैं''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। दीर्घ तपस्याओं के उपलक्ष में पूरी सभा ने ऊनोदरी तप करने का प्रत्याख्यान लिया।

आसक्ति, लगाव अन्धकूप है

30 अगस्त 2023। प्रात: भोर के प्रस्फुटन के साथ ही पंचपरमेष्ठी को समर्पित प्रार्थना से सम्पूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्म तत्त्व का बोध कराया। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए छ:काय को अभयदान देने वाले आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में उपस्थित चतुर्विध संघ को भगवान महावीर की अमृतवाणी का पान कराते हुए फरमाया-

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

''आसक्ति अन्धकूप है। हमारा जिन पदार्थों के प्रति लगाव होता है, उसके स्वाद के प्रति लगाव होता है तो वह आसक्ति अज्ञान के अन्धकूप में धकेलती है एवं उससे परिणाम बिगड़ जाता है। चाहे स्पर्श हो, रस हो या गंध हो, विषय अलग है एवं हम अलग हैं। दोनों की भिन्नता बनी हुई है। जैसा आया उसे सहज रूप से ग्रहण कर लें। उनके साथ आसक्ति भाव का सम्बन्ध नहीं जोड़ना चाहिए। उनके प्रति मन आकर्षित नहीं होना चाहिए। पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय हैं। जैसे ही हमारा आकर्षण उनके साथ जुड़ा कि यह अच्छा है, यह बुरा है या एक पर राग, एक पर द्वेष, वहीं उसमें विकार पैदा हो जाएगा। म.सा. के निमित्त भोजन ज्यादा बना लिया तो वह जहर का रूप बन गया। आसक्ति, लगाव कहीं पर भी होगा, वह हमें अन्धकूप में डालने वाला होगा।'' सुनंदा चारित्र भाग की सुन्दर व्याख्या आपश्री जी ने फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बातचीत से ही समाधान है, बहस व्यर्थ है। हमें किसी भी बात की सफाई नहीं देनी है अपितु दिल साफ रखना है। किसी पर व्यंग्य, कटाक्ष न करें। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकान्ता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री चन्दना श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''आया सुहाना प्यारा खुशियों का त्योहार, राखी मेरी**

चमचम चमके है'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने जैसे ही श्री गगन मुनि जी म.सा. के 21 उपवास की घोषणा की, पूरी सभा जय-जयकारों एवं केसरिया-केसरिया गीतों से गूँज उठी। अन्य कई विविध त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

3 सितम्बर रविवार को ग्यारह मिनट में ग्यारह द्रव्य के साथ एकासना करने का आह्वान हुआ। संघ ने 500 एकासन करने की भावना ग्यारह नवकार महामंत्र जाप के साथ प्रकट की। पूर्व सांसद मिनाक्षी जी नटराजन ने आचार्य भगवन् के पावन दर्शन करने के पश्चात् विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। नटराजन ने कहा कि अलौकिकता के सहज दर्शन और नैसर्गिक विवेक का संचित सार प्रतिबिंबित होता है। परम सौभाग्य से ऐसे महापुरुषों का दर्शन कर कृतज्ञ हूँ। नटराजन के साथ जिला कांग्रेस अध्यक्ष अनिल जी चौरसिया, पूर्व विधायक नन्दकिशोर जी पटेल, जिला पंचायत सदस्य तरुण जी बाहेती, उमरावसिंह जी गुर्जर, सत्यनारायण जी पाटीदार, राजकुमार जी अहीर, समन्दर जी पटेल, हरीश जी दुआ, मधु जी बंसल आदि ने भी गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। इस अवसर पर नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष जी भी उपस्थित थे।

खाली दिमाग शैतान का घर

31 अगस्त 2023। प्रात:कालीन भक्तिमय प्रार्थना के पश्चात् तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने सुन्दर समझाइश दी। विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''सुख और दु:ख दो अवस्थाएँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन में घटित होती हैं। सुख की चाह है, दु:ख की चाह नहीं है। जो सुख मान रहा है, वह भी सुख नहीं है। वह तो इन्द्रियजन्य सुख है, शरीर को साता पहुँचाने वाला सुख है। आत्मा उससे सुखी नहीं होती है। जो सुख पराधीन है वह सुख सपने में भी सुख नहीं दे सकता। जो आत्मा का सुख है वह बाहरी वस्तुओं में खोजने पर नहीं मिलेगा। मन में कई निरर्थक विचार चलते रहते हैं। 85 प्रतिशत से ज्यादा विचार तो बेहोशी में चलते हैं। 15 प्रतिशत विचार ही हम पकड़ पाते हैं। हम जिस कार्य में लगे हैं उसमें लीन हो जाना चाहिए। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। मन को एकाग्र करें और उसे श्रेष्ठ विचार व कार्यों में लगाएँ।''** सुनन्दा चारित्र भाग की सुन्दर-सरस व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री सुमित मुनि जी म.सा ने फरमाया कि अनुकूलता-प्रतिकूलता की हर परिस्थिति में हम सुखी रहें, प्रसन्न रहें। हम खुश रहते हैं तो वातावरण खुशनुमा बनेगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **''राम गुरु राम गुरु मेरे भगवन''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सम्पूर्ण सभा को गुरुभक्ति में लीन कर दिया।

धर्मपरायणा सोहनबाई राजमल जी सहलोत-निकुम्भ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि हुए।

नीमच साधना महोत्सव चातुर्मास को सफल बनाने में नीमच के श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, साधुमार्गी महिला मण्डल, बहू मण्डल एवं समता युवा संघ अहर्निश सेवारत हैं।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री गगन मुनि जी म.सा. (द्वितीय मासखमण की ओर अग्रसर)	22 उपवास	साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा.	19 उपवास (गतिमान)
श्री निर्वाण मुनि जी म.सा.	9 उपवास	साध्वी श्री जय श्री जी म.सा.	6 उपवास
साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा.	45 उपवास	साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा.	9 उपवास
साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा.	मासखमण	साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	8 उपवास
साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा.	मासखमण	साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा.	8 उपवास
साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा.	11 उपवास	साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा.	बेले-बेले तप जारी

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	कान्तिलाल जी इन्द्रादेवी बैद-बनमनखी, विमल जी प्रेमबाई दसेड़ा-इन्दौर, बाघमल जी निर्मलादेवी मुणोत-निनोर, मंजुला जी गांधी-बुरवियाकलां, निलाब बाई जारौली-शंभूपुरा, कालुराम जी लक्ष्मीपुरा, विनय जी मोगरा, सुनील जी सेजल जी काँठेड़-बदनावर, कुन्दनमल जी पोखरना-करुँकड़ा, पन्नालाल जी चौरड़िया, अम्बालाल जी रांका-निम्बाहेड़ा, झमकलाल जी मंजू जी चौहान-झार्ड़ा, रमेश जी पुष्पादेवी पितलिया-मोरवन, बीना जी मदन जी सेठिया, विजय जी चौहान-झार्ड़ा, बाबुलाल जी हेमकुँवर जी पिरोदिया-रतलाम, नरेन्द्र जी जैन-नीमच, रमेश जी लोढ़ा-गुड़ी, संतोष जी सरितादेवी पारख-छुईखदान
उपवास	**67 :** गुप्त (81 के प्रत्याख्यान) (गतिमान), **66 :** किरण कुमार जी हिंगड़-रायपुर (71 के प्रत्याख्यान), **63 :** सरिता जी मुणत (गतिमान), **36 :** अंकिता जी चिप्पड़-प्रतापगढ़, **32 :** रेखादेवी चपलोत-बाड़ी, **31 :** सरिता जी नागौरी, सुनीता जी आँचलिया, अरुणा जी रंगवाला, कमलाबाई मट्ठा-आवरीमाता, **30 :** नरेन्द्र जी चौधरी-मन्दसौर, मनोरमा जी पितलिया-दलौदा, **27 :** प्रेमदेवी नाहर (32 उपवास के प्रत्याख्यान), **26 :** सुमित जी खींचा (गतिमान), प्रमिला जी बम्ब, **25 :** राजेन्द्र जी मुरड़िया-कानोड़ (गतिमान), **23 :** नरेन्द्र जी चौधरी-मंदसौर (27 के प्रत्याख्यान), चर्चिल जी रंगवाला (गतिमान), **22 :** शोभा जी सकलेचा-भीलवाड़ा (गतिमान), **21 :** राजेन्द्र जी मुरड़िया-कानोड़, राजेश जी मोगरा (गतिमान), **20 :** शान्ताबाई सकलेचा-भीलवाड़ा (गतिमान), **18 :** कविता जी गांग (गतिमान), दीपा जी कच्छारा (गतिमान), शान्ताबाई काँठेड़ (गतिमान), सुशीलाबाई काँठेड़ (गतिमान), अदिति जी नागौरी (गतिमान), स्वाति जी पटवा (गतिमान), प्रदीप जी बोथरा-फारबिसगंज (गतिमान), **16 :** महेश जी मुणत-रतलाम (गतिमान), राजकुमार जी मुणत-रतलाम (गतिमान), प्रमिला जी बम्ब, **15 :** हेमलता जी वीरवाल-जावद (गतिमान), **13 :** सपना जी नलवाया (गतिमान), प्रकाश जी बड़तवाल-मन्दसौर (गतिमान), संगीता जी खिंदावत, **11 :** सुरेन्द्रकुमार जी सकलेचा-भीलवाड़ा, विजयकुमार जी चौहान, रत्नेश जी कोठारी-भीण्डर, हर्षिता जी धामनिया, निक्की जी मेहता-वापी, अतुल जी पगारिया, सीमा जी मण्डावत, **10 :** सुरेश जी गांधी, **9 :** रामलाल जी सिरीवाल-लक्ष्मीपुरा (15 के प्रत्याख्यान) (गतिमान), कमलजी जैन-कोटा, श्रद्धा जी कच्छारा-आंतरी, परि खिंदावत-

	आंतरी, सीमा जी खिंदावत, राखी जी धाड़ीवाल-दुर्ग, ग्रेसिका खिंदावत, सुशीला जी सेठिया, दीपिका जी चौधरी, प्रकाश जी भण्डारी, अविशी जी जैन, प्रकाश जी आंचलिया, ज्योति जी कच्छारा, मैना जी जैन-पिपलियामण्डी, विनोद जी गुगलिया, कमलाबाई झेलावत, अंजना जी खिंदावत, रश्मि जी रांका, सारू जी जैन, त्रिशला जी जैन, मोक्षा जी जैन, मुमुक्षु तमन्ना जी जैन, 8 : ललिता जी पिछोलिया-फतहनगर, भगवतीलाल जी बड़ोला, भूमि जी नपावलिया, विनीता जी श्रीमाल, नैना जी चपलोत, हेमा जी बम्बोरिया, मंगलाबाई मिन्नी-रायपुर, नीतू जी राठौर, शान्ता जी काँठेड़, सुनीता जी काँठेड़, दीपा जी कच्छारा, कल्पना जी राठौर, मंगला जी दफ्तरी, रानू जी पितलिया, सुशीला जी काँठेड़, मैना जी चपलोत, रेखा जी कोठारी, तरुण जी सेठिया, मिताली जी सेठिया, राकेश जी मारू, भावना जी काँठेड़, विजयसिंह जी चौधरी, अदिति जी नागौरी, अभय जी नपावलिया, अमित जी पितलिया, पंकज जी काँठेड़, अभय जी मोगरा, हर्षिता जी लसोड़-धामनिया, सलोनी जी काँठेड़, इंदिरा जी गांग, नवीन जी काँठेड़, रिया जी काँठेड़, रितिक जी काँठेड़, कविता जी गांग, विजय जी बोड़ावत, विपुल जी बोड़ावत, अनिल जी बोड़ावत, जिनेश जी गांग, सोनिया जी गांग, चांदनी जी धींग, काव्य जी ओस्तवाल, अनिल जी नलवाया, मंजू जी पंकज शाह, साहिल जी शाह, साक्षी जी शाह, रुचि जी पिपाड़ा-कंजार्ड़ा, संगीता जी नलवाया-धामनिया, प्रकाश जी संचेती-खेतिया, अशोक जी नलवाया, प्रीति जी नलवाया, अरुण जी नलवाया, मनीषा जी नलवाया, सम्यक् जी नलवाया, सुशीला जी बम्बोरिया, पिस्ता जी गांग, निक्की जी गांग, प्रियांशी जी चोधरी, गुणवन्त जी चौधरी, निर्मला जी डूंगरवाल, आशु जी बम्बोरिया, सुशीला जी धाड़ीवाल, अशोक जी कटारिया, संजय जी छिंगावत-पिपलियामण्डी, संस्कार जी सहलोत, रमा जी बोकड़िया, दिलीप जी भण्डारी, विनय जी भण्डारी, अरविन्द जी वया, पार्वती जी रावटी, नरेन्द्र जी छाजेड़-पिपलियामण्डी, विजयकुमार जी चौहान-झार्ड़ा, ललितकुमार जी छाजेड़-पिपलियामण्डी, पंकज जी सहलोत, शुभम जी जैन, राजेश जी बाफना, करण जी देसर्ड़ा-मैसूर, विवेक जी गोलेच्छा-मैसूर, सुषमा जी नाहर-इन्दौर, रुचि जी भलावत-इन्दौर, सुशील जी चंगेरिया, संजय जी काँठेड़, अशोक जी डागा-नोखा, विनय जी भण्डारी, ताराबाई सेठिया-भीनासर, स्नेहलता जी गांग-खोर, विनोदकुमार जी गांग-खोर, सरोजदेवी सुराणा- चेन्नई, नेमीचन्द जी दक-बारावदा, किरणबाई कोचर-बीकानेर, कैलाश जी साँखला-बीकानेर, नेहा जी चौपड़ा-जावद, ज्योतिबाला जी चौहान-पिपलियामण्डी, अक्षत जी जैन-पिपलियामण्डी, दिलीप जी भण्डारी-कंजार्ड़ा, छितरमल जी सूर्या-देवरिया, पुष्पेन्द्र जी अब्भाणी-निम्बाहेड़ा, सुनीता जी अब्भाणी-निम्बाहेड़ा, प्रतिभा जी अब्भाणी-निम्बाहेड़ा, उत्कृष्ट जी बांठिया-सेलाना, शान्तिलाल जी पितलिया, रंजीता जी पितलिया, शिखा जी चौहान, शान्तिलाल जी वीरवाल, हिमांशु जी कोठारी-कनेरा, कोमलबाई-नगरी, विवेक जी गोलेच्छा-जोधपुर, मोना जी तातेड़-पिपलियामण्डी, रुचि जी पिपाड़ा-कंजार्ड़ा
तेले	51- मधु जी खींचा-ब्यावर
वर्षीतप	मधु जी मुरड़िया-कानोड़, सुमित्रा जी पारख-नोखा

सामायिक	वर्ष में 2000– भंवरलाल जी सूरजदेवी कावड़िया
पक्की नवकारसी	आजीवन – लीला जी रांका–ब्यावर 300 – पुष्पा जी सोनी–निम्बाहेड़ा | 100 – लाड जी बोड़ावत
पक्की पोरसी	150 – मधुबाला जी गोरेचा–रतलाम | 100 – हरिसिंह जी भण्डारी, मोनूबाई सांड 121 – अमृतलाल जी चौधरी–जावद
पौषध	वर्ष में 25 – गणेश जी आँचलिया–गिलुण्ड
बारह व्रत	शांतिलाल जी पारख–छुईखदान
गाथा का स्वाध्याय	दो लाख – बसंतादेवी डांगी–नीमच एक लाख – अनिता जी धाड़ीवाल–रायपुर, निर्मला जी धाड़ीवाल–रायपुर 36 हजार – सुरजा जी सेठिया–सूरत

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

भक्ति रस

संघ सेवा

-धर्मेन्द्र पारख, रायपुर (छ.ग.)

संघ सेवा मैं करूँ, करूँ अपना कल्याण,
गुरु कृपा मिल जाएगी, संघ सेवा है महान।
तीर्थ हो जाएँगे, ईश्वर-मनुष्य रूप में मिल जाएँगे,
मन से जो करूँ सेवा, मेरे गुरु राम हर जगह दिख जाएँगे।।
संघ सेवा मैं करूँ, करूँ धर्म प्रचार,
तीर्थंकर गोत्र तक का उपार्जन हो, ऐसा संघ सेवा का परिणाम।
अनीति से नीति भली, भला हो सबका काम,
नीति में आत्मीयता जुड़ जाए, सुन्दर होवे सब काम।।
संघ सेवा मैं करूँ, करूँ ज्ञान का विस्तार,
गुरुदेव ने इतने आयाम दिये, दिया संघ को अनमोल उपहार।
हर श्रावक सुश्रावक बने, बने संघ की श्रेष्ठता का आधार,
क्योंकि ग्रंथों में छुपा है, जीवन का विकास।।
संघ सेवा मैं करूँ, करूँ पुण्य से भरे काम,
दीन-दुःखी स्वधर्मी को सहयोग करना, स्वयं की सम्पन्नता का आधार।
छल-कपट ना भेद हों, नाम का हो ना अहंकार,
निर्बल को बल मिले, पूरण हो सब काम।।
संघ सेवा ऐसी करूँ की, गुरुदेव के हृदय में रहे मेरा नाम,
गुरु गुण गाऊँ प्रेम से, सदा सम्मुख हो गुरु का नाम।
संघ सेवा ऐसी कर लूँ तो, जीवन सफल हो जाएगा,
जन्म, मृत्यु के इस चक्कर से, मेरा भव तर जाएगा।।

श्रमणोपासक

ज्ञान पहेली

धार्मिक अंक 15-16 अगस्त 2023 का सही हल

1 सु	2 शी	ला	3 कँ	4 व	5 र	जी		6 साँ		7 र	8 ज
9 मि	त		10 व	र	ण		11 आ	प	12 श्री		य
त		13 ती	र			14 त	दि		चं		पु
15 मु	16 दि	त			17 अ	नि	त्य		18 द	रा	र
19 नि	खा	र		20 चं	प	क	मु	नि	जी		
21 जी	ना		22 मु	द्रि	का		नि		23 को	टा	
		24 अ	ना	का	र	श्री	जी		ठा		25 फ
26 उ	27 दि	त		श्री				28 बा	री		लो
29 द	या		30 किं	जी	व	31 न	म्			32 मूं	दी
य		33 को				व			34 आ	ग	
35 पु	36 ल	कि	37 त	जी	38 गु	ल	39 गु	40 लि	या		41 कुं
42 र	त	ला	म		त्थी		43 रु	चि	ता	श्री	जी

विजेताओं के नाम

1. सपना जी कोठारी, उदयपुर (राज.)
2. गुड्डी जी कांकरिया, कोटा (राज.)
3. झील जी जैन, राजसमंद (राज.)
4. लक्ष्मीदेवी पारख, धर्मनगर (त्रिपुरा)
5. नीलम जी नाहर, नीमच (मध्यप्रदेश)
6. राजश्री जी पींचा, गुवाहाटी (आसाम)
7. सुमित कुमार जी मुणत, रतलाम (मध्यप्रदेश)
8. मधु जी पटवा, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)
9. विनोद कुमार जी लोढ़ा, राजनांदगाँव (छ.ग.)
10. सुशीला जी बेगाणी, बीकानेर (राज.)

।। जय गुरु नाना।।

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु राम।।

संघ समर्पण महोत्सव एवं 61वाँ वार्षिक अधिवेशन-2023

दिनांक : 14-16 अक्टूबर 2023

कार्यक्रम विवरण

स्थान : नीमच (म.प्र.)

14 अक्टूबर 2023, शनिवार

दोपहर 1 बजे से

कार्यसमिति बैठक

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

सायं 7.30 बजे से

RRR रियल रामैश रत्न

अंतर्गत - समता संस्कार पाठशाला

ग्रांड फिनाले

15-16 अक्टूबर 2023, रविवार - सोमवार

दोपहर 12.15 बजे से सत्र-1 व सत्र 2

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : साधुमार्गी परिवार एवं सकल जैन समाज

15 अक्टूबर 2023, रविवार

सायं 7.30 बजे से

कार्यसमिति बैठक

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजक मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

16 अक्टूबर 2023, सोमवार

दोपहर 2:30 बजे से

वार्षिक आमसभा

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : समस्त साधारण-आजीवन सदस्य, शीर्ष पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री-कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्य, संयोजक मण्डल सदस्य, विशेष आमंत्रित एवं अंतर्गत संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी

15 अक्टूबर 2023, रविवार

कार्यसमिति बैठक व वार्षिक आम सभा

सायं 7.15 बजे से **श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति**

आमंत्रित : समस्त साधारण-आजीवन सदस्या, शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा व मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या, पूर्व अध्यक्षा-महामंत्री, विशेष आमंत्रित सदस्या

वार्षिक आम सभा

सायं 7.30 बजे से **श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ**

आमंत्रित : श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सभी स्तम्भ सदस्यगण एवं सभी साधारण सदस्यगण

निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
•SINCE 1977•

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh
www.facebook.com/HOSadhumargi